अंगना

मातृशक्ति के आपन भोजपुरी पत्रिका

साल – 12

अगस्त से दिसम्बर – 2022

नागेन्द्र प्रसाद सिंह श्रद्धांजलि विशेषांक

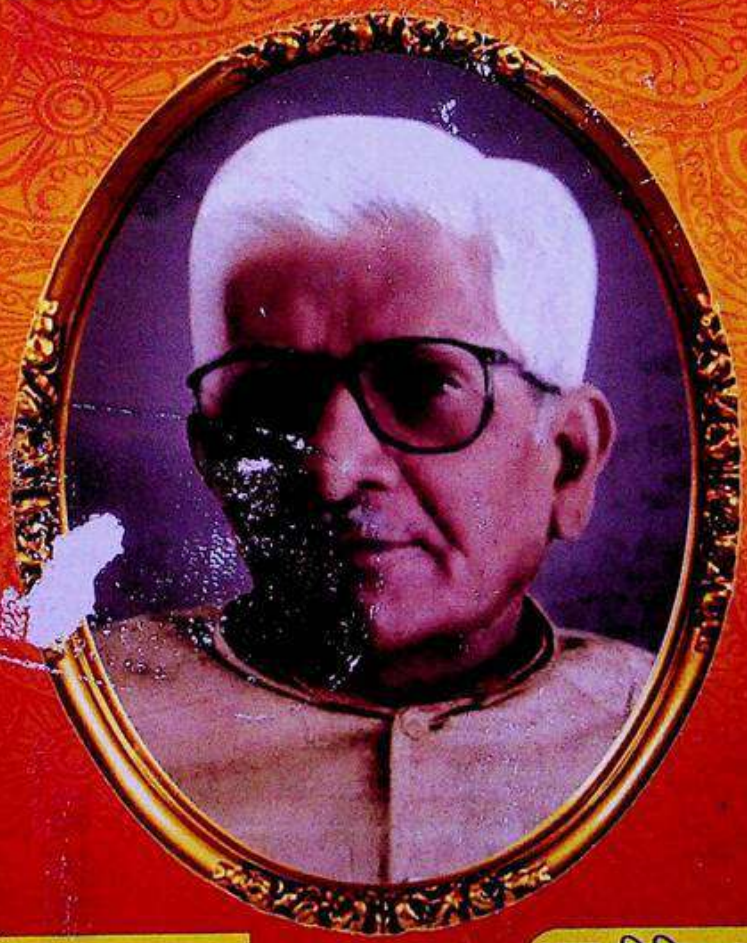

जन्म तिथि : 7 अप्रैल 1937

पुण्य तिथि : 8 सितंबर 2021

संपादक

डॉ० संध्या सिन्हा

स्व० नागेन्द्र प्रसाद सिंह : परिचय स्मृति

जन्म-तिथि : 7 अप्रैल, 1937

जन्म-स्थान : शीतलपुर, पो० - बरेजा, सारण (बिहार)

शिक्षा एवं व्यवसाय : एम० ए० (हिन्दी), एम० एड० (पटना विश्वविद्यालय) एकरा अलावे अनेक विषयन के स्वतंत्र रूप में स्वाध्याय द्वारा गहन अध्ययन-मनन-चिन्तन।

संस्थान में संलग्नता

(क) पूर्व में धारित पद

1. मुद्रक परिषद्, बिहार (बिहार स्टेट प्रिंटर्स एसोसिएशन) के क्रमशः कोषाध्यक्ष, संयुक्त महामंत्री आ महामंत्री - सन् 1965, 1966, 1967-68 ई०।
2. बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन, पटना में सारण जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा मनोनीत सामान्य परिषद् के सदस्य - सन् 1965 ई०।
3. सारण जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के क्रमशः महामंत्री आ अध्यक्ष - सन् 1994 ई० तथा 2001-2005 ई०।
4. लोक कलाकार भिखारी ठाकुर आश्रम, कुतुबपुर (सारण) के क्रमशः संयुक्त महामंत्री आ अध्यक्ष - सन् 1979 से आजीवन।
5. अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के क्रमशः संस्थापक आजीवन सदस्य, कार्यसमिति सदस्य, प्रवर समिति के संयोजक, प्रबंध मंत्री, कोषाध्यक्ष, महामंत्री, उपाध्यक्ष एवं अध्यक्ष - सन् 1979 से 2006 ई०।
6. भोजपुरी अकादमी, उच्च शिक्षा, मानव संसाधन विभाग, बिहार सरकार, पटना के क्रमशः अनुसंधान पदाधिकारी, सहायक निदेशक आ उपनिदेशक - सन् 1979 से 1994 ई०।
7. संपादक मण्डल सदस्य : 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका', अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, पटना, सन् 1991 ई०।

(ख) वर्तमान में धारित पद

1. कार्यसमिति सदस्य, बिहार राज्य प्रगतिशील लेखक संघ, पटना - सन् 2005 से आजीवन।
2. अध्यक्ष, लोक कलाकार भिखारी ठाकुर आश्रम, कुतुबपुर (सारण) - सन् 2003 ई० से आजीवन।
3. उपाध्यक्ष, बिहार राज्य विश्व भोजपुरी सम्मेलन, पटना - सन् 1996 से आजीवन।
4. उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय इकाई, विश्व भोजपुरी सम्मेलन, दिल्ली - सन् 2000 से आजीवन।
5. बिहारी हिन्दी साहित्य सम्मेलन के आजीव सदस्य के रूप में सक्रिय।
6. वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा; नालन्दा खुला विश्वविद्यालय, पटना; इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय खुला विश्वविद्यालय, दिल्ली के पाठ्यक्रम एवं पाठ्य सामग्री निर्माण में संलग्न।

आशीर्वाद
नागेन्द्र प्र० सिंह

❋

संपादक
डॉ० संध्या सिन्हा

❋❋

अतिथि संपादक द्वय
रामदास राही
डॉ० ब्रजभूषण मिश्र

❋❋❋

संपादन परामर्श
दिनेश्वर प्रसाद सिंह 'दिनेश'
गंगा प्रसाद 'अरुण'
डॉ० जूही समर्पिता
डॉ० अजय कुमार ओझा

❋❋❋❋

संपर्क
5761, कावेरी, विजया गार्डेन्स,
बारीडीह, जमशेदपुर - 831017 (झारखण्ड)
फोन - 9835345653, 9661139968 (M)
E-mail: drsandhyasinha@gmail.com

मूल्य – 30/- रुपये मात्र

मुद्रक : शिक्षा भारती मुद्रणालय
1/27, काशीडीह, जमशेदपुर
फोन : 0657–2437379
E-mail: shikshabharatimudra@gmail.com

सहयोग राशि

देश में	विदेश में
वार्षिक – 100/–	US $ 2.0 (डालर)
पंचवार्षिक – 400/–	US $ 8 (डालर)
आजीवन – 1500/–	US $ 15 (डालर)

सहयोग राशि ड्राफ्ट या मनीआर्डर द्वारा 'संध्या सिन्हा', संपादक : 'अंगना' के नाम से भेजल जा सकेला

अंगना

मातृशक्ति के आपन भोजपुरी पत्रिका

वर्ष – 12 अगस्त से दिसम्बर – 2022

अनुक्रम

❑ आपन बात – डॉ० संध्या सिन्हा 2
❑ हर फ़िक्र को... – देवेश शंकर 3
❑ सम्पादकीय – रामदास राही 4
❑ Tribute : Shri Nagendra Prasad Singh – इन्दिरा प्रसाद 5
❑ भोजपुरी के समर्पित साहित्यकार – सूर्यदेव पाठक पराग 6
❑ भोजपुरी के नागरी...... – तैयब हुसैन 'पीड़ित' 12
❑ यादन के परिधि में..... – हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' 15
❑ रउवा 'नागेन्द्र' के कहाँ... – भगवती प्रसाद द्विवेदी 17
❑ नागेन्द्र जी : स्मृति शेष – राम लोचन सिंह 20
❑ हमरा के शोध आ...... – डॉ० ब्रज भूषण मिश्र 24
❑ नागेन्द्र प्रसाद सिंह के... – प्रो० जयकान्त सिंह 'जय' 27
❑ साहित्य सेवी नागेन्द्र प्रसाद सिंह जी..... – विमलेन्दु भूषण पाण्डेय 30
❑ साहित्य के स्वर्ण...... – डॉ० रजनी रंजन 31
❑ आदरणीय नागेन्द्र प्रसाद सिंह जी.... – प्रताप नारायण 33
❑ जय दुर्गा प्रेस – ब्रज किशोर दूबे 35
❑ भोजपुरी के कर्मठ साहित्यकार – नीभा श्रीवास्तव 37
❑ साक्षीभाव के कलमकार – दिव्येन्दु त्रिपाठी 38
❑ नागेन्द्र बाबू – घमण्डी राम 41
❑ भिखारी ठाकुर...... – राम दास राही 43

www.bhojpurisahityangan.com

आपन बात

'अंगना' के अबकी अंक **'नागेन्द्र प्रसाद सिंह श्रद्धांजलि विशेषांक'** निकालत खुशी आ दुःख दुनू के पारावार नइखे। खुशी एह बात के 'अंगना' में भोजपुरी के आपन सेवक, साधक रचनाकार, आलोचक के श्रद्धांजलि दीहल जा रहल बा जेकरा से पत्रिका धन्य हो रहल बिया। दुःख एह बात खातिर कि भोजपुरी साहित्य आ संस्कृति एतना मजिगर, खोजी, मेहनती आ समर्पित रचनाकार के खो दिहलस जेकरा बदे उनकर श्रद्धांजलि विशेषांक निकाले के पड़ल।

एह अंक के संपादन खातिर हम विशेष रूप से आदरणीय रामदास राही जी आ आदरणीय डॉ० ब्रजभूषण मिश्र जी से प्रार्थना कइनी कि उहाँ लोग सम्मिलित रूप से अतिथि संपादन के भार ग्रहण करो। दूनूं आदरणीय के कतनो आभार व्यक्त करब कमे परी कि उहाँ लोग एह प्रार्थना के स्वीकार कइनी।

विशेष रूप से आदरणीय रामदास राही जी के आभार, साधुवाद देत प्रणाम करब। उहाँ के जेतना मेहनत कइनी, नागेन्द्र जी के साथीगण आ सहयात्रीगण से संपर्क सधनी आ आलेख लिखवइनी उ अकथनीय बा। हम इहवाँ लाचार रहीं काहे कि नागेन्द्र जी के हमउमिर लोगिन से हमरा संपर्क ओतना ना रहे जेतना एह लोगिन के रहे। आदरणीय राही जी नागेन्द्र जी के अनन्य सखा रहीं - साला-बहनोई के रिश्ता में बंधाइल एगो सुंदर साथ रहे। एह रिश्ता, ओह सब कठिन रचना यात्रा के सहयात्री रहे के सहानुभूति आ प्रेम के मान राखत आदरणीय राही जी (जिनका के हमनी मामा कहीला) एह अंक के सामग्री खातिर जेतना खून-पसेना एक कइनी आ पत्रिका के कलेवर समृद्ध कइनी, जेतना सरधा आ प्रेम से सभे आदरणीय आलेखकार लोगिन से संपर्क कइनी ओकर ऋण हम एह जनम में ना उतार सकब।

हम बेर-बेर हार जात रहीं। पछड़ जात रहीं त राही जी एगो प्रेरक बनत हमरा सोझा ठाढ़ होके कहत रहीं - 'बेटी हम बानीं नूं... तूँ बढ़S... तोहार मामा जीअताड़न।' आँखिन के लोर पोंछ के हम फेर-फेर चल देत रहीं।

एगो आउर बात... एह अंक खातिर हम रचना सभ भाषा में संकलित कइनी। आदरणीय नागेन्द्र जी के कार्य संपर्क आ रचना संसार विराट रहे। एक ओर राजनीति, दूसरा ओर मुद्रण, तीसरा ओर भोजपुरी संहिता, चउथा ओर हिन्दी आ अंग्रेजी साहित्य, पाँचवा ओर शोध के क्षेत्र, छट्ठा ओर परिवार आ समाज - न जाने केतना संगठन आ आयाम से उनकर जुड़ाव रहे आ उनकर कार्यक्षेत्र रहे... त रचना भी ओही क्षेत्र से विभिन्न भाषा आ कलेवर वाला आइल - हम कोशिश कइनी कि बिना कवनो छेड़छाड़ कें ओकरा के ओही तरे, ओकरा पूरा भाव आ प्रवाह के साथ पत्रिका में ले लीहनी। एही से अबकी के 'अंगना' के अंक विविध भाषी, विविध वर्णी निकल रहल बा।

www.bhojpurisahityangan.com

'अंगना' के नागेन्द्र प्रसाद सिंह श्रद्धांजलि अंक के सभे रचनाकार के हाथ जोरि के प्रणाम करत बानी, उहाँ लोग के उदारता के नमन करत बानी कि उहाँ लोग आपन कीमती समय से 'अंगना' खातिर समय निकलनी, नागेन्द्र जी खातिर समय निकलनी आ शब्द श्रद्धांजलि लिखनी।

8 सितंबर स्वर्गीय नागेन्द्र जी के पुण्यतिथि ह। एह अवसर पर 'अंगना' के ई नागेन्द्र प्रसाद सिंह श्रद्धांजलि विशेषांक के लोकार्पण के योजना बा। नागेन्द्र जी के जयन्ती 7 अप्रैल बा। एह अवसर पर उनकर स्मृति-ग्रंथ प्रकाशित करे के योजना आ। अपने सभे से प्रार्थना बा कि नागेन्द्र प्रसाद सिंह स्मृति-ग्रंथ खातिर आपन आलेख अवश्य दीही आ अनुगृहीत करीं। एह अवसर पर साहित्यिक समागम के भी योजना बा। आशीर्वाद दीहीं कि भोजपुरी के एह बेटी के भाव-आखर पितृतर्पण के मान रह जाओ... सरधा पूर जाओ।

अंगना परिवार रउआ सभे के ऋणी रही। नागेन्द्र जी 'अंगना' के संपादक मंडल में रहीं। आज इहाँ के आपन पद बदल के आशीषदाता बन गइनी। नागेन्द्र जी 'अंगना' में बनल रहब सदा सर्वदा जबले 'अँगना' बनल रही....। नागेन्द्र जी के आशीष से 'अंगना' आज निहाल हो रहल बा... अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि...

रउआ अमर रहीं - नागेन्द्र प्रसाद सिंह अमर रहस।
भोजपुरी साहित्य उनकर योगदान भुला ना सके।

- डॉ० संध्या सिन्हा 'सूफी'

◆

हर फ़िक्र को धुएँ में उड़ाता चला गया...

❑ देवेश शंकर

Papa was always a very serious person. And that reflected in his literary work as well. Writing आलेख, निबंध, व्याख्या, विवेचना, शोध, इतिहास was a reflection of same. His literary and social conduct was also on similar pattern.

But, there was a transition during mid 80s, when is wrote ghazals and published a book of same. To my utter surprise hesang a ghazal in one of साहित्यिक गोष्टी। The reason for this transformation is best known to him.

During similar times, the thoughts, ideas and beliefs about eternal religious powers also took a new direction and Papa became a firm believer in God. Daily Puja, Dhyan and Chanting became an integral part of his life.

During very recent time, few months before his meeting with eternal destination, he sang a song from Bollywood of histimes. The lyrics were so true to his life style -

मैं ज़िंदगी का साथ निभाता चला गया।
हर फ़िक्र को धुएँ में उड़ाता चला गया...

122, महा भद्रकाली अपार्टमेन्ट,
एम० आर० वी० स्कूल के सामने,
सेक्टर – 13, द्वारिका, नई दिल्ली
मो० : 9654996373

◆

www.bhojpurisahityangan.com

संपादकीय

1976 ई० से हम जीवन-भर साहित्य-सेवा के व्रत ले ले बानी। तब से साहित्यकार लोगिन के साहित्य-संकलन आ प्रकाशन के साथे उनकर जन्मदिन प जयंती मनावल आपन धर्म मनले बानी। एह सिलसिला में भिखारी ठाकुर के जयन्ती मनावल साहित्य-संकलन आ प्रकाशन कार्य में लागल रहीं आ कामयाबी भी मिलल। भिखारी ठाकुर पर शोध करे वाला विद्यार्थी के मदत भी कइनी। भिखारी ठाकुर के मूर्ति स्थापना आ स्मृति-भवन के निर्माण-कार्य में भी लागल रहनी। आगे भी अइसने सेवा चल रहल बा आ चलत रही। बाकिर ई काम तबे सफल होला जब साहित्यकार स्वयं आ ओकर परिवारजन के साथ आ रुचि मिलेला। अक्सर देखिला एक-दू-बेर जयन्ती मनवला के बाद परिवार वाला लोगिन के जोश सेराये लागेला आ प्रेम घटे लागेला तब हमरो मन मसोस के रह जाये के पड़ेला। कवनो साहित्यकार के कृतियन प साहित्यकार के मरणोपरांत 50 बरिस ले ओकर परिवारजन के अधिकार ओह पाण्डुलिपि भा छपल रचना प होला। अब अइसन स्थिति में एह दिसाईं परिवार वालन के उदासीनता के वजह से कतिना साहित्यकार के रचना (प्रकाशित भा अप्रकाशित) बक्सा भा अलमारी में बंद रह जाता, धीरे-धीरे दीयका (दीमक) के भोजन बन जाता।

"बाबू जी रहीं, कोठरी किताब पत्रिका से भरल रहे।
पिताजी स्वर्गारोहण कइनी/क्रियाकर्म करके फुरसत पवनी
ठेला बोलवनी, किताब-पत्रिका कोठरी से बाहर निकलवइनी।
सब ठेला प लदाईल आ गोड़ लगनी
साफ-सुथरा ऊ कोठरी करवइनी
मोछ प घीव लगा के कहतानी - 'फलना के बेटा बानी।'

हम संघर्ष करत एह स्थिति के बदले में लागल बानी। प्रभु आ गुरुदेव भिखारी ठाकुर से प्रार्थना बा कि हमार ई व्रत आजीवन निभावस आ कामना बा माँ भारती हमार खेयाल राखस।

नागेन्द्र प्रसाद सिंह दिन बुधवार, 8 सितंबर 2021 के भोरे सूर्योदय के प्रणाम करत धरती से से विदा लेनी। 1937 ई० में एह धरती प श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह जी जनम ले ले रहीं। एह हिसाब से 84 बरिस के उमिर अवनि प रहे के वरदान उहाँ के मिलल रहे। बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी नागेन्द्र आपन अमूल्य धरोहर परिवार आ आपन हित-मीत के सऊँपनी आ एह धरती से विदा लिहनी। जुत, एकबाल आ अइकीन तीनों के भार योग्य पूत प निर्भर करेला। योग्य पुत्र/पुत्री से पिता के कृति के नाम रोशन होला आ कृति के मशाल जरत रहे के भरोसा होला।

ई पृथ्वी मृत्युभवन हऽ। आवागमन लागल बा। हमार अपार सरधा रहे कि नागेन्द्र जी के कृति के दीपक जरत रहो आ उनकर एगो स्मृति-ग्रंथ प्रकाशित होखो। सन् 1959 से 2016 ई० तक नागेन्द्र जी के साहित्य सेवा के एगो लमहर दुनिया बा। हमार दीदी, उनकर पत्नी आदरणीय शांति देवी भी एह बात से सहमत भइली। उनकर सभ बाल-बच्चन, दूनूं बेटा आ

www.bhojpurisahityangan.com

तीनों बेटी से गहन चर्चा भइल। एह दिसाईं सभ जिम्मेवारी उनकर मँझिली बेटी डॉ० संध्या प आ गइल बा। बेटी संध्या साहित्य सेवा में प्रवीण बाड़ी। 'अंगना' पत्रिका के प्रकाशन पिछिला 11 बरिस से लगातार कर रहल बाड़ी। कई गो किताब के रचना भी कइले बाड़ी। हमनी सब उनका पीठ प ठाढ़ बानी जा आ दिल खोल के आशीर्वाद दे रहल बानी कि युग-युग जीयस आ सुहाग बनल रहो, साहित्य-सेवा करत रहस।

एही क्रम में बेटी संध्या के फोन आइल त हम सलाह दीहनी कि 'अंगना' पत्रिका के अगिला अंक नागेन्द्र प्रसाद सिंह स्मृति-अंक निकालऽ आ हम तोहरा साथे बानी। एह में हमार मदद जे होई हम सहर्ष तैयार बानी, त ऊ बहुत भावुक हो गइली आ कहली कि - "रउआ एह अंक के अतिथि संपादक होखे के भार उठाईं।" हम सहर्ष तैयार हो गइनी। भाई नागेन्द्र जी के साथ-संघतिया रहे के, जिनगी के अनेक संघर्षन में साथ-निबाही के, आ उनकर साहित्यिक योगदान के प्रतिदान करे के एह से सुन्दर अवसर आउर का होखी ? - धन्य बेटी तूँ संध्या आ हमार भगिनी - बेटी आ भगिनी दू ना होखे - हम हर समय तोहरा साथे बनी - 'जीय बेटी लाख बरिस।'

धन्यवाद !

- रामदास राही
भिखारी ठाकुर आश्रम, कुतुबपुर, सारण

Tribute : Shri Nagendra Prasad Singh

❑ INDIRA PRASAD
Associate Professor,
Department of English, Miranda House
University of Delhi

It was with overwhelming sadness that I learnt about Nagendraji's passing away. As the reality of his absence sank in, so did some other realisations. I would never again hear his endearing voice and hearty laughter over the phone.

My association with Nagendraji began some two years before I enrolled in 2010, for a Ph.D on Bhikhari Thakur's works in the English department at Delhi University. I was told by a Professor in Veer Kunwar Singh University, Ara, that if I had a Ph.D on Bhikhari Thakur on my mind, then I should meet Nagendra Prasad Singh in Patna.

And so I reached Nagendra Babu's house in Patna. He gave me all the books I needed and much more. He was my first Ph.D guide and Guru. He remained a sounding board for me all through my Ph.D years. I had many an enriching discussion with Nagendra Babu on the finer points of my research. For instance, the clarity that I have today on many issues such as the genre of Bidesia, its history and tradition, is all because Nagendra Babu had already cleared the ground with his fine and erudite articles. His writings provided a solid foundation on which I could take my research forward.

I am deeply indebted to Nagendra Babu for all the advice and help I got. There are some debts one can never repay- mine to Nagendraji is one of them. He will remain an inspiration to all who knew him.

Mob. : 9234605079 ◆

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी के समर्पित साहित्यकार नागेन्द्र प्रसाद सिंह

❑ सूर्यदेव पाठक पराग
पूर्व अध्यक्ष, अखिल भारतीय
भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

भोजपुरी भाषा आ साहित्य का विकास में आपन पूरा जीवन खपा देवेवाले तपस्वी साहित्य सेवियन में नागेन्द्र प्रसाद सिंह के नाँव बहुत आदर के साथ लिहल जाला। नागेन्द्र बाबू के व्यक्तित्व बहुआयामी रहे। प्रौढ़ निबंधकार, गंभीर समीक्षक, भोजपुरी अनुसंधान के मार्गदर्शक, अनेक पत्र-पत्रिकन के संपादक आ भोजपुरी, मगही, अंगिका, बज्जिका आदि अनेक बिहारी भाषन में प्रकाशित होखे वाली पुस्तकन के सुरुचिपूर्ण मुद्रक का रूप में नागेन्द्र प्रसाद सिंह जानल जात रहीं।

अइसे त हम भोजपुरी में लिखे के शुरूआत 1975-76 में कइलें रहीं आ सम्मेलन से जुड़ाव सन् 1977 में आयोजित अखित भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के सीवान अधिवेशन के मंच पर डॉ० रामविचार पाण्डेय का अध्यक्षता आ पाण्डेय कपिल का संचालन में काव्य पाठ कइला के साथे हो गइल रहे। सन् 1978 में प्रकाशित हमरा हास्य-व्यंग्य काव्य 'श्री हीरोचरित मानस' से हमरो गिनती भोजपुरी के साहित्यकारन में होखे लागल आ सम्मेलन के सदस्यता मिल गइल, बाकिर नागेन्द्र बाबू से हमार परिचय 1986 में प्रकाशित 'अछूत' उपन्यास के शिल्पकला महाविद्यालय, पटना में आयोजित लोकार्पण समारोह के अवसर पर भइल, जवना में पटना उच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता प्रभाशंकर मिश्र, डॉ० विवेकी राय, रामगोपाल 'रूद्र', पाण्डेय कपिल, नागेन्द्र बाबू, डॉ० बजरंग वर्मा, डॉ० शंभुनाथ आदि महानुभाव उपस्थित रहले। 'अछूत' के लोकार्पण के बाद वक्ता लोग ओह उपन्यास पर तरह-तरह के विचार प्रकट गइल, जवना में कुछ बात हमारा के प्रोत्साहित करे वाला रहे त कुछ हतोत्साहित करेवाला रहे। हमरा बगल में बइठल नागेन्द्र बाबू हमरा मन के भाव समझत धीरे से कहलीं - 'पराग जी, चर्चा के दौरान ई सभ होला। घबड़ाये के बात नइखे, उपन्यास अच्छा बा।' हमरा जइसन नया उपन्यासकार के नागेन्द्र बाबू के प्रोत्साहन से बहुत बल मिलल आ तब से संपर्क आ अपनापन के कड़ी जुड़ल, जवन उनका स्नेहिल व्यवहार से लगातार मजबूत होत गइल।

हम कभी 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' भा 'धर्मयुग' में एगो व्यंग्य कविता पढ़ले रहीं -

''कवि बना, कहानीकार बना,
संपादक भी अब बन लूँगा।''

हमहूँ सोचलीं कि कवि बन गइलीं आ कहानीकार, उपन्यासकार बन गइलीं, त काहे ना संपादको बन जाईं। ई सभे जानेला कि लेखक से ज्यादा हैसियत संपादक के होला। अगर कमजोरो लेखक संपादक हो जाय त बड़को लेखक लोग आपन रचना छपवावे खातिर संपादक के मुँह ताकेला। हमहूँ भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका के देखा देखी छव गो वरिष्ठ भोजपुरी सेवियन के एगो परामर्श मंडल आ कुछ आर्थिक सहयोगी भोजपुरी प्रेमियन के प्रबंध संपादक चाहे बिगुल परिवार का सदस्य के रूप में नाँव जोड़ के पत्रिका के प्रारूप तैयार कइलीं। नाँव रखली 'बिगुल' आ कुछ रचनन के एगो पाण्डुलिपि तैयार क के पहुँच गइलीं नागेन्द्र बाबू के सर्वश्री जय दुर्गा प्रेस में। हम 'विगुल' (तिमाही) पत्रिका का प्रवेशांक

www.bhojpurisahityangan.com

खातिर ओकर पाण्डुलिपि नागेन्द्र बाबू के सउँप के निश्चिंत हो गइलीं। ना प्रूफ देखे के झंझट, ना छपे खातिर तगादा करे के जरूरत। सही समय पर नागेन्द्र बाबू का तत्परता से 'बिगुल' के प्रवेशांक निकल गइल। पत्रिका छपला पर अंत में छपल रचनन के बारे में हमार चुनाव के प्रशंसा क के नागेन्द्र बाबू हमार उत्साह बढ़वलीं।

पटना में प्रति वर्ष आयोजित होखे वाला लघुकथा सम्मेलन में नागेन्द्र बाबू से भेंट हो जात रहे। ओकरा अलावा अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशनो में उहाँ के सक्रिय भागीदारी आ आयोजित गोष्ठियन में तर्कपूर्ण विषय निरूपण बहुत प्रभावशाली होत रहे।

हमरा संपादन में 'बिगुल' के तीन गो लघुकथा विशेषांक प्रकाशित भइल, जवना में नवासी लघुकथाकारन एक हेगो लघुकथा शामिल भइल। आखिरी अंक में भोजपुरी लघुकथा पर एगो समीक्षात्मक आ लेख खातिर जब हम नागेन्द्र बाबू से आग्रह कइलीं त उहाँ का 'लघुकथा आ भोजपुरी लघुकथा' शीर्षक से एगो बढ़िया आलेख लिख के दिहलीं, जवन तीनों विशेषांकन के समेकित पुस्तकाकार संकलनों में शामिल भइल आ संशोधित परिवर्द्धित होके फुट-नोट में 'बिगुल' आ तिरमिरी का चर्चा के साथे 'सोच-विचार' पुस्तक में संकलित भइल।

लघुकथा सम्मेलन, पटना के 1997 में आयोजित वार्षिक अधिवेशन में जब नागेन्द्र बाबू से भेंट भइल त आपन दू गो किताब 'सोच-विचार' आ 'नवरंग' (दूसरका संस्करण) आपन हस्ताक्षर क के हमरा हाथ में थम्हावत हिदायत कइलीं कि एह किताबन पर आपन विचार लिख के देबे के बा। हम किताबन के धन्यवाद के साथे लेके पढ़ गइलीं, बाकिर कुछ लिखेवाली बात दिमाग से बिसर गइल। सन् 1999 में वरिष्ठ गजलकार जगन्नाथ जी का संपादन में 'सोच-विचार' पर बात विचार नाँव से सोच विचार पर बाईस गो लेखकन के लिखल दू गो संस्कृत, तेरह गो भोजपुरी, चार गो हिन्दी आ एक एगो मैथिली, अंगिका, मगही आ अंग्रेजी आलेखन से सजल पुस्तक पवलीं त ओह में आपन लेखकीय सहभागिता ना दिहला के बड़ा अफसोस भइल बाकिर ओह पुस्तक का माध्यम से नागेन्द्र बाबू के लिखल विविधवर्णी निबंधन का बारे में विद्वान लेखकन के विचार पढ़ के मालूम भइल कि नागेन्द्र बाबू के लेखकीय क्षमता कतना प्रौढ़ आ चिन्तन के झलक कतना फइलल बा। 'नवरंग' आ 'सोच विचार' पढ़ला का बाद विद्वान लोग आपन विचार लिखले बा, ओकर कुछ उदाहरन देखे जोग बा। शिक्षा शास्त्री आ साहित्यकार सत्यनारायण लाल का नजर में 'ई पुस्तक (सोच विचार) भोजपुरी भाषा, साहित्य, संस्कृति, अस्मिता आ लोक व्यवहार के समझे में मार्गदर्शिका के काम करीं।' भोजपुरी के पहिलका उपन्यासकार रामनाथ पाण्डेय नागेन्द्र बाबू के व्यापक अध्ययनशीलता के चर्चा करत लिखले बानी 'हमरा जानते समग्र ना, त ज्यादा से ज्यादा भोजपुरी साहित्य के अध्ययन जे लोग कइले बा, ओकरा में श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह के नाम बड़ा आदर से लिहल जा सकता।' ओही आलेख में पाण्डेय जी इहाँ चर्चा कइले बानी 'भोजपुरी के जाने खातिर जवना वस्तु के आवश्यकता बा, ऊ कुल्ही 'सोच-विचार' में बा।' पाण्डेय कपिल जी का विचार से 'विविध विषयक ई कुल निबंध विषय विवेचन के ही दृष्टि से ना, प्रस्तुतीकरण का विचार से भी पुष्ट आ संतुलित भइल बाड़न स।' नागेन्द्र बाबू के भोजपुरी से जुड़ल निबंधन का बारे में प्रो० (डॉ०) गदाधर सिंह के स्पष्ट अभिमत बा 'भोजपुरी के सर्वतोमुखी विकास के छटपटाहट लेखक के मन में बा। भोजपुरी के विकास से संबंधित जतना समस्या वाड़ी स, उन्हनी के अन्तःस्थल में प्रवेश कइ के लेखक आपन सार्थक समाधान प्रस्तुत कइले बाड़े। प्रो० (डॉ०) वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय नागेन्द्र बाबू के एगो स्तरीय निबंधकार का रूप

www.bhojpurisahityangan.com

में चर्चा करत लिखल बाड़े 'स्तरीय निबंध निकाले खातिर निबंधकार में विषय-विस्तार के क्षमता, चिन्तन के गहराई आ शब्दन से खेले के क्षमता जरूरी होला। ई कुल्ही गुण एक संगे नागेन्द्र प्रसाद सिंह में मौजूद बा।'

नागेन्द्र बाबू के निबंध लेखन, समीक्षा पद्धति आ व्यापक दृष्टिकोण पर विद्वानन के एह अभिमत का बाद शायद कहे के बाकी नइखे रह जात। हँ अतना जानल जरूरी बा कि ई सभ आलेख विभिन्न पुस्तकन आ पत्रिकन के संपादकीय, भोजपुरी सम्मेलन का गोष्ठियन आउर ओह अवसरन पर दीहल व्याख्यानन के संकलन ह जवन समय-समय पर नागेन्द्र बाबू के अपना चिन्तन-मनन से तैयार क के प्रस्तुत कइले बाड़े। एह तरह का निबंधन के चार गो प्रकाशित संग्रह कालक्रम से बाड़े से - 1. नवरंग (1978, 1997), 2. सोच-विचार (1997), 3. (चिन्तन मनन (2008) आ 4. जोड़ल बटोरल (2011)।

पूर्व विवेचित चार गो पुस्तकन का अलावा नागेन्द्र बाबू के तीन गो प्रतिष्ठित पुस्तकन के चर्चा जरूरी बा। सन् 2000 में नागेन्द्र बाबू के पैंतीस गजलन के एगो संग्रह 'सुर ना सधे' प्रकाशित भइल। नागेन्द्र बाबू के शुरूआती झुकाव हिन्दी में कविता लिखे का प्रति भी रहे जवन भोजपुरी लेखन से जुड़ला का बादो कवनो ना कवनो रूप में बनल रहल। सन् 1978 में कविवर जगन्नाथ जी का साथे संपादित एगो गजल संग्रह 'भोजपुरी के प्रतिनिध गजल' प्रकाशित हो चुकल रहे। संगही भोजपुरी में गजल लिखलो चलत रहे, जवना के परिणति 'सुर ना सधे' का रूप में सामने आइल। 'मेजिगर सधल बा सुर' शीर्षक से लिखल पुस्तक का भूमिका में जगन्नाथ जी नागेन्द्र बाबू का गजलकार रूप में चर्चा करत लिखले बानी - 'गीत-गजल-कविता' सब में समान गति राखे वाला नागेन्द्र जी का गजलन के प्रति विशेष आसक्ति आ अनुरक्ति रहेला। भोजपुरी में उनका कवि जीवन के आरंभ भी गजल से ही भइल रहे।' जगन्नाथ जी नागेन्द्र बाबू का गजलगोई से जुड़ल विषय वस्तु आ शिल्प पक्ष पर चर्चा करत आगे लिखले बानी - 'सुर ना सधे' के कवि रिवायत के प्रति निष्ठा त राखत बा, बाकिर जदीदियत के प्रति भी ओकर आकर्षण कम नइखे। परंपरा परिवृत से बाहर निकल के सामाजिक, सांस्कृतिक आ आर्थिक-राजनैतिक विसंगतियन तथा मानव आचरण के क्षरण के अंकन ऊ अच्छा खासा कइले बाड़न। बहरन का अनुपालन में कवि सचेत रहल बा। छंदन में सम्यक गति-प्रवाह आ सहज सांगीतिक लयात्मकता बा। शास्त्रीय छंदन के अलावा संग्रह में लोकराग का छंदन के प्रयोग भी सफलता से कइल गइल बा। शब्द-चयन माहिराना ढंग से कइल गइल बा आ शब्दन के तालमेल नीमन बा। गजलन के भाषा लोच आ माधुर्य से परिपूर्ण नादानुकूल आ प्रवाहमयी बा। 'सुर ना सधे' में नागेन्द्र जी के सुर मजिगर सधल बा। जगन्नाथ जी नागेन्द्र जी के गजल में आंशिक छंद-स्खलन के चर्चा भी कइले बानी। ओकरा बावजूद नागेन्द्र बाबू के गजलन पर कइल जगन्नाथ जी के अभिमत गजलकार क्षमता के ठीक तरह से परिचित करा देत बा।

हमरा नागेन्द्र बाबू का गजलन के कुछ शेर बड़ा नीक लागत बाड़े से, जइसे -

मधुवन का शिकायत रहल खसल बहार से,
दरपन का शिकायत रहल खराब सिंगार से।

x x x

मन बहुत बाटे, साधन बहुत थोर बा,
का खरीदीं आ का हम हिफाजत करीं।'

x x x

जाये के उहाँ जहाँ से लवटल बाटे मुश्किल,
आपन कुछ पहिचान एही से छोड़ रहल बानी हम।

नागेन्द्र बाबू के लिखल 'भोजपुरी साहित्य के संक्षिप्त इतिहास' सन् 2009 में प्रकाशित भइल।

www.bhojpurisahityangan.com

102 पृष्टन के एह पुस्तक में भोजपुरी साहित्य का इतिहास के एगो संक्षिप्त रूपरेखा आ गइल बा, जवन भोजपुरी साहित्य का अद्यतन विकास के परिचय दे देत बा। अइसे त नागेन्द्र बाबू के परिकल्पना रहे 500 पृष्ठ के एगो पूरा इतिहास लिखे के रहे जवन उनके जइसन उद्यमी, अध्ययनशील आ भोजपुरी का प्रति निष्ठावान व्यक्ति से संभव रहल, जवन ना हो सकल। अगर लिखा गइल रहित त भोजपुरी साहित्य के एगो मानक इतिहास होइत।

भोजपुरी का प्रति निष्ठा, अध्ययन, अनुशीलन, लेखन क्षमता आ इतिहास दृष्टि के देसाईं नागेन्द्र बाबू विद्वानन का नजर से अपरिचित ना रहीं। एही से साहित्य अकादमी जब सहभाषा शृंखला का अंतर्गत भोजपुरी भाषा साहित्य पर निबंध तैयार करावे के निश्चय कइलस त ओकरा के लिखे के जिम्मेदारी नागेन्द्र बाबू के सउँपलस जवना के प्रकाशन 'भोजपुरी' नाँव से सन् 2017 में भइल। नागेन्द्र बाबू ओहू काम के पूरा मनोयोग से पूरा कइलीं बाकिर अकादमी के प्रारूप आ आशा नीति के मोताबिक मात्र सौ पृष्ठ में पूरा करे के पड़ल। उहाँ के जानकारी आ क्षमता के समुचित उपयोग एह लेखन में भी ना हो सकल जवना के चर्चा करत नागेन्द्र बाबू पुस्तक के निवेदन में लिखले बानी - 'भोजपुरी के प्रचुर साहित्य को विनिबंध सीमित काया में प्रस्तुत करना बहुत कठिन कार्य है और विश्लेषण की संभावनाएँ विरल हो जाती है। वास्तव में भोजपुरी भाषा और साहित्य का इतिहास कम से कम पाँच सौ पृष्ठों के बड़े आयाम की अपेक्षा रखता है।' उहाँ के इहे लिख के संतोष करे के पड़ल - 'संभव है कि यह विनिबंध भविष्य में भोजपुरी साहित्य इतिहास लेखकों को प्रेरणा दे सके ताकि एक विस्तृत इतिहास प्रकाश में आ सके।'

नागेन्द्र बाबू के लेखन का साथे संपादनो के काम बहुत महत्वपूर्ण रहल बा। अनेक पत्रिकन आ पुस्तकन के योग्यतापूर्वक संपादन क के नागेन्द्र बाबू अपना संपादकीय विचार, रचना संयोजन आ रचनन के गुणवत्ता के उच्च मानदण्ड से कवो समझौता नइखी कइले। उनका संपादन में भोजपुरी मासिक लोग, भोजपुरी उचार, भोजपुरी मासिक, भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका के रघुवीर नारायण जन्मशताब्दी पर श्रद्धांजलि आ 'भिखारी ठाकुर जन्मशताब्दी विशेषांक' में धारदार संपादकीय आलेख का अलावा भोजपुरी वार्षिक भोजपुरी अकादमी पत्रिका के संपादित चार गो अंकन के रचना संयोजन उनका संपादन कौशल के प्रमाण बा।' भोजपुरी अकादमी पत्रिका चाहे भोजपुरी निबन्धमाला विशुद्ध रूप से शोध पत्रिका रहे, जवना के संपादन शोध दृष्टि से संपन्न नागेन्द्र बाबू अपना योग्यता के भरपूर प्रयोग क के कइले बानी।

सन् 1994 में नागेन्द्र बाबू का संपादन में प्रो० उमाकान्त वर्मा के भोजपुरी गीत आ आमंत्रित आलेखन के संग्रह पुस्तकाकार 'गीत के गूँजत रहल' नाँव से प्रकाशित भइल। सन् 2005 में भिखारी ठाकुर के समूचा उपलब्ध रचनन क संकलन 'भिखारी ठाकुर रचनावली' नागेन्द्र बाबू का संपादन में बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् से प्रकाशित भइल। एकरा अलावा उनका संयुक्त संपादन चाहे संपादन सहयोग से लगभग एक दर्जन पुस्तकन के प्रकाशन भइल, जवना में बिहार विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तरीय पाठ्यग्रंथ 'भोजपुरी पद्य संग्रह', स्व० सिपाही सिंह 'श्रीमंत' के संकलित थरुहट के लोकगीत मास्टर अजीज के गीत आ मास्टर अजीज व्यक्तित्व एवं कृतित्व आदि शामिल बा।

नागेन्द्र बाबू का जीविकोपार्जन के दूगो क्षेत्र रहल - सर्वश्री जय दुर्गा प्रेस के मुद्रण कार्य आ भोजपुरी अकादमी के नौकरी। नागेन्द्र बाबू सन् 1959 में सर्वश्री जय दुर्गा प्रेस के स्थापना क के पुस्तक मुद्रण व्यवसाय आरंभ कइलीं, जहाँ से

www.bhojpurisahityangan.com

हिन्दी, भोजपुरी, मगही, मैथिली, अंगिठा भाषा का पुस्तकन के सुंदर, स्वच्छ आ सुरुचिपर्ण मुद्रण होखे लागल। एगो सुधी साहित्यकार भइला का नाते नागेन्द्र बाबू के मुद्रण कार्य में ठोस आर्थिक लाभ लेवे के अपेक्षा साहित्यकार लोग का साथे सहयोग के भाव ज्यादा रहे। एह बारे में प्रो० कर्मेन्दु शिशिर के ई कहनाम एकदम सटीक लागत बा - 'भोजपुरी के लिखनिहार लोग जब सतुआ पिसान बन्हले कांखि प पाण्डुलिपि दबा के, विना टेंट के जोर के सभ दुआर डाँकि के जब लोग प्रकाशन के कुटिया में ढहतो ढिमिलात चहुँप जाला, नागेन्द्र जी कवनो ना कवनो जोगाड़ जुगुत बइठावत, रचनन के साजत-संवारत सोधत-साधत उनुकर पोथी छपवाइये के दम लिहिले। एह मायने में नागेन्द्र जी एगो लिखनिहार भर ना होके, जीअत जागत आंदोलन हऊवन।'

नागेन्द्र बाबू भोजपुरी अकादमी, पटना में ओकरा स्थापना काल 1978 से विभिन्न पदन - अनुसंधान पदाधिकारी, सहायक निदेशक आ उपनिदेशक के पद पर काम करत सन् 1995 में सेवानिवृत भइलीं।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन से नागेन्द्र बाबू के लगाव ओकरा स्थापनाकाल से रहल। ओमें उनुकर सांगठनिक कार्यकलाप आ भोजपुरी भाषा साहित्य से जुड़ल आंदोलन चाहे विकास के मुद्दन से जुड़ाव लगातार बनल रहल। सम्मेलन का अधिवेशन में आयोजित गोष्ठियन में भोजपुरी से जुड़ल समस्यन पर उनकर पढ़ल निबंध एकर सबूत बाड़े सँ। विषय प्रवर्तेन भा व्याख्यान का माध्यम से नागेन्द्र बाबू भोजपुरी से जुड़ल हर विषय पर आपन तर्कपूर्ण आ सुलझल विचार प्रगट करत रहीं। उहाँ का संयोजक (प्रवर समिति), प्रबंध समिति, कोषाध्यक्ष, महामंत्री आ उपाध्यक्ष के पद सुशोभित करत अध्यक्ष के सर्वोच्च पद तक के यात्रा पूरा कइलीं।

नागेन्द्र बाबू का भोजपुरी सेवा के मूल्यांकन करत अनेक संस्थन का ओर से समय-समय प सम्मान आ पुरस्कार मिलत रहल। ओह में प्रमुख बा - अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के 'हरिशंकर वर्मा पुरस्कार' (2000), विश्व भोजपुरी सम्मेलन, दिल्ली के प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन (बोकारो) के 'भोजपुरी भूषण' सम्मान (2002), भोजपुरी महोत्सव (आरा) के 'भोजपुरी साहित्य भास्कर' सम्मान (2004), भोजपुरी विकास मण्डल (सिवान) के 'विशिष्ट सम्मान' (2005) आदि।

नागेन्द्र बाबू का व्यक्तित्व के एगो ई खासियत रहे कि बचपने से आँख के ज्योति कम भइला का बावजूद लेखन-मनन-चिन्तन चाहे अपना कार्य संपादन में आँख के समस्या कबो आड़े ना आइल। ओही स्थिति में एम० एड० तक उच्च शिक्षा पवलीं, अनुसंधान पदाधिकारी से उपनिदेशक आ भोजपुरी सम्मेलन के अनेक पद से बढ़त अध्यक्ष के पद तक पहुँचली।

खुशी के बात बा कि नागेन्द्र बाबू का जिनगिये में उनका संपूर्ण रचनन के संकलन 'श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह रचनावली' नाँव से पाँच खण्ड में प्रकाशित हो चुकल बा जेकर संपादन डॉ० संध्या सिन्हा आ सह संपादन दिलीप कुमार कइले बा लोग। नागेन्द्र बाबू का संपूर्ण लेखकीय व्यक्तित्व के मूल्यांकन करे खातिर उनकर विदुषी पुत्री डॉ० संध्या सिन्हा का संपादन में प्रकाशित एह रचनावली के बहुत महत्व मानल जाई।

एकरा पहिला खण्ड में नागेन्द्र बाबू के चार गो भोजपुरी पुस्तक - 'नवरंग', 'सोच-विचार', चिन्तन-मनन' आ 'जोड़ल-बटोरल' के संकलित कइल गइल बा। दूसरा खण्ड में पूर्व प्रकाशित 'भोजपुरी साहित्य के संक्षिप्त इतिहास' आ 'हिन्दी में शिक्षा साहित्य : उपलब्धियाँ एवं संभावनाएँ' (शोध प्रबंध) का साथे 'यत्र-तत्र' का अंतर्गत हिन्दी में लिखल तरह-तरह के निबंधन आ

www.bhojpurisahityangan.com

पुस्तकन के भूमिका के संग्रह कइल गइल बा, जवना में लोक संस्कृति से जुड़ल निबंध, भोजपुरी के नामी-गिरामी साहित्यकारन के परिचय, लघुकथा पर विचार-विमर्श आ मार्क्सवाद से जुड़ल चर्चा शामिल था। लोक संस्कृति आ भोजपुरी के साहित्यकारन पर लिखल हिन्दी के निबंधन में नागेन्द्र बाबू के भोजपुरी निष्ठा के झलक साफ लउकत बा। खण्ड एक आ दू के प्रकाशन सन् 2011 में भइल रहे। रचनावली के खण्ड तीन आ चार के प्रकाशन सन् 2013 में भइल। खण्ड तीन में नागेन्द्र बाबू के एगो गजलकार आ गजल संग्रहकर्ता-संपादक के रूप में सामने आइल बा। एह में उनकर गजल संग्रह 'सुर ना सधे' संगृहीत बा। जइसन कि पहिले चर्चा हो चुकल बा जे जगन्नाथ जी का साथे नागेन्द्र बाबू का संपादन में एगो गजल संग्रह 'भोजपुरी के प्रतिनिधि गजल' सन् 1978 में छपल रहे, जवना में तेग अली 'तेग' से लगायत नागेन्द्र तक तीस गजलकारन के शामिल कइल रहे। बाद में नागेन्द्र बाबू महसुस कइलीं कि सन् 1989 में प्रकाशित 'भोजपुरी के प्रतिनिधि गजल' में शामिल गजलकारन के बाद एने पैंतीस बरिसन से सैकड़ों गजलकार एह दिशा में सक्रिय बाड़ें। ओह में से छियासठ गो चुनिंदा गजलकारन का गजलन के एगो प्रतिनिधि गजल संग्रह 'भोजपुरी के प्रतिनिधि गजलकार' खण्ड-2 के संपादन युवा साहित्यकार दिलीप कुमार का सहयोग से कइलीं। ओह में आचार्य महेन्द्र शास्त्री, पाण्डेय आशुतोष, सूर्यदेव पाठक 'पराग', जवाहर लाल 'बेकस', कृष्णानंद 'कृष्ण', गंगा प्रसाद 'अरुण', डॉ० अशोक द्विवेदी, डॉ० ब्रजभूषण मिश्र, भगवती प्रसाद द्विवेदी, डॉ० मधुर नज्मी, मिथिलेश गहमरी, मनोज 'भावुक', केशव पाठक 'सृजन' आदि स्थापित से लेके नवोदित गजलकारन के जगह मिलल बा। 'रचनावली' खण्ड-तीन के उत्तरार्द्ध नाटक के अवधारणा आ भोजपुरी नाटक के विकास आ अनुशीलन पर केन्द्रित बा। 150 पृष्ठन में नाटक आ भोजपुरी नाटकन के विकास पर विस्तार से चर्चा भइल बा।

रचनावली, भाग-चार कथा साहित्य आ भोजपुरी कथा साहित्य पर केन्द्रित बा। उपन्यास के अवधारणा के क्रम में नागेन्द्र बाबू भारतीय आ विदेशी विद्वानन के उपन्यास पर दीहल परिभषन के चर्चा कइले बानी। भोजपुरी कथा साहित्य के उपन्यास, उपन्यासिका, कहानी आ लघुकथा के रूप में चार विधन में बाँट के अलग-अलग विचार कइल बा। भोजपुरी में उपन्यास का कोटि में 'फुलसुंघी', महेन्द्र मिसिर आ अमंगलहारी के उपन्यासिका का कोटि में 'मुट्ठी भर सुख' आ कवाछ के कहानी संग्रह का कोटिं में कृष्णानंद 'कृष्ण' के 'हादसा', रामनाथ पाण्डेय के 'सतवन्ती' आ डॉ० वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय के 'दरबार' आ लघुकथा संग्रह का कोटि में सूर्यदेव पाठक 'पराग' के 'तिरमिरी' आ मनोकामना सिंह 'अजय' के 'खरजिउतिया' के रखल गइल बा। खण्ड-चार का उत्तरार्द्ध के 350 पृष्ठन में नागेन्द्र बाबू, भोजपुरी के पाँच गो उपन्यास, पाँच गो कहानी, आ पाँच गो लघुकथा के चयन क के ओकरा तत्वन पर विस्तार से चर्चा कइले बानी। समीक्षित पाँच गो उपन्यासन के नाँव बा - पाण्डेय कपिल के 'फुलसुंघी', रामनाथ पाण्डेय के 'इमरीतिया काकी', प्रो० रामदेव शुक्ल के 'ग्रामदेवता', हरेन्द्र कुमार पाण्डेय के 'जुगेसर' आ डॉ० अशोक द्विवेदी के 'आवऽ लवट चलीं जाँ'। पाँच गो समीक्षित कहानियन के शीर्षक बा - आचार्य शिवपूजन सहाय के 'कुंदन सिंह केसरबाई', डॉ० जवाहर लाल के 'अपना घर के आदमी', कृष्णानंद 'कृष्ण' के 'मूस बिलाई के खेल', डॉ० अशोक द्विवेदी के 'बकसऽ ए बिलार' आ डॉ० मिथिलेश्वर के 'तिरिया जनम जनि दीह विधाता'। एही तरे पाँच गो चुनल लघुकथन के नाँव बा - सूर्यदेव पाठक 'पराग' के 'देशसेवा', शिवपूजन लाल 'विद्यार्थी' के 'आरक्षण', भगवती

(शेष पृष्ठ 36 पर)

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी के नागरी प्रचारिणी सभा आ नागेन्द्र जी

❑ तैयब हुसैन 'पीड़ित'

8 सितंबर 2021 के सवेरे 9 बजे जब रामदास राही के फोन आइल कि आल्हे भोरे आपन नागेन्द्र जी ना रहलीं, त हमरा सामने नया टोला, पटना-4 के गली के भीतर ट्रेडल मशीनवाला 'जय दुर्गा प्रेस' के अहाता देखाई देवे लागल। कुर्सी पर बइठल, टेबुल पर झुकल कागज के बिल्कुल आँख के पास ले जाके कौनो प्रूफ पढ़त लउकलन नागेन्द्र प्रसाद सिंह जी। पान खइले, मुस्कात। गली में घुसत खानी मोहानी पर उत्तर प्रदेश के भँड़ भुँजावला के दोकान नजर आइल, जवन आवत जात खाँ गोरखपुरिया भोजपुरी बोलत अक्सर भूँजा के ठोंगा दे जात रहे। पान खाये नागेन्द्र जी बाहर जाईं। हालांकि ऊहो दोकान लगभग निर्धारित रहे।

परिवार त हमरा आपने बुझाय, तब उहाँ के बाबूजी, माताजी जिन्दा रहीं। बाबूजी (बब्बन बाबू) हाईस्कूल के प्रधानाध्यापक पद से सेवानिवृत्त आ माताजी घरेलू पत्नी। पत्नी हाईस्कूल के नोकरी में। छोट भाई फउज में आ बड़ भाई सुरेन्द्र बाबू शिक्षा विभाग में पदाधिकारी पद पर। चंदा, संध्या आ प्रिया के बिआह त हमरा सामने भइल। तब ऊ लोग पढ़ाई करत रहे। चंदा भूगोल में एम० ए० करत बाद में हाईस्कूल में नोकरी ह इली। हम उनका छपरा के ससुरार वाला घरहूँ गइल बानीं। बेटा शेखर मेकेनिकल इंजीनियरिंग में आ छोट समीर कृषि कॉलेज शिक्षारत रहे लोग। एह क्रम में ई ना बुझाइल कि नागेन्द्र जी एम० ए०, एम० एड० कइयो के शिक्षा विभाग में काहे ना गइलीं ? ओहजा आँख के कमजोरी कवनो बड़ बाधा ना रहे।

अपना बारे में कहल जरूरी बुझाता कि हम इंटरमीडिएट (जीव विज्ञान) पास क के गाँव के दू-दू हाईस्कूल में साइंस टीचर बनत पटना नगर निगम में क्लर्की करे 1968 ई० राजधानी आ गइल रहीं। मास्टर साहब से किरानी बनल पद आ प्रतिष्ठा के हिसाब से त कमतर कहाई, बाकि हमरा सामने पारिवारिक गरीबी मुँह बवले खड़ा रहे। शहर जाके पढ़ ना सकत रहीं आ लिखे के बेमारी बड़ भाई ताहिर हुसैन 'व्यथित' के संगत में लाग चुकल रहे। व्यथित के भाई के 'पीड़ित' भइल एही साहित्यिक रोग के लइकाई के परिणति रहे। अब केहू खातिर ई हँसी के विषय हो सकेला त गंभीरता से अँखियान करे के, सो तो कि अइसन परिवार त आर्थिक आ सामाजिक रूप से खुशहाल होइये ना सके! कहत चलीं कि हम जब गाँव के बेसिक स्कूल में कक्षा सात या आठ के छात्र रहीं, तबे हिन्दी में एगो चुटकुला 'शुभ होता है' दैनिक आर्यावर्त के रविवारीय परिशिष्टांक में लइकन के स्तंभ 'बाल मंजूषा' में 1958 में छपल आ दोसर प्रौढ़ हिन्दी कविता ओही अखबार में बड़कन कवियन साथे। शीर्षक रहे 'मानव और विज्ञान'। तब हम हायर सेकेण्डरी में पहुँच गइल रहीं आ साल रहे 1962 ई०। आकाशवाणी पटना के 'नई रचनाएँ' कार्यक्रम में हमरा हिन्दी कवितन के प्रसारण साल भी रहे। पटना के पहिले भोजपुरी रचनन में पहिल कविता 'देश खातिर', 'माटी के बोली' (छपरा) के स्वाधीनता विशेषांक में 1965 में छपल आ पहिल कहानी 'झपसिया' बनारस के 'भोजपुरी कहानियाँ' के 'छात्र-सभा' आदि में हम मौसमी कविता लिखे लागल रहीं। एगो हिन्दी कविता 'मेरी पुस्तक', 'छात्रबंधु' (पटना) द्वारा आयोजित अखिल भारतीय विद्यालयीय प्रतियोगिता में प्रथम आ के पुरस्कृत भी हो चुकल रहे। एतना विषयान्तर

www.bhojpurisahityangan.com

भइल एह से कि "आरत के पुनि रहे ना चेतू बार-बार कहे आपन हेतू' आ फेर ई भ्रम-निवारणो खातिर कि साहित्य के मामला में हम निरा कोरा पटना ना आइल रहीं।

त पटना में विभिन्न जगह रहत पहिले त हमरा सालेमपुर अहरा में 'अँजोर' के प्रधान संपादक आ उप संपादक क्रमशः पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय आ अविनाश चंद्र विद्यार्थी जी से संपर्क भइल, फेर 'तीन उड़ान में तितिर पकड़ाये' जइसन बड़ भाई जइसन नागेन्द्र प्रसाद सिंह जी से। अखियान के बात वा कि राजधानी पटना में क्लर्की का पाछे हमरा नोकरी में ओहदा से अधिका देखाई देले रहे पढ़ाई में आगे बढ़े के सुयोग, स्थायित्व आ आर्थिक बढ़ोत्तरी। उमिर कम रहे, जानबूझ के छात्रन के लौज में रहलीं, ताकि विद्यार्थी जीवन जिन्दा रहो आ स्वतंत्र रूप से बिहार विश्वविद्यालय से नोकरी करतो स्नातक कइलीं, फेर आगे के पढ़ाई खातिर पटना विश्वविद्यालय के लइकन के संपर्क कके, रमना रोड, पटना-4 के एगो कमरा में रहे लागल रहीं। इहँही से नया टोला के जय दुर्गा प्रेस में आवाजाही शुरू हो गइल।

इहाँ आवत-जात दोगिना लाभ बुझाइल। एक त पढ़ाई-लिखाई के माहौल बनल रहल, दोसर नागेन्द्र जी से बड़ भाई नियन स्नेह आ उचित मार्गदर्शन मिले लागल। साहित्यकारन के निकट संपर्क में आवे के अवसर अलग से भेंटाइल। हमरा काल्ह नियन इयाद बा कि साँझ होते जय दुर्गा प्रेस में भोजपुरी साहित्यकारन के जुटान शुरू हो जाते रहे। कहीं से महेश्वराचार्य आवत बाड़न, त कहीं से भिखारी ठाकुर के कलाकार आ परिवार के सदस्य। यारपुर, पटना से बकुली लेले लंगड़ात रेक्शा से अविनाश चंद्र विद्यार्थी लगभग रोजे उतरस। पाण्डेय कपिल, पाण्डेय सुरेन्द्र आ पी० चन्द्र विनोद त नागेन्द्र जी के संबंधे में पड़त रहस। अइसहीं प्रो० ब्रजकिशोर आ वसंत कुमार के जोड़ी अपना कोचिंग से आ धमके। कृष्णानंद कृष्ण आ पी० चन्द्र विनोद त हमउमिरिया गुने रचना लेके भी क्लासमेट लेखा चरचा करत रहे लोग। ई छोड़ल अधूरा कहाई कि बज्जिका के परमानंद पाण्डेय आ 'अंग माधुरी' के संपादक का रूप में नरेश पाण्डेय 'चकोर' जी के साथे अंगिका के प्रतिनिधित्व भी प्रकाशन का बहाने इहाँ नियमित रूप से होत रहे। ओहू लोग के भोजपुरी के सक्रियता से प्रेरणा मिले। थोड़ा में रचना आ प्रकाशन लेके जय दुर्गा प्रेस लोक भाषाअन के सीमा तक जाये लागल रहे।

दोसरा के रचना सुने, पढ़े आ आपन कहे-सुनावे के स्कोप त इहाँ रहबे कइल, बनारस के 'नागरी प्रचारिणी सभा' मतिन रचना पर आलोचनात्मक बातचीत भी होय। विकास के स्पेस तलासल जाय आ एक-दोसरा के सहयोग से पत्रिका भा पुस्तक प्रकाशन के बेंवत बइठावल जाय। आर्थिक संकट भा समय के अभाव रहलो पर प्रकाशन आ संगठन के इहँही उड़ान मिलल। व्यक्तिगत व्यस्तता का बीचो भोजपुरी भाषा आ साहित्य के विकास के ई पड़ाव आज के विकसित स्थिति देखत ऐतिहासिक महत्व के जमावड़ा कहाई।

हँ, जब 'अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन' के स्थापना हो गइल, पाण्डेय कपिल जी ओकर पहिले संयोजक, फेर महामंत्री हो गइलीं त उनका सरकारी आवास 2, ईस्ट गार्डेन रोड भी कार्यालय का बहाने साहित्यकारन के दोसर अड्डा बन गइल। इहाँ आचार्य महेन्द्र शास्त्री आईं, भैरवनाथ पाण्डेय आ उदीयमान भोजपुरी साहित्यकारन के एगो खास जमात, जेकरा संगठन में पद से प्रतिष्ठा बढ़ावे के ईगो रहे : अब एक से दू जगहा जुटान होखे लागल।

www.bhojpurisahityangan.com

उहाँ संगठन के बैनर तले कवि सम्मेलन भा साहित्यिक गोष्टी के सुतार जादे रहे। धनात्मक बिन्दु ई सामने आइल कि अब दूनो जगहा से पत्रिका निकले लागल। पुस्तक प्रकाशन आरंभ भइल। बाकि ऋणात्मक बिन्दु का रूप में 'हम आगे कि हम आगे' होड़ में गोड़ खिंचउवल के बातो होय लागल। एकरे नतीजा रहल, बाबू रघुवंश नारायण के पटना से 'भोजपुरी' पत्रिका के पुर्नप्रकाशन, शास्त्री सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी आ हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय' के गैर सरकारी 'भोजपुरी अकादमी' बना के क्रमशः अध्यक्ष आ सचिव बनल, अपना गुट के लोगन के कार्यसमिति में राखल आ फेर समानान्तर 'अखिल भारतीय भोजपुरी भाषा सम्मेलन' के बिहार सरकार में पदाधिकारी रहल रास बिहारी पाण्डेय द्वारा गठन।

सुभावतः जहा एक ओर 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' संगठन के चंदा से निकले लागल, कपिल जी आपनो 'उरेह' निकललीं। लेखकन के किताब अपना संगठन के बैनर में छपे लागल उहाँ, जय दुर्गा प्रेस के नागेन्द्र जी भोजपुरी पत्रिका -लोग' निकालली। एह पंक्तियन के लेखक के 'डेग' निकलल। रजनीकांत राकेश के 'डहर' आ पुस्तको के प्रकाशन शुरू हो गइल। हमार 'बिछऊँतिया' (भोजपुरी कहानी संग्रह) आ कृष्णानंद कृष्ण के 2, ईस्ट गार्डिनर से 'आपन देश' एही हिस्सा रोसी के नतीजा रहे। फेर जगन्नाथ जी के संपादन में प्रतिनिधि गजल संग्रह निकलल। विद्यार्थी जी के 'कौशिकायन' प्रबंधन काव्य आ अन्यान्य। तब भोजपुरी के वातावरण अइसन रहे कि जय दुर्गा प्रेस के छत पर 'बिछउँतिया' के विमोचन हिन्दी उपन्यास के नामी समीक्षक के हाथे भइल। इलाहाबाद से आके हिमांशु रंजन भूमिका लिखलन आ विद्यार्थी जी के 'कौशिकायन' भैरवनाथ पाण्डेय जबानी सुनावत फिरस।

ई जय दुर्गा प्रेस ह जहाँ नागेन्द्र जी के सौजन्य से भिखारी ठाकुर के बँचल कलाकारन के बोला के जवानी संवाद नोट करे के काम भइल आ संपूर्ण नाटकन के दू भाग भिखारी ठाकुर ग्रंथावली का नाम से भिखारी ठाकुर आश्रम से प्रकाशन भइल। एकरे विस्तृत रूप ह बिहार राष्ट्रभाषा परिषद से प्रकाशित 'भिखारी ठाकुर रचनावली।'

कहे के ना होई कि 'हाँके भीम भइले चौगुना' कहावत चरितार्थ करत अबले हम बी० एड० पुस्तकालय विज्ञान में डिप्लोमा, नाटक आ फिल्म मे प्रमाण पत्र लेके एम० ए० (हिन्दी) के इम्तहान नागेन्द्र जी के बड़ बहिन के सरकारी क्वाटर में बोधगया लगभग एक महीना रह के बढ़िया नम्बर से ना खाली पास कइलीं, बलुक हमार चयन सरकारी आयोग से हाईस्कूल में हिन्दी शिक्षक खातिर एस० पी० एस० सेमिनरी, सोनपुर में हो गइल। उहाँ से सीवान के डिग्री कॉलेज में व्याख्याता रूप में।

पटना छोड़ल मजबूरी रहे, बाकि शेफाली अपार्टमेंट तक उनका इहाँ आवागमन बनल रहे। अबले भिखारी ठाकुर के रचना संपादक मण्डल में रहला से आसानी भइल भिखारी ठाकुर पर शोध करे में आ जय दुर्गा प्रेस अपना अंतिम कालो में हमरा काम के अड्डा बनल। रोज लिखीं, साँझ के नागेन्द्र जी से डिस्कशन होखे। फाइनल चैप्टर उनके कवनो परिचित अनुभवी टाइपिस्ट के हवाले कर दिआय। चरम ई कि 1988 में बिहार विश्वविद्यालय से पी० एच० डी० के डिग्री मिले तक उनकर सहयोग मिलत रहल।

एह साहित्यकार संपर्क में उनको (नागेन्द्र जी के) भीतर के सुतल लेखक अंगड़ाई लेलक। एकरा पहिले उनका कलम से कुछ हिन्दी कविता अभिधात्मक भाव लेले लिखा चुकल रहे। शिक्षा पर कवनो किताव छपलो रहल। अब भोजपुरी

(शेष पृष्ठ 29 पर)

www.bhojpurisahityangan.com

यादन के परिधि में : भाई नागेन्द्र प्रसाद सिंह

❑ हरेराम त्रिपाठी 'चेतन'

संवेदनशील संस्मृति दिवंगत स्वजन आ मित्र के व्यक्तित्व अवरू कृतित्व के ओकरा समूचापन में - ओकरा सोगहगपन में सहेज सँगोरि के राखेले। ऊ स्वजन भा मित्र के नजदीक से गुजरत वर्तमान में अतीत के प्राण-प्रतिष्ठा करेले। भावना आ संवेग से भरपूर यादन में स्मृति-शेष के व्यक्तित्व के सीधा-तिरछा लकीरन में अनदेखल उदात्त दृश्य आ सर्जना के चकित करेवाली कई-कई गो रेखाचित्र, कई-कई गो रंग-संयोजन के मोहक रूप उजागर हो जाला। अतने ना स्वजन आभा मित्र के इयाद के गलियारा आ चरित्र के ओसारा से खून के आ परसीना के गमको अपना ओर बरबस चुम्मक जइसन खींचेला। अइसने यादगारी के एगो छोट-मोट गठरी के साथ कसमसात बाकिर भरपूर जीवन जिए वाला डॉ० नागेन्द्र प्रसाद सिंह के बा।

मध्यम कद काठी, सिर के बाल औसत से कुछ जादा मोट, लिलार पर बौद्धिकता के चमक आ छोट-छोट सघन पपनी के फाँक से झाँकत सूक्ष्मवेदी आँख, एगो आँख खराब आ दूरका में बहुते मद्धिम रोशनी। दम साधिके बढ़त आनुपातिक पैर जवना में वेग आ दूरी के लय बनल रहेला, मोटा-मोटी डॉ० नागेन्द्र प्रसाद सिंह के रूपगत पहचान मानल जा सकत बा। बाकिर उनुकर असल पहचान त कीमती कृति बाड़ी स - जवना से प्रतिभा के जुड़ाव भोजपुरी लोक-मानस से आ भोजपुरी भाषा के फाँड़ भरे के जिजीविषा के पता चलेला। अपना पेशा आ प्रवृत्ति के उलुटा शुरूआती दौर में मुद्रण आ प्रकाशन जइसन जोखिम भरल व्यवसाय के चुनाव दुंस्साहस के काम रहे बाकिर बुझाला कि जोखिमो डॉ० नागेन्द्र प्रसाद सिंह जइसन श्रम-सिंह के खोज करत रहेला। डॉ० नागेन्द्र सिंह 'स्वयमेव मृगेन्द्रता' के सिद्ध मंत्र के कसिके गाँठ बान्हि लेले रहन। उनुकर 'जय दुर्गा प्रेस' ना जाने कतना-कतना हिन्दी आ भोजपुरी के किताबन के छापि के उजागर कइलस तथा कतने नामी-गिरामी आ नवसिखुआ रचनाकार लोग के पसरे के अवसर प्रदान कइलसि।

जीवन आ साहित्य के अन्दरूनी क्रियाकलाप लगातार चलत रहेला। जीवन एगो घटना हउवे आ घटनन के जरूरी घटको हऽ। जीवन के मनुष्यता से बतकही होला आ ओकर गूँज छणन में घुलि मिल जाला। छगन में सींझत-पाकत ऊ गूँज पहर, पक्ष, मास के राहे समय के सीमाहीन आयाम में आलोपित होके आ अधिक असरदार बनिके मनुष्य के यादन में - यादन के रूप में परगट हो जाले। इहे क्रिया कवनो रचनाकार के कई-कई गो विषय के इलाका में ले जाके रचना करावेले जवन मील के पत्थर साबित हो जाला। एही सूरत में कवि/लेखक भा आलोचक के अन्तःवृत्त विषय के अनेकरूपता के - विविधता के 'एपीटोम' बनि जाला। डॉ० नागेन्द्र प्रसाद सिंह के सृजनधर्मी चेतना निरंतरता आ विविधता के सिरिजना के सूत्र में उद्देश्य के पुख्तगी कथन के टोन के बहुरंगी बिम्ब निहरले बिया। नतीजा के रूप में 'बाल हिन्दी व्याकरण', सन् 1962, 'हिन्दी शिक्षा साहित्य', सन् 1963 में, भोजपुरी में शोधपूर्ण निबंध 'नवरंग', सन् 1978 में आ भोजपुरी में ऐतिहासिक 'प्रतिनिधि गजल संग्रह', सन् 1978 में आइल। अतने तक एह सृजन-यात्रा के विराम ना भइल बलुक 'भिखारी ठाकुर ग्रंथावली' भाग-एक आ 'भिखारी ठाकुर ग्रन्थावली', भाग-दो के सह-संपादन में अपना संपादन कला के जियतार अंश जोड़िके 'कुशल संपादक' के मुहावरा बनि गइले। एगो संपादक

www.bhojpurisahityangan.com

के लोक-संवेदना के भूँइ कतना उपजाऊ हो सकेले एह बात के नजीर बा 'भिखारी ठाकुर ग्रंथावली' के दूनो भाग डॉ० नागेन्द्र प्रसाद सिंह के संपादकीय आ आलोचकीय दृष्टि के पसार आ जनपदीय चेतना के दयार के फैलाव तथा एगो बरियार समीक्षक साक्षात्कार मास्टर अजीज के रचना संग्रह सिलसिला में भइल। ई साफ-साफ लउकल कि डॉ० नागेन्द्र प्रसाद सिंह के संपादन-कला में मनुष्य के जिनिगी के मूल्यांकन करे में आ संपादकीय संवेदना के छतरी तानिके छाँह पहुँचावे के पुरकस दम बा। डॉ० नागेन्द्र प्रसाद सिंह के तरलाधरी कलम संपादने कला में आपन बधार कायम ना कइलसि बलुक ऊ गजल के लहलहात फसल भी उपजवलसि। सन् 2000 में इहाँ के लिखल गजल संग्रह 'सुर ना सधे', सामने आइल जवन अपना मादक गुदगुदी से गजल के शौकीन पढ़निहारन के चित्त के आपन शिकार बनवलसि। एह गजलन के 'गुप्तगू' के गमगमाहट रसिकन के अन्दरूनी हिस्सा में घुसि के सपना के उकसवलसि। धूप, जाड़, अन्हार, अँजोर, नेह-नाता के परस्पर उझलवलसि आ जिनगी में खुशबूदार जिजीविषा मीठ-मीठ इशारा कके अमन राग के मूर्च्छा तक पहुँचावे में सफल भइल।

सन् 1964 से 1966 तक हम पटना, कदमकुआँ के नाला रोड में, मजिस्ट्रेट लाला रामेश्वर प्रसाद के मकान में किरायादार बनि के रहीं। सिन्हा लाइब्रेरी आ राष्ट्रभाषा परिषद में नियमित रूप से आना-जाना रहे। ओह घरी पटना के साहित्यिक वातावरण प्रेरणादायी रहे। प्रायः हरेन्द्र नारायण जइसन कवि लोग से, गीतकार लोग से आ बड़-बड़ साहित्यकारन से सोहन महतो, बेनीपुरी जी, राधिकारमण जी, रामदयाल पाण्डेय जी आ सचिवालय में कार्यरत गीतकार रामनरेश पाठक आदि से मिले-जुले सुजोग रहे। राम नरेश पाठक जी के सँगे कई बेर जय दुर्गा प्रेस में बइठि के चाय के चुस्की लेनी - भाई नागेन्द्र प्रसाद जी कर्मठता, संघर्ष आँखि से देखनी। राष्ट्रभाषा परिषद में प्रायः भेंट हो जात रहे। अंगिका यशस्वी कवि चकोर जी के पुस्तक लोकार्पण में हमहूँ आमंत्रित रहीं। बड़ा वजनदार लोग जुटल रहे। डॉ० निरंजन सूरिदेव से दण्ड प्रणाम - कुशल क्षेम के बाद हम डॉ० मिथिलेश्वरी तिवारी से बातचीत करत रहीं, तले श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह जी अइले - बहुत अस्त-व्यस्त हालत में। पता चलल कि नालंदा से सीधे चलि आइल रहन - थाकि के चूर-चूर। अपने पैर प खड़ा व्यक्तित्व - अपना से बाहर आ अपना भीतर कवनो सवाल के जवाब खोजत भाई नागेन्द्र प्रसाद सिंह, अरू बाहरो कवनो समस्या के समाधान तलासत भाई नागेन्द्र प्रसाद सिंह। सँगे-सँगे भोजपुरिया समाज के जीवन मूल्यन खातिर समर्पित डॉ० नागेन्द्र प्रसाद सिंह आ भोजपुरी साहित्य के इतिहास के परंपरा के बीया बोलेवाला डॉ० नागेन्द्र प्रसाद सिंह के हम सदई देखत आइल बानी।

वर्ष 2005 के ऊ भेंट, बतकही कबो भुला ना सकी। 'जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद्' आपन स्वर्ण जयंती (पचासवाँ वर्ष) मनवले रहे। भोजपुरी के पाँच विद्वानन के सम्मानित करे के निर्णय रहे परिषद के जवना में डॉ० नन्द किशोर तिवारी (सासाराम), डॉ० ब्रजभूषण मिश्र (नोएडा), हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' (राँची), श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह (पटना) आ डॉ० रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' के सम्मानित करे के योजना बनल रहे। समय पर सभे जुटल रहे। एके कोठरी में हम डॉ० नन्द किशोर तिवारी, डॉ० ब्रजभूषण मिश्र आ श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह के रहे के व्यवस्था रहे। समारोह शानदार रहल। तत्कालीन विधायक सरयू राय के द्वार सभ केहू के सम्मान पत्र, शॉल आ नगद सम्मान राशि प्रदान कइल गइल रहे।

(शेष पृष्ठ 29 पर)

www.bhojpurisahityangan.com

रउवा 'नागेन्द्र' के कहाँ चिन्हलीं !

❑ भगवती प्रसाद द्विवेदी

पछिलकी बीसवीं सदी के आठवाँ दशक। ओह दशक में भोजपुरी के कई गो इतिहास रचेवाला काम भइलन स। सन् 1973 में भोजपुरी भाषा, साहित्य, संस्कृति के बढ़न्ती खातिर अखिल भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के स्थापना भइल आ ओकरे अगुवाई में भोजपुरिया भाई-बहिन के जद्दोजहद के बदउलत सउँसे देश में सभसे पहिले बिहार सरकार पटना में भोजपुरी अकादमी के गठन कइलस। ओह घरी रेडियो के पइसार नगर-महानगर से लेकर सुदूर गाँवन ले रहे आ 'तसलवा तोर कि मोर' के मार्फत शोहरत के बुलन्दी के छूवेवाला भोजपुरी धारावाहिक कार्यक्रम 'आरती' के शुरूआत भइल आ गँवई खेतिहर किसानन खातिर चलेवाला कार्यक्रम 'चौपाल' अतना लोकप्रिय हो गइल कि ओमें भोजपुरी प्रस्तोता बुद्धन भाई के चरित्र लोकामानस में रचि-बसि गइल। भोजपुरी अकादमी के सुचारू रूप से चलावे खातिर जब शोध-सहायक के बहाली होत रहे त चयन प्रक्रिया में दूगो नाँव चरचा में रहलन स - बलिया से डॉ० अशोक द्विवेदी के आ पटना से नागेन्द्र प्रसाद सिंह के। बाकिर अकादमी अंतिम रूप से नागेन्द्र जी के चुनले रहे। ओह समय में कई गो धाकड़ साहित्यकार भोजपुरी अकादमी में सेवारत रहलन। 'बिहार की नदियाँ' के नामी-गिरामी लेखक हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय' जी जहवाँ अकादमी के निदेशक रहनीं, उहँवे भैरवनाथ पाण्डेय, नागेन्द्र प्रसाद सिंह, कर्मेन्दु शिशिर, ब्रजकिशोर दूबे जइसन साहित्यकार अकादमी के विक्रमशीलता में चार चान लगावत रहलन। बाद में भैरव जी उहाँ से हटि गइल रहनीं आ उहाँ का जगहा पर अविनाश चन्द्र विद्यार्थी जी के तैनाती भइल रहे, जेकर 'कौशिकायन' आउर 'सेवकायन' चरचा में रहलन स।

भोजपुरी अकादमी, निदेशक सहृदय जी के संपादन में 'भोजपुरी अकादमी पत्रिका' के शुरूआत कइले रहे। पत्रिका चर्चित भइल रहे बाकिर 'भोजपुरी मेघदूत' के रचयिता सहृदय जी के भाषा-नीति से किछु लोग सहमत ना रहे। सहृदय जी खाँटी भोजपुरी के हिमायती रहनीं आ पत्रिका में छपेवाली रचनन में उहाँ के ओही हिसाब से संशोधन क देत रहनीं। नागेन्द्र जी आधुनिक भावबोध-भाषा में विश्वास राखत रहनीं, बाकिर संपादक जी के नीति का आगा केहू के किछु चलि ना पावत रहे। जब किछु लेखक लोग आपत्ति जाहिर करत चिट्ठी लिखलन त ममिला कार्यसमिति के बइठक में उठावल गइल। स्वाभिमानी सहृदय जी हाथ खड़ा कऽ दिहनीं तब आचार्य विश्वनाथ सिंह के पत्रिका के संपादन के जिम्मा सउँपल गइल आ उहाँ के संपादकत्व में प्रकाशित अंक स्तरीयता आउर उत्कृष्टता के लिहाज से मील के पाथर साबित भइलन स। ऊ काल अकादमी आ अकादमी पत्रिका खातिर सोनहुला समय रहे।

'भोजपुरी अकादमी पत्रिका' ओह घरी पटना के नया टोला महल्ला में अवस्थित सर्वश्री जय दुर्गा प्रेस में छपत रहे। नागेन्द्र प्रसाद सिंह जी ऊ छापाखाना चलावत रहनीं आ ओही से लागल उहाँ के आवासो रहे। कॉलेज के प्राचार्यत्व से समय निकालि के आचार्य विश्वनाथ जी गया से सोझे प्रेसे में आईं आ प्रूफ-संशोधन के काम शुरू कऽ दीं। अपना संपादकीय विवेक से जब उहाँ के संशोधन करीं त रचना में चार चान लागि जात रहे। साहित्यिक विमर्श में आचार्य जी अपना अकाट्य तर्क आ हाजिरजवाबी से सभके अभिभूत कऽ देत रहलीं।

ओह घरी नागेन्द्र जी के आवास आ जय

www.bhojpurisahityangan.com

दुर्गा प्रेस साहित्य के एगो केन्द्र का रूप में चर्चित रहे। अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के महिनवारी गोष्टी अकसर उहँवे होत रहे, जवना में भोजपुरी का संगहीं हिन्दी, उर्दू, मैथिली, मगही, अंगिका, बज्जिका के चुनिंदा साहित्यकारन के जमावड़ा होत रहे। सर्वश्री केदारनाथ मिश्र 'प्रभात', पाण्डेय कपिल, अविनाश चन्द्र विद्यार्थी, डॉ० शम्भूशरण, प्रो० ब्रजकिशोर, सत्यनारायण, गोपीवल्लभ सहाय, वसंत कुमार, मृत्युंजय मिश्र 'करुणेश', जगन्नाथ, चकोर जी, विशुद्धानन्द, कृष्णानन्द 'कृष्ण', ब्रजकिशोर दूबे, तैयब हुसैन 'पीड़ित' वगैरह रचनाकार नियमित भा गाहे-बगाहे उहाँ के गोष्ठियन में पहुँचत रहलन आ तमाम विषयन पर खुलि के बहस-मुवाहिस्त होत रहे। उहवाँ के माहौल अतना रचनात्मक होत रहे कि केहू अपना के मेहमान बूझते ना रहे आ सभे परिवार के सदस्य का रूप में चरचा में शामिल होत रहे। उहवाँ सभ केहू के यथोचित नेह-छोह मिलत रहे आ नागेन्द्र जी का संगे आदरणीया भाभिओ जी सभके हालचाल जरूर पूछत रहनी। बेटी लोग त एक गोड़ पर ठाढ़ रहत रहे आ चाह-पानी भा नाश्ता में कवनो कोताही ना बरतल जात रहे। माँझिल बेटी संध्या 'होनहार बिरवा के लह-लह पात' लेखा लरिकाइएँ से अपना प्रतिभा के प्रखरता आ तेजस्विता से सभकर मन मोहि लेत रहली। नवकी पीढ़ी के जरूरी सवाल उन्हुका कविता में असरदार ढंग से उठावल जात रे। ऊ 'ईया' वाली कविता सुनाके सभके अभिभूत क देत रहली। हमरा इयाद परेला, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के रेणुकूट अधिवेशन के एगो घटना। उहाँ एगो सत्र में तीन पीढ़ी के तीन गो रचनाकार के काव्य-पाठ भइल आ ओह कवितन पर डॉ० शम्भू शरण जी के समीक्षात्मक टिप्पणी प्रस्तुत कइल गइल रहे। बाकिर समीक्षक जब संध्या के कविता के तारीफ कइले रहलन, त दोसर एगो कवि आग बबूला होके आलोचके के भला-बुरा कहे लागल रहलन आ बहुत समुझा बुझाके उन्हुका के सम्हारल गइल रहे। आगा चलिके उन्हुका संग्रह दोहमच' पर सम्मेलन के चित्रलेखा पुरस्कार मिलल रहे। नागेन्द्र जी से संध्या के जवन साहित्यिक संस्कार विरासत में भेंटाइल रहे, ओके निरंतर आगा बढ़ावत देखिके उहाँ के आत्मा के दिली सुकून मिलि रहल होई।

नागेन्द्र जी संपादन कला में पूर्णतः दक्ष रहनीं आ एकर सबूत उहाँ के 'भोजपुरी उचार' के संपादन कऽ के देले रहनीं। सर्वश्री जय दुर्गा प्रेस से छपेवाली हिन्दी, भोजपुरी, अंगिका के पत्रिका में उहाँ के जरूरी संशोधनो क देत रहनीं। एही से खाली पत्रिके ना, स्मारिका आ विभिन्न भाषा के किताबन के प्रकाशनो लोग उहँवे से करवावत रहे। उहाँ के प्रकाशन के नाँवो रहे 'लोग प्रकाशन।'

आरा के एगो हमार सँघतिया चन्द्रिका प्रसाद जब हिन्दी के साहित्यिक पत्रिका 'सर्वद्रष्टा' मासिक के प्रकाशन 1983 में हमरे संपादन में शुरू कइलन त हम मुद्रण जय दुर्गा प्रेस से करवावत रहलीं आ नागेन्द्र जी आत्मीय ढंग से समय पर छापि के हर अंक दे देत रहनीं।

नागेन्द्र प्रसाद सिंह जी मूलतः निबन्धकार आ आलोचक रहनीं। साम्यवादी विचारधारा में उहाँ के गहिर आस्था रहे। 'नवरंग' आ 'सोच-विचार' उहाँ के आलोचनात्मक निबन्धन के एकल संग्रह रहे, जवना पर केन्द्रित समीक्षा वतकही के 'सोच-विचार पर बात-विचार' शीर्षक से प्रकाशित कइल गइल रहे। बिहार राष्ट्रभाषा परिषद के जवना घरी डॉ० वीरेन्द्र नारायण यादव जी निदेशक रहनीं, ओही समय में भिखारी ठाकुर ग्रंथावली के योजना बनल रहे आ ओकरा संपादन के दायित्व निबाहि के नागेन्द्र जी एगो ऐतिहासिक काम कइले रहनीं। ओइसे भिखारी साहित्य के गहिर अध्येता अविनाश चन्द्र विद्यार्थी जी के प्रेरणा से रामदास राही जी लोक कलाकार भिखारी

www.bhojpurisahityangan.com

ठाकुर आश्रम, कुतुबपुर से सामग्री जुटवले रहलन आ संपादन में विद्यार्थी जी, नागेन्द्र जी, राही जी, घमंडी राम जी, अगहर भूमिका निबाहत भिखारी ठाकुर रचनावली के दू गो खण्ड छपववले रहलन, बाकिर परिषद् के प्रकाशन से ग्रंथ के स्थायी महत्व मिलल।

हालाँकि नागेन्द्र जी समकालीन कविता (मुक्तछंद) के हिमायती रहनीं, बाकिर गजल आ शेरो-शायरी में उहाँ के मन रमत रहे। एह तथ्य के खुलासा तब भइल, जब जगन्नाथ जी आ नागेन्द्र जी के संपादन में 'भोजपुरी के प्रतिनिधि गजल' शीर्षक संकलित पुस्तिका प्रकाशित भइल। आगा चलि के उहाँ के गजल संग्रह 'सुर ना सधे' कविवर जगन्नाथ जी के सलाहियत से छपि के आइल आ नागेन्द्र जी के बतौर गजलगो चौतरफा मान-सम्मान मिलल।

नामी गजलगो जगन्नाथ जी का ओर से एगो प्रस्ताव आइल कि उहाँ के आ हम - दूनो आदिमी मिलि के भोजपुरी गजल के एगो साझा संकलन तइयार करीं जा। फेरु त भोजपुरी के सोरह गो चुनिंदा गजलकारन के 151 गजलन के संकलन 'समय के राग' शीर्षक से 2003 में भोजपुरी साहित्य प्रतिष्ठान, पटना से प्रकाशित भइल, जवना में नागेन्द्र प्रसाद सिंह जी के दस गो गजल शामिल रहली स। संकलन के भूमिका के बहाने हमारा एगो आलेख 'समकालीन भोजपुरी गजलन के साझा राग : धुआँत आँच में लोराइल सूरत' शीर्षक से लिखे के मोका मिलल रहे। नागेन्द्र जी के गजलन के बावत हम लिखले रहलीं - 'समालोचक नागेन्द्र प्रसाद सिंह के गजलन के एकल संग्रह 'सुर ना सधे' पढ़निहार के दिशा बोध करावे के दिसाई सोच-विचार करे खातिर उदवेगत रहल बा। नागेन्द्र जी के दसो गजल में लमहर उमिर गुजरला का बाद एगो पोढ़ आ थिर मन के सोच के बेवाक अभिव्यक्ति बा। तिल-तिल टूटत आ बेरि-बेरि मूअत आदमी के करुणा आउर थाकल-सरल जिनिगी के उदास बेचैनी एह गजलन के दोसर गजलन से बिलगावत बिया। 'आह से उपजल गान' मतिन रचनाइल ई गजल पतझार सहे के आ हवा गरम हो गइला पर इहाँ से कतो अलोता जाए के सीख देत बिया। कवि उमिर के गहिरात साँझ में प्रान के दीप जरावे आ खुद के पहिचान भुलावे के हिमायती बा। ऊ शोख नजरन के शिकाइत के ना, बलुक उमिर का लिहाज से कुछ रियायत के आकांक्षी बा। ढेर जानो-पहिचान के बाद आज आदमी एक-दोसरा से कइसे अपरिचित बा, एकर खुलासा करत बा मक्ता के ई शेर -

रउवा 'नागेन्द्र' के कहाँ चिन्हलीं
भेंट मुलाकात अबहीं बाकी बा।

बंजर में नेह के बिरवा गोड़त गजलगो अपना रचना के सकारात्मक दिशा में ले जात बा -

साँझ गहरात उमिर के जाता
प्रान के दीप जरावत बानी।

मउवत से जूझे के सनेस देत नागेन्द्र जी ताजिनिगी जीवट आ जद्दोजहद के पर्याय बनल रहनीं। उहाँ के व्यक्तित्व-कृतित्व के अतना आयाम रहे कि उहाँ के ई कहनाम सोरहो आना साँच रहे - रउवा 'नागेन्द्र' के कहाँ चिन्हलीं। असली चिन्हासी त सृजन के मूल्यांकन से संभव बा। उहाँ के स्मृति से हमार प्रणामांजलि।

शकुंतला भवन,
सीताशरण लेन, मीठापुर,
पटना – 800001 (बिहार)
मो० : 9304693031

◆

www.bhojpurisahityangan.com

नागेन्द्र जी : स्मृति शेष

❑ राम लोचन सिंह

मेरे द्वारा लिखित यह संस्मरण एक दुखी हृदय का संस्मरण है जिसमें नागेन्द्र जी से सम्बन्धित भूतकाल की मेरी सारी स्मृतियाँ, मेरे मानस पटल पर अंकित हो, मुझे वेदनाग्रस्त बना रही है। इस कल्पना मात्र से कि अब नागेन्द्र जी के साथ कभी भी व्यक्तिगत, सामाजिक, राजनीतिक और देश की आर्थिक समस्याओं पर वैचारिक आदान-प्रदान का मौका नहीं मिलेगा - क्योंकि नागेन्द्र जी अब नहीं रहे, उनकी मृत्यु हो गई।

यों तो जीवन धारण करना और जीवन का अंत हो जाना एक ऐसी वस्तुनिष्ठ प्रक्रिया है जिससे उस प्रत्येक वस्तु को गुजरना है जो इस धरती पर है - जिसके सम्बन्ध में ऐंजिल्स ने लिखा है "महान सूरज से लेकर छोटे से बालू के कण तक हमेशा देह धारण करते रहते हैं और देह विहीन होते रहते हैं। जीवन के प्रति इस संकल्पना का अपवाद नहीं है, फिर भी, कुछ देहधारी ऐसे हैं जिनका वस्तुगत रूप में देह विहीन हो जाने के बाद भी उनकी समृतियाँ लोगों के बीच विद्यमान रहती हैं, क्योंकि उन्होंने कुछ ऐसा किया जो समाज और देश के लिए अविस्मरणीय होता है। नागेन्द्र जी इसी अवस्मिरणीय मनुष्यों की श्रृंखला की एक मजबूत कड़ी थे जिन्हें याद किया जाता रहेगा।

नागेन्द्र जी का जन्म 7 अप्रैल, 1937 को उस काल के बिहार के सारण जिला के शीतलपुर गाँव, पो० बरेजा में एक मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ था। इनका परिवार शिक्षा और शिक्षण संस्थाओं से शुरू से ही सम्बद्ध था जिसका पर्याप्त असर नागेन्द्र जी के बाल्यकाल को प्रभावित किया और इन्होंने पटना विश्वविद्यालय से एम० ए० (हिन्दी) करने के बाद एम० एड० तक पढ़ाई पूरी की। नागेन्द्र जी के जीवन पर उनके ग्रामीण वातावरण का जो स्वरूप था, ग्रामीण वातावरण की वस्तुनिष्ट स्थितियों ने इनके जीवन को जिस तरह से प्रभावित किया उसमें इन्होंने शिक्षा और राजनीति के अन्तरसम्बन्धों को गहराई तक देखा और यह एहसास किया कि वर्गीय समाज में राजसत्ता का जो चरित्र होता है उसमें उत्पादन के सम्बन्ध का स्वरूप समाज और राष्ट्र की सारी बाहरी संरचनाओं को अपने वर्गीय हित के अनुरूप खड़ी करती है। भारत पर ब्रिटिश औपनिवेशिक शासकों ने भारत की स्थानीय बाह्य सरंचनाओं के उपर अंग्रेजी शिक्षा पद्धति को जबरन लाद दिया है और भारतीय शिक्षा, कला आदि को ऐसा कुंठित कर दिया है कि लोग गुलामी को शाश्वत सत्य मान बैठे हैं। नागेन्द्र जी ने भाषा के संघर्ष को आजादी के संघर्ष के साथ जोड़ा। अपनी भोजपुरी भाषा के उत्थान और तरक्की को आजादी के संघर्ष में ब्रिटिश शिक्षा के अंग्रेजियत और आजादी के बाद उच्च मध्यवर्गीय तबके की अंग्रेजी और संस्कृटाइज्ड हिन्दी की दुरूहता से आजाद कराने के लिए भोजपुरी भाषा को प्रतिष्ठित कराने के संघर्ष में लग गए। क्योंकि उनकी स्पष्ट समझ थी कि स्थानीय भाषाओं के विकास के बिना उन बहुसंख्यक आबादी की सत्ता में हिस्सेदारी नहीं हो सकती जिनकी भाषाओं को उपेक्षित किया जा रहा है। इस सैद्धान्तिक सवाल पर नागेन्द्र जी आजीवन संघर्ष करते रहे और एततजनित उपलब्धियाँ भी हासिल की।

नागेन्द्र जी में व्याप्त इन गुणों का कारण उनका दार्शनिक चिन्तन था जो मार्क्सवादी चिन्तन था - जो विश्व पर्यघटनाओं को भौतिक रूप में देखने और सबों की सम्बद्धता के रूप में शामिल

www.bhojpurisahityangan.com

कर देखने का वैज्ञानिक दृष्टिकोण था - कोई भी वस्तु अन्यों से असम्बद्ध नहीं है और स्वतंत्र नहीं है। नागेन्द्र जी मार्क्सवाद को सिर्फ एक दर्शन ही नहीं मानते थे,उनकी स्पष्ट समझ थी कि किसी भी दर्शन का कोई अर्थ नहीं है जब तक उसका आर्थिक राजनीति रूपान्तरण करने वाला राजनीति संगठन नहीं है। मार्क्सवाद के व्यवहारिक रूपान्तरण के लिए एक राजनीतिक संगठन को स्वीकार करते हुए नागेन्द्र जी भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी को उपयुक्त राजनीतिक संगठन मानते थे, इस कारण वे कम्युनिष्ट पार्टी के सदस्य रहे। दल-बदल को उन्होंने एक घृणित राजनीति, राजनीतिक वेश्यावृति, व्यक्तिगत सम्पति अर्जित करने और सामाजिक सम्पति की डकैती आदि के रूप देखा और इनके प्रति घृणा का भाव रखा।

कम्युनिष्ट पार्टी के सदस्य के रूप में भी वे अपने को उन वर्गों के संघर्षों से जोड़ा जिनपर सत्ता के बादल कभी द्रवित नहीं होते, जो ऊँची इमारतों को तो खड़ा करते हैं मगर जिनको अपने लिए झोपड़ी भी नसीब नहीं है। ऐसे जन आवाम के संघर्षों से अपने को जोड़ा जो झोपड़ी निवासी है, फुटपाथों पर ही जाड़े की रात भी गुजारते हैं, रिक्शा, ठेला चलाते हैं, प्रेसों में काम करने वाले मजदूर, निर्माण मजदूर, होटल कर्मचारी आदि हैं, जिनके संघर्षों में नागेन्द्र जी जेल जाते रहे। कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य के रूप में आलोचना और आत्म आलोचना के प्रति उनकी प्रतिवद्धता ऐसी थी कि वे व्यक्तिगत जीवन में भी अपनी ओलाचना करने वाले से उलझते नहीं थे, सुचिंतित जवाब देते थे और अगर आलोचक उनकी नजर में सही आलोचना कर रहा हो तो उसे वे सहर्ष स्वीकार कर अपने को बदलने की कोशिश करते थे।

नागेन्द्र जी भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी में उस काल में आए जब मैं स्वयं भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की पटना शहर कमिटी का मंत्री था, पार्टी की काजीपुर शाखा में उनकी सदस्यता को रखते हुए उन्हें प्रेस कर्मचारियों के संगठन में काम करने का जिम्मा दिया गया, क्योंकि नागेन्द्र जी नया टोला में अपना एक प्रेस 'जयदुर्गा प्रेस' चलाते थे, जहाँ छपाई मशीन के नाम पर मात्र एक ट्रेडिल मशीन थी। पार्टी साहित्य, नोटिश, परचा आदि को सस्ते में छापने का जिम्मा नागेन्द्र जी उठाते रहे। मेरे द्वारा लिखित एक छोटी पुस्तिका ''द रियल कल्प्रीट'' (The Real Culprit) (अंग्रेजी) जो नक्षत्र युद्ध पर थी, नागेन्द्र जी ने ही अपने जय दुर्गा प्रेस के ट्रेडिल पर छापा था। प्रेस मजदूरों और अति छोटे प्रेसों की दिक्कतों के खिलाफ संघर्ष को आगे बढ़ाते हुए नागेन्द्र जी उनके संगठन के पदाधिकारी के रूप में काम किए। मैं बहुत दिनों तक भारतीय कम्युनिष्ट पार्टी की पटना नगर कमिटी का मंत्री रहा और साथियों के सहयोग से जिस सामूहिक नेतृत्व का विकास कराया उस सामूहिक नेतृत्व के एक महत्वपूर्ण नेता के रूप में नागेन्द्र जी का विकास हुआ, काजीपुर पार्टी शाखा के मंत्री के रूप में उन्होंने पार्टी की शाखा को संचालित करने से लेकर पटना नगर कमिटी के सदस्य, नगर कमिटी की कार्य समिति के सदस्य के रूप में काम करते रहे। जब पटना शहर की पार्टी का विकास काफी हो गया और पार्टी के अन्दर, पटना शहर कमिटी, को एक जिला के रूप में मान्यता दी गई तब नागेन्द्र जी उस पार्टी जिला इकाई के सदस्य के रूप में चुने गए और बाद में उसकी कार्य समिति के सदस्य भी बने।

नागेन्द्र जी पार्टी शिक्षा के मोर्चे के एक अग्रणी नेता थे, जो शाखाओं से लेकर जिला परिषद के द्वारा गठित किए जाने वाले शिक्षा शिविरों में एक अध्यापक के रूप में प्रायः लगे रहते थे। मार्क्सवाद, पार्टी संगठन विहार या सम्पूर्ण देश की राजनीतिक स्थिति हो या कोई महत्वपूर्ण वैश्विक परिघटना आदि विषयों पर

www.bhojpurisahityangan.com

कम पढ़े-लिखे या अशिक्षित पार्टी सदस्यों को उनकी समझ के अनुकूल भाषा में उन्हें वस्तुस्थिति को रखने की अपूर्व क्षमता थी। कभी-कभी किसी दुरूह राजनीतिक प्रश्न पर अगर उनकी समझ कुछ कमजोर भी रहती थी तो वे अन्य प्रबुद्ध साथियों से विचार-विमर्श कर अपनी कमजोरी को दूर कर लेते थे और यह स्वीकार कर लिया करते थे कि वे इसे नहीं समझ पाये थे। मात्र एक घटना ही उनकी इसे कम्युनिस्ट आचरण की उनकी खूबी को दर्शाने के लिए काफी है- घटना है अटल बिहारी वाजपेयी के शासन काल में भारत द्वारा दूसरे आण्विक परीक्षण (पोखरन टेस्ट-2) की। इस समाचार से नागेन्द्र जी की पहली समझ बनी थी कि भारत ने इस परीक्षण को करके कमाल कर दिया।" उसी रोज जब मेरी उनसे मुलाकात हुई तो नागेन्द्र जी ने अपने इसी उद्‌गार को कि "भारत ने कमाल कर दिया" को रखा। इसके बाद मेरे मुख से अचानक निकल गया कि देशहित में यह बड़ा ही बुरा हुआ। हम दोनों की समझ इस प्रश्न पर एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न थी। मेरी प्रतिक्रिया पर उनके चेहरे का भाव रोषपूर्ण था । इस कारण मैं ने इस पर कोई बहस उनसे नहीं किया।

मगर इस घटना पर जब देशव्यापी प्रतिक्रिया में इसे देश हित के खिलाफ कह कर आलोचनाएँ की जाने लगी तब मैं पुनः नागेन्द्र जी से मिला। मुझसे मिलते ही नागेन्द्र जी ने एक हल्के मुस्कान के साथ कहा "कल आपने ठीक कहा था, इतनी दूर तक और इतने परिप्रेक्ष्यों में मैंने नहीं सोचा था" इसके बाद हम दोनों ने इस परीक्षण के परिणामों और इसके पूर्व इन्दिरा गाँधी द्वारा कराये गए प्रथम परीक्षण के यथार्थों में क्या फर्क था इस पर बातें कीं। इस घटना का अर्थ यह नहीं कि नागेन्द्र जी की समझ कमजोर थी, बल्कि इसका मतलब है कि नागेन्द्र जी इस कम्युनिस्ट नैतिकता से परिपूर्ण थे जो अपनी बातों को बहसों में रखने की और अगर तर्क त्रुटिपूर्ण है तो उसे स्वीकार करने और अपनी कमजोरी को दूर करने की कोशिश करने ही क्षमता को बढ़ाने का होता है।

भाषा के मामले में भोजपुरी भाषा के प्रति नागेन्द्र जी की प्रतिवद्धता बड़ी ही मजबूत थी, मगर इस प्रतिवद्धता में अन्य आंचलिक भाषाओं जैसे - मैथिली, मगही, अवधि, ब्रजभाषा और आदिवासी समाजों में बोली जाने वाली भाषाओं से दुश्मनागत का भाव रंच मात्र भी नहीं था। सारी आंचलिक भाषाओं या लोक भाषाओं के प्रति समान आदर का भाव रखते हुए नागेन्द्र जी भोजपुरी के उत्थान के संघर्ष से जुड़े एक अप्रतिम योद्धा थे। काजीपुर, नया टोला अवस्थित उनका छोटा सा जय दुर्गा प्रेस इस तरह के उद्दात्त आदर्शों के लिए संघर्ष का एक प्रमुख केन्द्र था। यहाँ भोजपुरी के गणमान्य लेखक, कवि, टिप्पणीकार, आलोचक आदि का आना-जाना लगा रहता था। यहाँ हर दूसरे-तीसरे दिन साहित्यिक बैठकें, आयोजन और गोष्ठियाँ होती रहती थी। इनमें सिपाही सिंह 'श्रीमंत', पाण्डेय कपिल, अविनाश चन्द्र विद्यार्थी, प्रभुनाथ सिंह, झड़प जी, ब्रज किशोर जी आदि अनेकों थे। मैं भी प्रायः इन गोष्ठियों में शामिल होता रहता था। इस सामान्य बैठक की जो परम्परा जय दुर्गा प्रेस से शुरू हुई थी उसने कालान्तर में एक बड़े आन्दोलन का रूप ले लिया जिसमें भोजपुरी को विश्वविद्यालयों के सिलेवसों में इस भाषा की पढ़ाई और भोजपुरी अकादमी की स्थापना इसकी उपलब्धता। इस आन्दोलन के एक अग्रणी नेता नागेन्द्र जी थे। आन्दोलन की सफलता स्वरूप भोजपुरी अकादमी की स्थापना भी हुई और डॉ० प्रभुनाथ सिंह और सिपाही सिंह 'श्रीमंत' आदि की अगुआई में भीमराव अम्वेदकर विहार विश्वविद्यालय में भोजपुरी को एक भाषा की स्वीकृति देकर उसकी पढ़ाई का प्रावधान भी किया गया। भोजपुरी अकादमी के गठन के वाद नागेन्द्र जी उसके अनुसंधान पदाधिकारी भी बने।

www.bhojpurisahityangan.com

नागेन्द्र जी के सार्वजनिक कृत्यों का दायरा काफी बड़ा था जिनका दायित्व नागेन्द्र जी आजीवन उठाते रहे - और उस हालत में जब कि इनकी दोनों आंखे खराब थी और बड़ी मुश्किल से लिख-पढ़ सकते थे, बाद में दिखाई देना बिल्कुल ही बंद हो गया। जब तक उन्हें किसी तरह दिखाई देता था तब तक वे स्वाध्याय से साहित्य के अलावा अन्य विषयों का भी अध्ययन कर एक बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति के रूप में अपने को ढाला। कम्युनिस्ट पार्टी की बैठकों, आन्दोलनों में शिरकत करना, जुलूस, प्रदर्शनों में जाना, पुलिस जुल्म का सामना करना, जेल जाना, पार्टी अधिवेशनों में हिस्सा लेने आदि जैसे कार्यों के अलावा विश्व शान्ति आन्दोलन, प्रगतिशील लेखक संघ, मजदूर संगठनों - आदि के कार्यों के अलावा भोजपुरी भाषा के सम्मेलनों (स्थानीय, राज्य स्तरीय और अखिल भारतीय) में भाग लेना, जय दुर्गा प्रेस में छपने वाले साहित्यों का सम्पादन, छपाई आदि के कामों को सम्भालते हुए स्वयं अपनी कुछ रचनाओं को प्रकाशित करना आदि अनेकों काम को करते हुए नागेन्द्र जी का व्यक्तित्व और कृतित्व आगे बढ़ा। इनके कार्यों की स्वीकृति इन्हें मिलने वाले पुरस्कारों और चतुर्दिक फैली पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकों, शोध-प्रबंधों, लेखों आदि से पता चल जाता है जिनकी सूची इस संस्मरण के अन्त में संलग्न है।

आज रूस और उक्रेन की लड़ाई में साम्राज्यवादी शक्तियाँ और उनका सैन्य संगठन नाटो (NATO) (नार्थ एटलांटिक ट्रीटी ऑर्गेनाइजेशन) देशों की सारी शक्तियाँ जनवादी सरकारों के खिलाफ एकजुट होकर रूस को पराजित करने में लगी है। यह नहीं भुलाया जा सकता कि एक समय था जब विश्व शान्ति के लिए नाभिकीय हथियारों को सम्पूर्णता में नष्ट किए जाने, हिन्द महासागर को शान्ति का क्षेत्र घोषित किए जाने के लिए, मुक्ति संघर्षों में किसी अन्य देश की दखलंदाजी के खिलाफ आदि का जो आन्दोलन चल रहा था उसमें भारत की भागीदारी काफी मजबूत थी और इस तरह के आन्दोलनों को वैश्विक पैमाने पर शान्तिकामी जन अवाम चला रही थी। आन्दोलन की उस कड़ी में लाखों जन अवाम की हिस्सेदारी ने द्वितीय विश्व युद्ध के बाद साम्राज्यवादी देशों की नापाक कार्रवाईयों पर अंकुश लगाने में भारत के शान्तिकामी जन समुदाय ने जिस बड़ी भूमिका का निर्वहन किया था उस श्रृंखला की एक कड़ी के रूप में नागेन्द्र जी इन आन्दोलनों में लगे रहे। आज नागेन्द्र जी की कमी विशेष रूप से महसूस हो रही है। ऐसे व्यक्तित्व की ऐतिहासिक भूमिका को लिखने के लिए आज की व्यवस्था को भले दो बूँद स्याही न मिले, फिर भी ऐसा व्यक्ति खुद में अपना स्मारक होता है। नागेन्द्र जी अपने-आप में स्मारक है, सशरीर भले न हो मगर उनकी स्मृतियाँ आज भी पाथेय के रूप में विद्यमान है और रहेगी। ऐसे प्रतिबद्ध कम्युनिस्ट साहित्यकार और संगठनकर्ता के प्रति श्रद्धांजलि है।

गकान नं० : एल 2/64,
पी० आई० टी० कॉलोनी,
लोहिया नगर, पटना, कंकड़बाग
मो० : 9135583400

◆

हमरा जिनगी में भोर ना होई
हमरा करनी के शोर ना होई

लोग बड़ुए अन्हार में डूबल
लाख चाहब अँजोर ना होई

दर्द-दहशत भरल जे जन-मन में
लाख चाहीं अथोर ना होई

आदमी-आदमी से टूट रहल
कता जोड़ीं, संगोर ना होई

रो सकल ना जे हाल पर हमरा
ओकरा आँखिन में लोर ना होई

www.bhojpurisahityangan.com

हमरा के शोध आ आलोचना के राह धरावेवाला स्व० नागेन्द्र प्रसाद सिंह

❑ डॉ० ब्रज भूषण मिश्र

जब हम भोजपुरी में लिखे पढ़े से जुड़नी हमरा नागेन्द्र बाबू के लिखल पढ़े, उहाँ के बारे में सुने - जाने के मौका मिले लागल। आ जब हम अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन से जुड़ के सक्रिय भइनी त सम्मेलन के पटना के टीम के बारे में अउर परिचय मिलल। पटना में पांडेय कपिल जी के एह टीम में प्रो० ब्रजकिशोर, नागेन्द्र प्रसाद सिंह, कृष्णानंद कृष्ण, करुणा निधान केशव प्रमुख रहीं। नागेन्द्र बाबू के नया टोला स्थित आवास आ जयदुर्गा प्रेस भोजपुरी साहित्यकार लोग के अड्डा रहे। कबो कबो पटना गइला पर जाए के मौका मिल जात रहे। बाकिर नागेन्द्र बाबू से हमार विशेष चिन्हा परिची राँची अधिवेशन के बाद बढ़ल। हम सम्मेलन में संगठन मंत्री बन गइल रहीं। हम ओही काल के आस-पास पतरातू से बदल के मुजफ्फरपुर में आ गइल रहीं आ पटना आवे-जाये के हमार फ्रीक्वेंसी बढ़ गइल रहे। सम्मेलन के कार्यसमिति के बइठक में अकसरहाँ भेंट हो जात रहे। 1985-86 ई० के आस-पास हमार पी-एच० डी० निबंधन हो गइल रहे। स्वतंत्र छात्र के रूप में बी० ए० (हिन्दी) क्लीअर करके (काहे कि हम बी० एस-सी० रहीं), एम० ए० हिन्दी कर चुकल रहीं, राँची विश्वविद्यालय से। आ ई सब हमार गाइड आ तब के हिन्दी के विद्वान डॉ० दिनेश्वर प्रसाद जी (राँची विश्वविद्यालय) के प्रेरणा आ पतरातू थरमल के साहित्य मंडली के जोर पर भइल। हम साहित्य के नियमित विद्यार्थी रहीं ना। बदली भइला से राँची बहुत दूर हो गइल। पतरातू रह के हमरा शोध निदेशक से जतना मार्गदर्शन मिल जाइत, ऊ मुजफ्फरपुर से संभव ना रहे। हमरा एगो अइसन मार्गदर्शक के खोज रहे जे भोजपुरी साहित्य के जानकार होखे आ शोध प्रविधियो जानत होखे आ जेकरा से आसानी से संपर्क साधल जा सके। हम बड़ा चिंतित रहीं। समय निकलल जात रहे। केहू अइसन देखाई ना पड़त रहे। हम कई लोग से राय विचार कइनी, बाकिर अइसन वेकती सूझल ना, आ जे सूझल ऊ सहयोग खातिर तैयार ना भइल।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के कार्यसमिति के बइठक सोहाँव, बलिया में 1988-89 में आयोजित रहे आ ओही अवसर पर बलिया जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलनो के आयोजन रहे। बड़ा दमगर आयोजन रहे। एह आयोजन में प्रायः कार्यसमिति आ प्रवर समिति के सब लोग हाजिर रहे। हमार मित्र प्रसिध्द लोक गायक, रंगकर्मी आ गीतकार, कथाकार भाई ब्रज किशोर दूबे एह अवसर पर उहाँ पहुँचल रहीं। कवनो सम्मेलन आ संगोष्ठी में दूबे जी आ हम संगही रहत रहीं। ओतहूँ हमनी संगही रहीं। हम आपन समस्या बतवनी त दूबे जी कहनी कि एक आदमी त वा, आ इहाँ आइलहूँ बा। हमरा पूछला पर उहाँ का नागेन्द्र बाबू के नाम बतवनी आ कहनी कि उहाँ का भोजपुरी साहित्य के बारे में भी पुरहर ज्ञान बा आ शोध प्रविधियो के जानकारी बा। अगर उहाँ के मदद करीं त राउर राह आसान हो जाई। उहें से बात कइल जाव। नागेन्द्र बाबू भोजपुरी अकादमी के अनुसंधान पदाधिकारी रह चुकल रहीं आ ओह समय सहायक निदेशक रहीं। हम कहनी कि रउरा उहाँ से बात कराईं, उहाँ का मदद करब त हमार काम सँसर जाई। भोरे- भोर मुँह धोवाई के बेर चापाकल पर हमनी अरजी लगवनी आ उहाँ का सहजे मदद के तैयार भइनी। दिक्कत

www.bhojpurisahityangan.com

ई रहे कि उहाँ का आपन प्रेस आ प्रकाशनो चलावे के रहे अउर अकादमी के काम रहे। हमरो आपन नौकरी रहे आ मुजफ्फरपुर अउर पटना के बात रहे। तय भइल कि हमरा विभाग से अवकाश ले के पटना में प्रवास करे के पड़ी। हम उहाँ के निर्देशानुसार दिन भर लिखब-पढ़ब आ रात में नागेंद्र बाबू, ओह के पढ़ब-सुनब, आवश्यक सुधार करवाइब अउर अगिला दिन कइसे आगे बढ़े-लिखे के बा हमरा के सबक देब। ई सब करत-धरत कुछ समय अउर निकल गइल। फेर एक दिन पटना गइनी आ दूबे जी के संगे नागेन्द्र बाबू के इहाँ गइनी। नागेन्द्र बाबू कहनी कि इहाँ आसपास में हम कवनो होटल में कमरा बुक करा लीं आ ओतहीं आ के उहाँ के देख लेब, चाहे हम प्रेस में जा के उहाँ से सब देखा लेब। एह पर नागेंद्र बाबू के विदुषी पत्नी शांति देवी कहलीं कि ना मिसिर जी एतहीं रहिहेन आ जब जेकरा जइसन जरूरत होई, एक दोसरा से संपर्क कर ली। घर में जे खाना पीना बनी, ओह में मिसिरो जी खाइब। नागेन्द्र बाबू कहनी की एह से बढ़िया अउर का होई। तारीख निश्चित हो गइल कि कबसे हम रहब। हम अपना विभाग से छुट्टी लेके कि ताबपत्तर सहित जयदुर्गा प्रेस पहुँच गइलीं। आगे प्रेस, ओकरा से लागल आवास। ओही आवास के एगो कोना में एगो छोट कोठरी में हमरा जगह मिल गइल। शोध के प्रारूप त बनलहीं रहे, किताब सब जुटाइये लिहले रहीं। सब सरिया के रखाइल। नागेन्द्र बाबू हमरा के लेके स्टेशनरी दुकान पर गइलीं आ पसंदीदा कागज कलम खरीदवलीं। ओही दिन रात में भोजन के बाद उहाँ का हमरा कमरा में अइनी आ बतवनी कि उहाँ का बताइब कि कइसे आ का लिखे के बा आ जेतना बताइव ओह के हम पूरा करब आ फेर दोसरा दिन हमार लिखल देखब, सुधार के सुझाव देब। तब आगे कइसे बढ़े के बा बताइब। ई सिलसिला शुरु भइल आ धीरे-धीरे राह पकड़ लेलस। ओकरा बाद उहाँ के कम समय देवे के पड़े। हम छुट्टी लेले रहीं, एह से ओही में लागल रहनी। नागेन्द्र बाबू किहाँ पारिवारिक माहौल मिलल। उहाँ के पत्नी अउर बेटी लोग - संध्या आ प्रिया हमार बहुते खेयाल राखल लोग। लगभग बीस-एकइस दिन के अवधि में चार अध्याय के काम निकलल। नागेन्द्र बाबू कहनी कि जा अब बाकी के काम घर से करके ले अइह। ऊ देख लेब, तब आगे का करे के बा बताइव। हम मुजफ्फरपुर लवट अइनी। बकिये सारा लिख-लाख के तैयार कइनी। लगभग एक डेढ़ महीना एह में अउर लागल। जब हम फेर नागेन्द्र बाबू के देखावे गइनी त हमरा फेर उहाँ प्रवास करे के पड़ल। नागेन्द्र बाबू के बतवला अनुसार पूरा शोध प्रबंध के संक्षेपण कर के कसावट क के ले आवे के पड़ल। नागेन्द्र बाबू फेर हमरा से पूरा शोध प्रबंध के वाचन करवइनी, जहाँ-जहाँ उरेब बुझाइल, ओह में बदलाव करावत और दुरुस्त करवनी। तब ओह समय के पटना के शोध प्रबंध के नामी टाइपिस्ट जानकी शरणजी के टाइप करे खातिर दिआइल। टाइपिंग के गलती के सुधार करे के लूर सिखावत हमरा से टंकित चार सौ एकासी पृष्ट फेर से शुद्ध करवा देलीं। नागेन्द्र बाबू के शोध प्रबंध लेखन के तकनीकी जानकारी रहे। नागेन्द्र बाबू ओह ज्ञान के प्रसाद हमरो के वँटली आ हमरा से अउर कई शोधार्थी लोग का ई लाभ मिलल ह। हम नागेन्द्र बाबू आ उनका परिवार के उदारता आ सहयोग के जिनगी भर ना भुला सकीं। शोध प्रबंध के जरिये बनल ई पारिवारिक संबंध उहाँ के अनुपस्थिति में भी बरकरार बा।

हमरा शोध प्रबंध लेखन के बाद आ हमरा पी-एच० डी० उपाधि मिलला के बादो नागेन्द्र बाबू हमरा आगहूँ के लेखन के प्रेरणा स्रोत रहनी। जवना घरी 'भोजपुरी काव्य में अलंकार रस छंद' नामक पुस्तक हम तैयार करत रहीं, ओहू में उहाँ के मार्गदर्शन रहल। फुटकर लेख सब छपे के पहिले हम उहाँ से देखा लेवे के चाहत रहीं।

www.bhojpurisahityangan.com

नालंदा ओपेन यूनिवर्सिटी खातिर जब भोजपुरी में एम० ए के पाठ्यक्रम तैयार होत रहे त, हमहूँ दू गो पाठ्य पुस्तक के लेखक रहीं आ नागेन्द्र बाबू भी लेखक पैनल में शामिल रहीं। अइसहीं राज्य शिक्षा शोध आ प्रशिक्षण परिषद जब भोजपुरी के पाठ्य पुस्तक निर्माण करावत रहे त ओहू सिलसिला में नागेन्द्र बाबू के साथ रहे। इग्नू जब भोजपुरी के फाउन्डेशन कोर्स शुरु कइल त पाठ्यक्रम निर्धारण समिति में नागेन्द्र बाबू रहीं आ हमार नाम लेखक मंडल खातिर सुझवनी। फाउन्डेशन कोर्स से लेके सर्टिफिकेट कोर्स तक के लेखन में उहाँ के साथ रहल। दिल्ली जाना आना, ठहरना सब साथे। लेखन कार्य पर विमर्श। हमार आलोचना आ समीक्षा के किताब 'कसौटी पर भोजपुरी कविता' छपत रहे त उहाँ का ओकर ब्लर्ब राइटिंग कइनी। डा० संध्या सिन्हा आ दिलीप कुमार के संपादन में जब नागेन्द्र बाबू रचना वली जब कई खंड निकलल, त ओह में उहाँ के सारस्वत व्यक्तित्व पर दू आलेख हमरो लिखे के अवसर भेंटाइल। ओकरा पहिलहूँ हम नालन्दा खुला विश्वविद्यालय के एम० ए० (भोजपुरी) पाठ्यक्रम खातिर भोजपुरी आलोचना साहित्य पर जवन पाठ्य-पुस्तक तैयार करे के रहे, ओह में कुछ आलोचक समीक्षक लोग के आलोचना कार्य पर भी लिखे के रहे। एह में नागेन्द्र बाबू भी एगो रहीं, जेकरा आलोचना कार्य पर हमरा लिखे के अवसर मिलल।

जब तक नागेन्द्र बाबू पटना में रहनी, समय-समय पर भेंट-भाँट होत रहल। हम पटना जाईं त बिना भेंट कइले ना आवत रहीं। जब से उहाँ का दिल्ली रहे लगनी तबसे मोबाइल पर बातचीत सहारा रह गइल। हमरा जब कबो कवनो लेखन संबंधी सलाह लेवे के होखे त उहाँ के फोन करत रहीं आ उहाँ का ओही समय मार्ग देखावत रहीं। हम फोन नाहिंयो करीं त उहाँ का नियमित अंतराल पर फोन कर के हालचाल लीं आ पूछीं - का लिखत बाड़S। तोहरा हई लिखे के चाहीं। फुटकर छपल लेखा सब के एकत्र करके पुस्तकाकार छपवावे के, योजनाबद्ध तरीका से काम करे, हम आपन समस्या बताईं त उहाँ का तुरत ओकर निदान सुझावत रहीं। उहाँ के ई अपनापन चाहे गार्जियनशिप प हमरा लेखन तक सीमित ना रहे, बलुक हमरा परिवार के हालचाल आ समस्या तक विस्तारित रहे। हमरा बड़का लड़िका के रोजी-रोजगार आ नियोजन में उहाँ के पारिवारिक सहयोग ना भुलावल जा सके। ई काम नागेन्द्र बाबू के सहयोगे आ निर्देश से ही संभव भइल रहे। बाल बच्चन के शादी बिआह, ओह लोग के हालचाल नागेन्द्र बाबू आ उहाँ के पत्नी बराबर लेत रहलीं। उहाँ के बेटी लोग चंदा, संध्या आ प्रिया से भी हमार उहे पारिवारिक संबंध कायम बा। भोजपुरी एसोशिएशन ऑफ इंडिया के दिल्ली ईकाई आ मैथिली भोजपुरी अकादमी के सहयोग से आप और हम फाउंडेशन 2019 ई० के भोजपुरी साहित्य उत्सव में केहू एक पुरोधा साहित्यकार के सम्मान देवे खातिर हमार सुझाव मँगलस त हम नागेन्द्र बाबू के नाम सुझवनी। हमरा अनुरोध के स्वीकार करत नागेन्द्र बाबू दृष्टि बाधिता के बादो अइनी आ सम्मान स्वीकार करत संस्था के मान बढ़वनी।

हमरा आलोचना कर्म पर भा आलोचक व्यक्तित्व पर नागेन्द्र बाबू के छाप बा, एह बात के तस्दीक भोजपुरी के नामवर विद्वान डॉ० तैयब हुसैन पीड़ित कइले बानी। 'परास' के अंक - 12 (अप्रैल - जून, 2011) में लिखल आलेख - 'भोजपुरी आलोचना के जमीन' में भारतीय सौन्दर्य शास्त्र आ पाश्चात्य सौन्दर्य शास्त्र दूनों के भोजपुरी आलोचना खातिर उपयोग भइल बा ई बतावत उहाँ का लिखत बानी - 'भोजपुरी आलोचना पद्धतियन से काम लेहल गइल। जहाँ महेश्वरा चार्य, आञ्जनेय, डॉ० शम्भु प्रसाद जइसन

(शेष पृष्ठ 34 पर)

www.bhojpurisahityangan.com

नागेन्द्र प्रसाद सिंह के साहित्यिक योगदान

❑ प्रो० जयकान्त सिंह 'जय'

नागेन्द्र प्रसाद सिंह भोजपुरी-हिन्दी के सुचिंतित साहित्यकार के रूप में सुख्यात रहीं। उहाँ से हमार परिचय नव्वे का दशक में सारन जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन आ अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन से जुड़ल सर्वोच्च संगठनकर्ता साहित्यकार के रूप में भइल रहे। जइसे-जइसे हमार सारन जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन आ अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन से जुड़ाव बढ़त गइल, ओइसे-ओइसे नागेन्द्र प्रसाद सिंह जइसन समर्पित भोजपुरी सेवी साहित्यकार, संपादक आ प्रकाशक से साहित्यिक सम्बन्ध प्रगाढ़ होत गइल। अस्सी के दशक से ही बिहार के राजधानी पटना भोजपुरी लेखन, प्रकाशन आ आंदोलन के केन्द्र बन चुकल रहे। अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के कार्यालय पटना में पाण्डेय कपिल जी किहाँ से उहें के संयोजन में खूब बेवस्थित ढ़ंग से चलत रहे। जवना के सफल संचालन में नागेन्द्र प्रसाद सिंह जी, प्रो० ब्रजकिशोर जी, कृष्णानंद कृष्ण जी, करुणा निधान केशव जी, जगन्नाथ जी आदि जइसन भोजपुरी सेवी आ प्रेमी साहित्यकार के लोग के भरपूर सहयोग पाण्डेय कपिल जी के मिलत रहे। सम्मेलन के संचालन में कपिल जी के बाद नागेन्द्र जी के नाम आदर से लिहल जात रहे।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के बारहवाँ अधिवेशन 21-22 मार्च, 1992 के छपरा नधाइल आ हमरा एकरा के सफल बनावे खातिर कई बेर नागेन्द्र जी मिले-बतिआवे के मौका मिलल। तब कवनो विश्वविद्यालय में भोजपुरी से स्नातकोत्तर स्तर का पढ़ाई के बेवस्था ना रहे आ हमरा जइसन बहुते विद्यार्थी लोग भोजपुरी से स्नातक प्रतिष्ठा के डिग्री लेके स्नातकोत्तर करे के चाहत रहलें। हमरे जइसन आउर भोजपुरी में लिखे-पढ़े वाला नवही सभे एह समस्या के लेके हर भोजपुरी सेवी साहित्यकार आ संगठन के नेतृत्व से मिल के एह दिसाईं सरकार से सम्पर्क-संवाद करे के माँग करत रहलें। सम्मेलन का छपरा अधिवेशन के स्थायी समिति का बइठक में हमनीं एह समस्या के जोरदार ढ़ंग से रखनीं। नागेन्द्र जी हम विद्यार्थियन के पक्ष में खड़ा हो गइनीं। पशुपति नाथ सिंह जइसन जुझारू व्यक्तित्व का नेतृत्व में 'भोजपुरी युवा वाहिनी' के गठन हो गइल। सम्मेलन का इतिहास में पहिला बेर 22 मार्च, 1981 के सुवह भोजपुरी के लेके प्रभात फेरी निकलल। नागेन्द्र जी हम विद्यार्थियन के आगे-आगे नारा लगावत रहीं - 'सरकार बिहार के इस्कूलन में भोजपुरी के पढ़ाई प्रारंभ करे, हर विश्वविद्यालय में इंटर से एम तक भोजपुरी के पढ़ाई प्रारंभ करे, बिहार लोक सेवा आयोग भोजपुरी विषय के मान्यता दे, संविधान के आठवीं अनुसूची में भोजपुरी के सम्मिलित करे आदि।' फेर सम्मेलन के छपरा अधिवेशन के बाद हर भोजपुरी सेवी संगठन अपना अधिवेशनन में भोजपुरी से जुड़ल एह कुल्ह माँगन में सम्मिलित करे लागल। एकरा बाद नागेन्द्र जी से हमार सम्पर्क-संवाद आ सम्बन्ध बढ़त चल गइल।

सारन जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन से जुड़ल रहे का चलते नागेन्द्र जी से आउर नजदिकाही बढ़ल। नागेन्द्र जी सनू 1997 में एह संगठन के महामंत्री आ सनू 2001 में अध्यक्ष चुनल गइनीं आ हमरा उहाँ के संगे काम करे के अवसर मिलल। नागेन्द्र जी का संगे सारन जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, भारतीय भोजपुरी

www.bhojpurisahityangan.com

साहित्य परिषद्, विश्व भोजपुरी सम्मेलन आदि संगठनन से जुड़के भोजपुरी भाषा आ साहित्य के सुने-समुझे के जवन अवसर हमरा मिलल ओकर हमरा भरपूर लाभ मिलल। भोजपुरी समालोचना, शिक्षा, शोध आदि के दिसाईं उनकर नजरिया बहुते साफ रहे। उनका लगे सामान्य बात-बतकही में भाषा, संस्कृति, समाज, साहित्य, शिक्षा आ शोधकार्य से जुड़ल एक-एक पहलू के समुझावे के अजगूत हुनर रहे। हमरा समझ में भोजपुरी के शैक्षिक आ शैक्षणिक गतिविधियन के लेके उहाँ का बहुत जागरूक रहीं। विद्यालयन भा विश्वविद्यालयन का भोजपुरी विषयक पाठ्यक्रम के तइयार करे के होखे भा ओह पाठ्यक्रम के अनुरूप अध्ययन सामग्री का लेखन के सवाल होखे चाहे अध्ययन-अनुसंधान के वैज्ञानिक प्रारूप बनावे के होखे उहाँ के हर दिसाईं आपन साफ-साफ विचार राखीं आ एह दिसाईं काम करेवाला लोग के दिल खोल के मदद करीं। वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय आरा होखे भा नालंदा खुला विश्वविद्यालय पटना होखे चाहे इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय खुला विश्वविद्यालय, नई दिल्ली ही काहे ना होखे, हर जगह उहाँ के पाठ्यक्रम बनावे से लेके अध्ययन सामग्री लिखे आ संपादित-प्रकाशित करावे में सहयोग कइनी। हम नागेन्द्र जी एह कुल्ह ऐतिहासिक कार्यन के सहयोगी आ साक्षी रहल बानी।

नागेन्द्र प्रसाद सिंह जी सन् 1979 से 1994 तक भोजपुरी अकादमी, पटना के क्रमवार अनुसंधान पदाधिकारी, सहायक निदेशक आ उपनिदेशक के पद पर कार्यरत रह के अपना दायित्व के सम्यक् निर्वाह करत अकादमी पत्रिका का कई विशेषांक के सम्पादित कइनीं, जवना में प्रकाशित भोजपुरी भाषा, संस्कृति, साहित्य आ शिक्षा-शोध से सम्बन्धित आलोचनात्मक-विवेचनात्मक निबंध के माध्यम से भोजपुरी के शिक्षार्थी-शोधार्थी लोग खातिर महत्वपूर्ण अनुसंधान जोग संदर्भ - सामग्री उपलब्ध होला। नागेन्द्र जी शास्त्रीय आलोचना-दृष्टि आ निबन्ध लेखन-शैली जेतने अकादमिक बा ओतने ओकर भाषा-शैली परिनिष्ठित बा। जवन उनका अंग्रेजी, हिन्दी आ संस्कृत भाषा आ साहित्य-शास्त्र के अध्ययन, अनुसंधान आ ज्ञान-विस्तार के परिचय देला।

अब त नागेन्द्र प्रसाद सिंह जी का कर्तृत्व आ व्यक्तित्व के लेके बहुते पठनीय सामग्री उपलब्ध बा। छोट-मोट पत्र-पत्रिकन में छपल उहाँ पर केंद्रित आलेखन के गिनती नाहियो कइल जाए त पाँच खंड में छपल 'नागेन्द्र प्रसाद सिंह रचनावली' का अवलोकन से उनका हिन्दी आ भोजपुरी से सम्बन्धित साहित्य-साधना, सांगठनिक योगदान, शिक्षा आ शोधकार्य से जुड़ल कार्य आदि के सम्यक् बोध हो सकेला। निश्चिन्तता के छन में नागेन्द्र जी से उनका बारे में जवन कुछ हमरा सुने-समुझे के मिलल बा ओकरा मुताबिक उहाँ के जीवन-यात्रा बहुते संघर्ष वाला रहल। बचपने में आँखि के जोत कम हो गइल आ समय का संगे आउर कम होत चल गइल। एकरा बावजूद उहाँ के एम० ए० आ एम० एड० तक के शिक्षा लिहनीं। समान भाव से हिन्दी आ भोजपुरी भाषा-साहित्य के सेवा कइनीं। सन् 1961 ई० में उहाँ के दूगो महत्वपूर्ण पुस्तक 'हिन्दी बाल व्याकरण' आ 'हिन्दी में शिक्षा साहित्य : उपलब्धियाँ एवं संभावनाएँ' छप चुकल रहे। 1969 में उहाँ का पटना में 'जय दुर्गा प्रेस' के स्थापना करके हिन्दी आ भोजपुरी के अलावे मगही, मैथिली आ बज्जिका भाषा-साहित्य के भाषाविद्-साहित्यकार लोग का पुस्तकन का प्रकाशन के काम सहज-सुलभ बनवनीं। प्रेस के तत्वावधान में हर भाषा-साहित्य से जुड़ल संगोष्ठियन में साहित्यकार लोग के जुटान होखे। ओह प्रेस के माध्यम से उहाँ के नगर से लेके दूर देहात तक के नया-पुरान हर साहित्य सेवी लोग के पहचान

www.bhojpurisahityangan.com

दिलवनीं। भारतीय भाषा- साहित्य का विकास-विस्तार के दिसाईं एह ऐतिहासिक अवदान का संगे-संगे उहों के मौलिको साहित्य-साधना अनवरत चलत रहल।

नागेन्द्र जी एगो रचनाकार के रूप में सन् 1951 ई० से ही 'योगी', 'नारद', 'उचार' आदि पत्रिकन छपत रहनीं। बाकिर उनका नौ निबंधन के संग्रह के रूप में पहिल पुस्तक 'नवरंग' सन् 1978 में छपल रहे। एकरा बाद उनकर अनेक पुस्तकन जइसे - 'सुर ना सधे', 'सोच-विचार', 'चिंतन-मनन', 'जोड़ल-बिटोरल', 'भोजपुरी साहित्य के संक्षिप्त इतिहास' आदि छपली स। उहाँ के सम्पादन में भोजपुरी के कई स्तरीय पत्र-पत्रिकन के प्रकाशन भइल। भोजपुरी के प्रतिनिधि गजल संग्रह 'भिखारी ठाकुर रचनावली', 'भोजपुरी कहानी हाल-साल के', 'एकइसवीं सदी में भोजपुरी', 'विहार विश्वविद्यालय भोजपुरी पद्य संग्रह', 'थरुहट के लोकगीत', 'श्रीमंत', 'मास्टर अजीज के कीर्तन', 'मास्टर अजीज : व्यक्तित्व एवं कृतित्व' आदि महत्वपूर्ण पुस्तकन के संपादन आ प्रकाशकन भोजपुरी साहित्य जगत खातिर उनकर बहुते महत्व के ऐतिहासिक साहित्यिक योगदान मानल जाला। ◆

(पृष्ठ 16 का शेष भाग)

हमनी के अल्पाहार बेटी संध्या करावत रही। डॉ० नन्द्र किशोर तिवारी महाप्राण निराला के गीत सुनावत रहन। हमनी तन्मय होके सुनत रहीं जा। भोजपुरी साहित्य से लेके हिन्दी, संस्कृत आ वैदिक साहित्य तक के विषय के फैलाव रहे। ऊ हमनी के दू-दिनी संगति रहे आ परस्पर प्रेम से सराबोर रहे। ओइसन मिलन, ओइसन संवाद तथा सवाद फेरू ना मिलल। श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह के व्यक्तित्व, कृतित्व, स्वभाव रहि-रहि के कौंधत रहेला। कौंधत रही हमेशा।

स्वाध्याय, न्यू एरिया, मोराबादी, राँची
मो० : 9162773121 ◆

(पृष्ठ 14 का शेष भाग)

में निरंतर लेखन, संपादन आ प्रकाशन प्रारंभ भइल आ एगो गजल संग्रह, एगो संक्षिप्त इतिहास का अलावा कई गो निबंध के संग्रह छप के आ गइल।

दिल्ली जाये के मजबूरी का पहिले उहाँ का नाम निबंधकार आ आलोचक का रूप में भोजपुरी जगत में स्थापित हो चुकल रहे। उहाँ के सरकारी 'भोजपुरी अकादमी' में उपनिदेशक तक के नोकरियो कइलीं आ आखिर में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष पदो सुशोभित कइलीं। हम जानबूझ के उनका रचनन के मूल्यांकन दोसरा लोग खातिर छोड़ रहल बानीं। हमार अभीष्ट इहवाँ उनका जय दुर्गा प्रेस के ऐतिहासिक महत्व आ भोजपुरी के बढ़ावे में उनकर महती भूमिका उजागर कइल ह।

वइसे हम उनकर अन्तरंग रहीं, एह से उनका कुछ कमजोरियो के एहसास हमरा बा। जइसे मार्क्सवादी आ सी० पी० आई० के कार्डधारी सदस्य होइ के उनका में आध्यात्मिक आस्था के बात।

निबंध लिखे में विषय के छिपल कोना तलासल उहाँ के आपन खूबी रहे। भोजपुरी के विकास में उनकर जय दुर्गा प्रेस के भूमिका सब मीन-मेख के बादो सँकारे के पड़ी। इहवाँ उनकर महत्व निर्विवाद बा। हम त उनकर ऋणी बानीं। आ ऋण से उऋण होखहूँ के मनसा नइखें। के जाने एही बहाने ऊ त जिनिगी भर याद रहस। वइसे भौतिक साथ त अब छूट गइल।

'मौत से केकर रिश्तेदारी बा,
आज ऊ कल हमार बारी बा।'

तबो अपना अग्रजवत् धर्म भाई के तत्कालन आखिरी सलाम आ भावपूर्ण हार्दिक श्रद्धांजलि।

न्यू अजीमाबाद कॉलोनी,
महेन्द्रू, पटना – 800006
मो० : 9939595933 ◆

www.bhojpurisahityangan.com

साहित्य सेवी
नागेन्द्र प्रसाद सिंह जी : यादन के बागान से

❑ विमलेन्दु भूषण पाण्डेय

राउर कमी खलता, जिहीं अवसाद में रउरा।
जगह पड़ल खाली, जिहिंले इयाद में रउरा।।

जन्म दिन :- 7 अप्रैल 1937

देहावसान :- 8 सितम्बर 2021

भोजपुरिया संसार ,अपने आप मे एगो संस्था, साहित्य संसार के संच्चा साधक सपूत,भोजपुरी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार,संपादक नागेंद्र जी के ना रहला से बड़ा दुखी बा। अपना प्रिय साहित्य मनीषी के अनुपस्थिति मे श्रद्धा-शब्द सुमन, लोर भरल आँखि से श्रद्धांजलि दे रहल बा। राउर स्वर्ग सिधारल भोजपुरी संसार खातिर अपूरणीय क्षति बा, जवन शायद कबहुँ पूरा ना होई। हरि ॐ शांतिः। शत शत नमन।

नागेंद्र बाबू जी के परिचय -

राउर जीवन शैली अपने आप मे स्वयं परिचय रहल। भोजपुरिया सादगी के सोगहग साक्षात मनई। नागेंद्र प्रसाद सिंह जी के घर शीतलपुर (बरेजा) थाना - मांझी, जिला - सारन रहनी। रउरा पटना विश्वविद्यालय से एम० ए० अउर एम० एड० कइनी। शुरु में मुद्रण आ प्रकाशन के व्यवसाय में रहत ढेर कुल्हि साहित्यिक सांस्कृतिक संस्थन जुड़ल रहनी। बिहार सरकार अपने के भोजपुरी अकादमी के अनुसंधान पदाधिकारी के रुप में नियुक्त कइले रहे। रउरा भोजपुरी अकादमी के उपनिदेशक पद से अवकाश पवनीं। नालंदा मुक्त विश्वविद्यालय, पटना/इंदिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय, दिल्ली के भोजपुरी पाठ्यक्रम के निर्माण अउर पाठ लेखन में भरपूर योगदान कइनी। विक्रमशिला विद्यापीठ से रउरा भोजपुरी भाषा, साहित्य-संस्कृति के क्षेत्र में अविस्मर्णीय योगदान खातिर 'विद्यावाचस्पति' आउर इंटरनेशनल बायोग्राफिकल सेंटर के ओर से ट्वेंटिएथ सेंचुरी पुरस्कार मिलल।

रउरा 1962 में 'बाल हिंदी व्याकरण' लिखलीं। 1963 में 'हिन्दी में शिक्षा साहित्य - उपलब्धियाँ एवं संभावनाएँ' लिखलीं। 1978 में भोजपुरी में शोधपरक निबंध 'नवरंग' लिखनी। उन्नीस सौ अठहत्तरे में 'भोजपुरी के प्रतिनिधि गजल के सह-संपादन कइलीं। ओकरा बाद 1987 में भिखारी ठाकुर ग्रंथावली भाग 1, भाग 2 के सह-संपादक रहलीं। ओकरा बाद कई गो भोजपुरी के किताबिन के संपादन कइलीं। 'भोजपुरी उचार', 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' अउर 'भोजपुरी अकादमी पत्रिका' के संपादन - सह-सम्पादन भी कइलीं। मास्टर अजीज के रचना संग्रह के संपादन जइसन कठिन काम भी 2003 में रउरे कइलीं। 1997 में 'सोच विचार' नाव से निबंध संग्रह प्रकाशित भइल त वर्ष 2000 में राउर लिखल भोजपुरी गजल संग्रह 'सुर ना सधे' प्रकाशित भइल। भारत सरकार के 'साहित्य अकादमी' से सहभाषा श्रृंखला में राउर लिखल 'भोजपुरी' मोनोग्राफ 2017 में प्रकाशित भइल रहे। कुल 5 भाग में 'नागेंद्र प्रसाद सिंह समग्र रचनावली' प्रकाशित बा।

सांच कहीं त, नागेंद्र प्रसाद सिंह जी संपादक, निबंधकार, गद्यकार, समीक्षक, गीतकार, गजलकार, आलोचक के संगे, समग्र भोजपुरी के सतत् सादगी भरल साधुस्वभावी साधक रहनी।

हम विमलेंदु पाण्डेय (पिता-रामनाथ पाण्डेय, विश्व के पहिलका भोजपुरी के उपन्यासकर) बाबूजी के किताब जवना बेरा, अक्षर सेट कईल जाव, ओह बेरा नागेंद्र सर के प्रेस में छपत रहे।

(शेष पृष्ठ 34 पर)

www.bhojpurisahityangan.com

साहित्य के स्वर्ण पुरोधा : नागेन्द्र प्रसाद सिंह जी

❑ डॉ० रजनी रंजन

स्वर्गीय नागेन्द्र प्रसाद सिंह जी कवनो परिचय के मोहताज नइखी। शीतलपुर गाँव, जिला सारण के धरती आजुओ धन्य-धन्य बाड़ी जिनका माटी में नागेन्द्र सिंह जी के खेले कूदे के मौका मिलल। इहाँ के पटना विश्वविद्यालय से एम० ए० आ एम० एड० कइनी। पहिले पहिल मुद्रण आ प्रकाशन के व्यवसाय से जुड़नी मगर साथही अलग-अलग साहित्यिक सांस्कृतिक संस्था सभ से भी जुड़ के रहनी। बिहार सरकार इहाँ के भोजपुरी अकादमी के अनुसंधान पदाधिकारी के रूप में नियुक्त कइले रहे आ इहाँ के भोजपुरी अकादमी के उपनिदेशक के पद से रिटायर भइनी। नालंदा मुक्त विश्वविद्यालय, पटना आ इंदिरा गाँधी मुक्त विश्वविद्यालय, दिल्ली के भोजपुरी पाठ्यक्रम के निर्माण आ पाठ लेखन में इहाँ के भरपूर योगदान रहे। विक्रमशिला विद्यापीठ से इहाँ के भोजपुरी भाषा, साहित्य आ संस्कृति के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान खातिर 'विद्यावाचस्पति' आ इंटरनेशनल बायोग्राफिकल सेंटर के ओर से 'ट्वेंटिएथ सेंचुरी अवार्ड' मिलल रहे।

'बाल हिन्दी व्याकरण', 'हिन्दी में शिक्षा साहित्य : उपलब्धियाँ एवं संभावनाएँ', भोजपुरी निबंध 'नवरंग', भोजपुरी के प्रतिनिधि गजल सह-संपादन आ फेरू भिखारी ठाकुर ग्रंथावली भाग 1 आ भाग 2 के अतिरिक्त अन्य दूसर किताबन के भी संपादन आ सह-संपादन कइनी। भारत सरकार के 'साहित्य अकादमी' से सहभाषा शृंखला में इहाँ के लिखल 'भोजपुरी मोनोग्राफ' 2017 में प्रकाशित भइल रहे। कुल 5 भाग में 'नागेन्द्र प्रसाद सिंह समग्र रचनावली' प्रकाशित बा जेकर संपादक डॉ० संध्या सिन्हा कइले बानी।

आदरणीय नागेन्द्र प्रसाद सिंह जी संपादक, निबंधकार, गद्यकार, समीक्षक, गजलकार आ आलोचक रहनी। उहाँ के साफ-साफ अपना भूमिका में कहले बानी - 'हम अपना कविता के प्रजापति बानी'। सिरिजन के ई उहाँ के उद्घोषणा बा। एहतरे ई महान इंसान के बारे में कतनो कहल जाव कम होई।

नागेन्द्र जी अइसे त एगो जानल मानल आलोचक आ निबंधकार के रूप में प्रतिष्ठित बानी, बाकिर उनकर पैनी दृष्टि आ सूक्ष्म समीक्षा बुद्धि के साथे उनकरा लगे एगो मृदुल हिरदय भी रहे जे अक्सरहाँ कविता आ गजल में छलक जात रहे आ ईयाद दिया जात रहे कि नागेन्द्र जी के साहित्यिक व्यक्तित्व नारियर खानी कठोर आ नरम दुनूँ के सुंदर समन्वय बा।

'सुर ना सधे' नागेन्द्र प्रसाद सिंह जी के गजल संग्रह ह जवना के प्रकाशन लोक प्रकाशन पटना से भइल रहे। ई गजल संग्रह 2000 जनवरी में छपल रहे। लेखक महोदय अपना मन के बात अपना जीवन संगिनी श्रीमती शांति कुमारी जी के 40वाँ वर्षगांठ पर सप्रेम भेंट कइले रहीं। 'सुर ना सधे' गजल संग्रह में 35 गो गजल के संग्रहित कइल गइल बा। गजल काल के आरंभिक दौर में दसवाँ गजल संग्रह के रूप में गजलकार श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह के नाम पूरा प्रतिष्ठा से लिखल जाला काहे कि जे निबंधकार के रूप में प्रसिद्ध रही उहाँ के पहिला रचना गजल संग्रह रहे। एह गजल संग्रह में लेखक के मन के संवेदना बा, जवना में जिनिगी के उतार-चढ़ाव में अपना आसपास के लोगन मिलल संवेदना के विद्रूप भा सुंदर स्वरूप के चित्रण कइले बानी। पहिलका गजल के पहिलहीं के शेर में कह तानी -

"हमरा जिंनगी गें भोर ना होई।
हमरा करनी के शोर ना होई।।
आदमी आदमी से टूट रहल।
केतनों जोड़ी, संगोर ना होई।।"

www.bhojpurisahityangan.com

एह पंक्ति से कवि के समाज में आदमी के बेवहार से उपजल संवेदनशून्यता के बोध झलकता। समाज के छलिया सोभाव साफे लउकता। उहाँ के सच्चाई के बयानबाजी भी बड़ी सुंदर बा -

''मन बहुत बाटे साधन थोर बा।
का खरीदी का हम किफायत करीं।''

अगिला गजल में मन के जे गहिर भाव बा ओकरा के थाहल अख्तियार में नइखे। एकरे उहाँ के कहतानी -

''कतना गहिर कूप ई के बता सकी''

आदरणीय शायर के रचना के पढ़ के लागल बा कि समाज से उहाँ के खूब गहिर आघात मिलल रहे जेकरा चलते उहाँ के पारस पथर नियन हो गइल रहीं। लोहा आ सोना के फरक बुझे के बोध, सामाजिक ताना-बाना में चुनल बिनल भाव खूब सुनर लउकता।

बाकी उहाँ के निराश नइखीं। आँख के रोशनाई भर कम भइल रहे बाकिर कलम के रोशनाई आपन धार लेके खूब साहित्य रचलस। जोश-जज्बात में मन खूब पाकल आ टांठ भइल होई तबे ई लिखाइल होई कि -

''बुलाईं ना दियना जरवले जे बाड़ऽ
जिये के ललक तू जगवले जे बाड़ऽ
अबहियों ले छूटल ना सपनन में भरमल
तृषा जाल में अस फँसवले जे बाड़ऽ''

फेर

''सांझ गहिरात उमिर के जाता
प्राण के दीप जरावत बानी।''

जीवन के दर्शन भी उहाँ के शेर में स्पष्ट लउकत बा -

''टूटल दांत पाकल केस आखिन के गइल आभा
खड़ा बानी अरज डलले बताव यार का होई''

समाज के ताना-बाना से लेखक दुखी रहीं। उनकर मन समाज के छली लोग, कपटी लोग और खराब लोग के सिरिजन गलत सोच के बारे में रहे -

''दोस हमरे गिनात बा शहरिया में
बानी चढ़ल समाज के नजरिया में।।
ठेलि हमरा के मँझधार बीच ऊ त यार
खेल खेलताड़े अपना लहरिया में।।''

अइसन केतना गजल के शेर में समाज के विडंबना, आडंबर आ सामाजिक कुरीति संगे लोगन के खराब व्यवहार, छल-कपट ढेरे खराबी के चर्चा लेखक कइले बानी। चर्चा से साफ हो जाता कि उहाँ के समाज के समझ-बुझ के बाद साफ कर देनी कि अनगढ़ आ अंधेर के समझल समझावल आसान नइखे। एही से अंत में कहल जा सकेला कि गजल के रूप में शेर के माध्यम से ही उहाँ के कह देले बानी कि -

''जे भइल भूल चूक बा उमरिया में
ई गजल बदुवे ओकर तदवीर बन गइल
की गजल बड़े होकर तकदीर बन गई
मन के भीतर छिड़ल जे कुरुक्षेत्र बा
ओमें तनि के गजल शूरवीर हो गइल।''

एक तरह से गजल संग्रह एगो समाज के, परिवार के आ सामाजिक कुरीति के आइना बा जवना के प्रभाव से आदरणीय भी बाँचल नइखीं। समाज के सभे रीत-कुरीत के आपन छोटहन शेर में बांध के समाज खातिर परोसल गइल अपुनम अद्भुत संग्रह बा। गजल संग्रह में लेखक के भाव गहीर कुइयां जइसन बा जेकर व्यंजना भा शब्द समंजन 'गागर में सागर' कहल जा सकेला। शब्द के गहराई तक पहुँच के ओह में आपन भाव के मोती गजलकार के सोच के परिणाम बा। भोजपुरी आ हिन्दी भाषा पर समान अधिकार के साथे आदरणीय नागेन्द्र सिंह जी समाज में आपन नाम कमइनी। लेखकन के बड़हन लिस्ट में इहाँ के बड़ी इज्जत आ प्रतिष्ठा से नाम लिआता आ लिआई

(शेष पृष्ठ 36 पर)

www.bhojpurisahityangan.com

आदरणीय नागेन्द्र प्रसाद सिंह जी की साहित्य साधना

❑ प्रताप नारायण

भारत की आत्मीय चेतना जिस तरह भारत की भाषाओं में जीवित रहती है उसी तरह कलाकार और साहित्यकार की कृतियों में भी जीवित रहती है। किसी भी भाषा का साधक उस भाषा को निरंतर संजीवनी प्रदान करता रहता है बदले में भाषा भी उस लेखक/साहित्यकार को अमरत्व का वरदान देती है। भोजपुरी भाषा के ऐसे ही एक बड़े साधक नागेन्द्र प्रसाद सिंह जी रहे हैं जो भोजपुरी भाषा के साहित्यकारों की अपनी पीढ़ी के बड़े प्रखर और उन्नत साहित्य साधकों में वरेण्य हैं और रहेंगे। इनका संपूर्ण साहित्य, आस्था, उपासना और सत्सर्ग का साहित्य रहा है। आदरणीय नागेन्द्र प्रसाद सिंह जी ने भोजपुरी भाषा के प्रति अपने समर्पण और अपनी सतत् कर्मशीलता से भोजपुरी के साहित्य को एक नई ऊँचाई दी है।

पूज्य चाचा जी का देहांत अभी हाल में ही 8 सितम्बर 2021 ई० में हो गया है लेकिन उनकी यश की काया सदा जीवित रहेगी।

मुझे बखूबी याद है कि सन 1970 के दशक में मैं अपने पिताजी कविवर हरेंद्र देवनारायण के साथ सुबह के समय उनके आवास पर गया था। उस समय वह खजांची रोट, पटना के निकट पी० एन० एंगलो संस्कृत स्कूल के आसपास किराए के मकान में रहते थे। उनके साथ मेरे पिताजी के बातचीत की अंतरंगता से मुझे स्पष्ट आभास हो रहा था कि उनके बीच किसी तरह की औपचारिकता नहीं थी और यह भी कि वे लोग लगभग रोज मिलते हैं।

आदरणीय नागेन्द्र प्रसाद सिंह जी भोजपुरी भाषा के सार्वदेशिक विकास और प्रयोग के पक्के हिमायती थे। किसी भाषा के प्रति ऐसी अटूट निष्ठा और लगाव मैंने कम ही लोगों के जीवन में देखा है। उनके व्यक्तित्व का एक-एक अंश भोजपुरी भाषा के सर्वांगीण विकास के लिए प्रतिबद्ध था और उसका प्रमाण भोजपुरी में लिखित उनकी कुछ वैसी पुस्तकें हैं जो उन्होंने भाषा को सर्वजनीन बनाने के लिए विशेष रूप से लिखी हैं। इन्होंने बहुत सारी पुस्तकों की रचना की है, ढेर सारे ग्रंथों का संपादन किया, अनेक-अनेक पुरस्कारों से भी सम्मानित हुए लेकिन इन्हें मिलने वाला सर्वाधिक प्रतिष्ठित पुरस्कार लोक-मन में स्थापित उनकी स्वाभाविक प्रतिष्ठा और अपूर्व सम्मान है। मेरी नजर में इनकी निम्नलिखित कुछ पुस्तकें बड़ी महत्वपूर्ण हैं, जिनके चलते सदियों तक इनके यश का कीर्ति-स्तंभ कायम रहेगा। वे पुस्तकें हैं – 1. सोच विचार; 2. चिंतन मनन; 3. सुर ना सधे; 4. नवरंग तथा; 5. भोजपुरी साहित्य के संक्षिप्त इतिहास।

भोजपुरी अकादमी पटना के उपनिदेशक और अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन पटना के अध्यक्ष के रूप में भी इन्होंने ऐतिहासिक सेवाएँ दी हैं। भोजपुरी भाषा को अधिकाधिक आगे बढ़ाने के लिए इनका सतत् संघर्ष इन्हें भाषा के एक सफल आंदोलनकर्ता के रूप में विशेष प्रतिष्ठा प्रदान करता है।

मेरे पूज्य दादाजी बाबू रघुवीर नारायण पर भी इन्होंने ठोस काम किया है। जहाँ तक मुझे स्मरण है इन्होंने भोजपुरी अकादमी पत्रिका में बाबू रघुवीर नारायण जी पर एक बड़ा खोजी निबंध लिखा था जिसे आज तक लोग संदर्भ के रूप में मानते हैं। उनका स्पष्ट अभिमत था कि किसी भाषा का साहित्य मात्र पढ़ने के लिए नहीं होता बल्कि उसकी मूल संवेदना को जीवन में

www.bhojpurisahityangan.com

उतारने के लिए भी होता है। इससे बहुत सारी सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं का समाधान संभव है।

आज का लेखक जिन विषम परिस्थितियों के बीच रहकर साहित्य की रचना करता है उससे भी अधिक विषम परिस्थितियों का सामना उसे अपने रचे हुए साहित्य का छपवाने में करना पड़ता है। प्रबुद्ध वर्ग को खासकर सरकार को इस ओर ध्यान देने की जरूरत है।

नागेन्द्र जी का साहित्य प्रकाशन, मुद्रण और संपादन के योगदानों को प्रणाम करते हुए मैं इन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

मकान सं० : 11बी, आरपीएस महिला कॉलेज के सामने, रघुनाथ पथ, बेली रोड, पटना - 801503, बिहार
मो० : 9570890326 ◆

(पृष्ठ 26 का शेष भाग)

समीक्षक भारतीय सौन्दर्य शास्त्र से काम लेलन, उहाँ प्रो० विश्वरंजन, प्रो० हरि किशोर पाण्डेय, प्रो० रिपुसूदन श्रीवास्तव जइसन आलोचक अपना अंग्रेजी पृष्ठभूमि गुने पाश्चात्य सौन्दर्य शास्त्र के कसउटी अपनवलन। बीच के स्थिति में श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह आ डॉ० ब्रजभूषण मिश्र के नाँव लिआई।' इहाँ बीच के स्थिति से मतलब बा, दूनों सौन्दर्य शास्त्र के मिलल-जुलल कसउटी पर भोजपुरी रचना के कसल भा ओकर आलोचना। कहे के बात नइखे कि ई पद्धति हमरा में नागेन्द्र बाबू के प्रभाव में विकसित भइल।

आखिर में हम इहे कहे के चाहत बानी कि हमरा भीतर तनि मनी जे साहित्य लिखे समझे के सहूर आइल, ओह में आदरणीय नागेन्द्र बाबू के भूमिका बड़हन बा आ ताजिनगी हम उहाँ के कृतज्ञ रहब।

श्रीनिलयम, आदर्शग्राम, रोड नं० - 1, कोल्हुआ, पैगम्बरपुर, मुजफ्फरपुर,
मो० : 9905030520 ◆

(पृष्ठ 30 का शेष भाग)

ओह घरी के ढेरे इयाद आँखिन में बसल बा। पांडुलिपि ले जाये, छपल किताब ले आवे के क्रम में उहाँ के देखे, सुने, जाने आ जीये के मौका मिलल बा।

उहाँ के गरीब रचनाकार सब के आपन पईसा लगा के छापत रहनी। पईसा बाद में किस्त-किस्त में देवे के मोहलत देत रहनी। कवनो कारण से पईसा में देर होखें, त पईसा खातिर चिट्ठी (पोस्टकार्ड) भेजत रही छायावाद में। जेकरा खातिर भेजी, चिट्ठी पढ़ला के बाद, असली बात उहे बुझे जेकरा ला चिट्ठी आवत रहे। ई रहे उहाँ के भोजपुरिया सीधा सादा के साहित्यिक मर्यादा।

कुल्हि मिला के नागेंद्र बाबू शुभ्र भारतीय वेश धोती कुर्ता, शर्ट-पैंट आदि धारण करने वाला साहित्य पुजारी सादगी से भरल जिंदादिल इंसान रहनी।

प्रभु कृपा से नागेंद्र बाबूजी साहित्य जगत में सदैव अपना कर्म से साहित्यिक इतिहास के आलोकित करत रहबि। अपना कीर्ति-कलम से उहाँ के अमर बानी।

अंत मे हम जीवन भर साहित्य साधना के सतत साधक साहित्यकार के सादर नमन करत उनका निधन पर आँखिन के मोती (लोर) श्रद्धांजलि में समर्पित बा। नागेंद्र बाबू जी सदैव अमर रहीं।

मो० : 9631272588 ◆

बुताई ना दियना जरवले जे बाड़S
जिये के ललक तूँ जगवले जे बाड़S
अबहिंयो ले छूटल ना सपनन में भरमल
तृषा-जाल में अस फँसवले जे बाड़S
सुखाइल त रहबे करी नैन-सागर
जनम से ही आँसू बहवले जे बाड़S
अनाचार तजि के करी लोग का अब
इहे पाठ सबके पढ़वले जे बाड़S

www.bhojpurisahityangan.com

जय दुर्गा प्रेस

❑ ब्रज किशोर दूबे

1977 में एक दिन सांझि खा हम जय दुर्गा प्रेस में पहिला बेर गइलीं त उहवाँ नागेन्द्र प्रसाद जी के संगे अविनाश चंद्र विद्यार्थी, डॉ० वसंत कुमार, कविवर जगन्नाथ, प्रो० ब्रज किशोर आ मृत्युंजय मिश्र 'करुणेश' से भेंट भइल। हम आपन परिचय देलीं कि पटना रेडियो में लोकगीत गाइला आ गीतो लिखिला त उहाँ सभे हमरा से दू-तीन गो लोकगीत सुनलीं जा। ओकरा बाद हम उहाँ कबो-कबो जाए लगलीं। ओही घरी 'अंजोर' में हमार पहिलका कहानी 'पीयरी' छपल जवना के लोग बहुते पसन कइल आ कहानीकार के रूप में हमार पहचान बनल। जय दुर्गा प्रेस में हरदम कवनो ना कवनो साहित्यिक गोष्ठी होत रहे जवना में हंस कुमार तिवारी, हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय', परमानन्द पाण्डेय, नरेश पाण्डेय 'चकोर', पाण्डेय कपिल, पाण्डेय सुरेन्द्र, कविवर जगन्नाथ, अविनाश चंद्र विद्यार्थी, प्रो० ब्रज किशोर, राधा बल्लभ शर्मा, करुणेश जी आ कतने साहित्यकार जुटत रहले। जयदुर्गा प्रेस में साहित्यकार के चाय-पानी, रहे-सहे के इन्तजाम कइल जात रहे। पूरा परिवार आपन सीमित संसाधन से साहित्यिक कार्यक्रम के इन्तजाम में लागल रहत रहे। बाद में नागेन्द्र प्रसाद सिंह जी आ हम दूनों आदमी भोजपुरी अकादमी के सेवा में अइनी जा। उहवाँ एक से एक नीमन प्रकाशन के गवाह बनलीं जा आ आपन योगदान देत रहलीं जा। आलोचक आ समीक्षक के रूप में उहाँ के एगो अलगे तेवर रहे जवना के ढेर लोग पसन करत रहे। हमार मनोवैज्ञानिक भोजपुरी कहानी-संग्रह 'सकदम' जयदुर्गा प्रेस में छपल रहे जेकर आवरण उनकर बेटा 'देवेश शंकर' डिजाइन कइले रहन। एह पुस्तक के भूमिका नागेन्द्र जी लिखले रहीं, जवन एगो ऐतिहासिक दस्तावेज बा। अनेकन गोष्ठी आ सम्मेलन में हमनी के संगे-संगे जात रहीं जा।

उहाँ के जीवन दर्शन के बारे में एगो बात हरदम कहत रहीं - 'Wait and Watch' एकरा के हम हरदम इयाद राखिला आ आपन जिनिगी में अपनइबो करिला। साहित्यिक जिम्मेवारी के संगे आपन पारिवारिको जिम्मेवारी के उहाँ का भरपूर पालन करत रहीं जवना के फल बा सब बेटा-बेटी लोग नीमन-नीमन पद पर बा आ आजो परिवार में ओसहीं मेल बा जइसन ओह घरी रहे। प्रेस में भोजपुरी, मगही, मैथिली, अंगिका, बज्जिका, हिन्दी आ अंग्रेजी के छपाई होखे के चलते जय दुर्गा प्रेस भाषा-संगम अइसन लागत रहे। उहाँ के जिनिगी के साहित्यिक यात्रा के दस्तावेज बा उहाँ के 'नागेन्द्र रचनावली' जवन अपना आपन में एगो साहित्यिक धरोहर बा। संगे रहत-रहत एक तरह से हम उहाँ के परिवार के सदस्य नियन हो गइल रहीं। 1977 से उहाँ के सरगबासी होखे के पहिले तक के उनकर इयाद के हमार हिरदय से परनाम।

मो० : 9835081012 ◆

ऊ रूप ह अरूप ह, ई के बता सकी
का शक्ति के सरूप ह, ई के बता सकी

जनमे से लोग मन के थाहत बा रहल गइल
कतना गहिर ई कूप ह, ई के बता सकी

हुलिया बयान हो न सकल मन का भाव के
का रंग ह, का रूप ह, ई के बता सकी

बा झिलमिलात का दो गजबे के, राह में
ऊ छाँह ह कि धूप, ई के बता सकी

सोऽहं बने के साध बसल प्राण-प्राण में
के रंक ह, के भूप ह, ई के बता सकी

www.bhojpurisahityangan.com

(पृष्ठ 11 का शेष भाग)

प्रसाद द्विवेदी के 'न्यूट्रान बम', कृष्णानंद 'कृष्ण' के 'नपुंसक' आ 'मनोकामना सिंह 'अजय' के 'खर जिउतिया'।

पनरहो रचनन पर समीक्षा का साथे रचनाकारन के जीवन-परिचयो शामिल क लिहला से उनकर प्रकाशित अन्य भोजपुरी कृतियनो से पाठक परिचित हो जइहें।

रचनावली के चारो खण्ड के पढ़ला पर ई पता चलत बा कि नागेन्द्र बाबू का लगे अइसन बहुत कुछ लिखल आ संपादित सामग्री रहे जवन ओकरा पहिले पुस्तकाकार प्रकाशित ना हो सकल रहे। ओहू सभ सामग्रियन के समावेश खण्ड दू-तीन आ चार में हो गइल बा। 'रचनावली' के पाँचवाँ खण्ड में चारो खण्ड में प्रस्तुत रचनन पर विद्वानन के विचार संकलित बा।

जइसन कि पहिले चर्चा हो चुकल बा कि नागेन्द्र बाबू का आँखिन के ज्योति बहुत कम हो चुकल रहे जवन एगो विद्याव्यसनी खातिर सभसे पीड़ा देबे वाली स्थिति होला, एकरा बादो उनका लगन, उत्साह आ कार्य संपादन में कवनो कमी ना आइल। अपना स्मृति, प्रतिभा आ बिखरल रचनन के सहारे भोजपुरी जगत के बहुत कुछ देबे के आन्तरिक छटपटाहट उनका आखिरी समय ले बनल रहे। तबे पत्र-पत्रिकन में प्रकाशित कुछ रचनन के खो गइला से पुस्तकन में संकलित ना भइला के कचोट रह गइल। एही से 'जोड़ल-बटोरल' का आमुख में उनका कहे के पड़ल 'भोजपुरी साहित्यकार लोग से हम अनुरोध कइल चाहब कि अपने जे कुछ लिखीं ओकर पाण्डुलिपि/प्रतिलिपि अपना पास सुरक्षित जरूर राखि लिहीं। ऊ कबहीं ना कबहीं काम आ जाई।'

अपना गजल के एगो शेर में नागेन्द्र बाबू जवन कहले बानी ऊ बेर-बेर इयाद आवत बा –

जाये के बा उहाँ जहाँ से लवटल बाटे मुश्किल
आपन कुछ पहिचान, एही से छोड़ रहल बानी।

नागेन्द्र बाबू अपना पहचान कायम रखे खातिर भोजपुरी साहित्य के जवन थाती छोड़ गइल बानी ऊ भोजपुरी जगत खातिर अनमोल धरोहर बा।

आज नागेन्द्र बाबू भौतिक रूप में हमनी के बीच नइखीं बाकिर भोजपुरी साहित्य जगत् में उहाँ के पहचान कायम रही।

उनका स्मृति के सादर नमन।

द्वारा : श्री देवेन्द्र मिश्र, सी-499/एफ,
इन्दिरा नगर, लखनऊ - 226016 (उ० प्र०)
मो० : 9457462773 ◆

(पृष्ठ 32 का शेष भाग)

अंत में हमार मत ई बा कि 'सुर ना सधे' गजल संग्रह के शीर्षक नाम खूब सुनर रखाइल बा। ई शीर्षक नाम के दूगो अर्थ बा। पहिलका अर्थ त ई बा कि जवन सुर समाज में बनावल गइल बा, सामाजिक ताना-बाना के साथ ओह पर उनकर मन सहज नइखे हो पावत। आ दूसर ई कि जे समाज के सूर बा ओकर साधना सभे के बूते के नइखे। एकर राग कवनो विशेष मर्मज्ञ, शब्द साधक भा ध्वनि लोक क रसज्ञ मनई ही बूझ सकेलन इहो हम नइखीं कहत बल्कि ई ऊ विशिष्ट बुझक्कड़ आदरणीय के ही कहनाम बा –

''नागेन्द्र सचेत रह के बा।
अब समय गजब के आइल बा।''

हमारे थोर मति से बुझाइल बा उहे हम लिखले बानी। गहिर समुन्दर नियन उहाँ के साहित्यिक गति लउकत बा, बुझात बा, ई हमरा अंतस के झिंझोड़ देहले बा बाकिर एकरा के थाहल हमार मंद बुद्धि के वश के बात नइखे। ओकर बखान कतनो कइल जाव कमे होई। बेरि-बेरि ई विराट पुरुष के हमार नमन बा।

मो० : 7004692075

◆

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी के कर्मठ साहित्यकार

❑ नीभा श्रीवास्तव

साहित्य कला आ संस्कृति से हमार लगाव लइकाइये से काफी गहीर रहे। साँच कहल जाव त हम ई विरासत में अपना पिताजी से पवले रहीं। हमार पिताजी शिक्षक रहीं (स्व० अमरनाथ श्रीवास्तव) एह से पढ़ाई-लिखाई से हमार नेह-नाता बनल रहल। जब हम बी० ए० ऑनर्स पास कइली त आकाशवाणी आ दूरदर्शन, पटना से कम्पीयर के रूप में जुड़ गइनी आ चौपाल आरती में काम करत बानी। बतौर कम्पीयर काम करत हमरा मन में अपना भाषा आ साहित्य के प्रति एगो अइसन सकारात्मक छवि बनत जात रहे कि हम अपना के रोक ना सकलीं आ पटना स्थित नालंदा खुला विश्वविद्यालय में भोजपुरी स्नातकोत्तर भोजपुरी पाठ्यक्रम में दाखिला ले लिहलीं। परिणाम मन के अनुरूप रहल। स्नातकोत्तर कक्षा में अध्ययन करत खाँ हमरा भोजपुरी भाषा आ साहित्य के बारे में समग्रता से जाने-समझे के अवसर मिलल। ओही दौरान हम भोजपुरी आ हिन्दी के वरिष्ठ साहित्यकार आ आलोचक श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह के अनेक पुस्तकन के पढ़ली आ उहाँ के बारे में कुछ गहिराई से समझ-बूझ सकनी। हालाँकि नागेन्द्र जी से हमार परिचय बहुत पहिलहीं से रहे। आकाशवाणी में भोजपुरी कार्यक्रम 'आरती' में ध्वनयांकन खातिर आवे-जाये के क्रम में नागेन्द्र जी समेत अनेक भोजपुरी कवि आ साहित्यकारन से हम परिचित रहीं। इहो एगो सच्चाई बा कि स्नातकोत्तर कक्षा में हमार दाखिला नागेन्द्र जी के प्रेरणा के बादे संभव हो सकल। उहाँ के हरदम आगे बढ़े खातिर प्रेरित करत रहीं। एक बार उहाँ के घरे हम अपना पतिदेव जी के साथ गइनीं त उहाँ के भी प्रेरित कइनीं कि रउआ भी भोजपुरी से स्नातकोत्तर कर लीं। हालाँकि उहाँ के मनोविज्ञान से एम० ए० कइले रहीं आ स्टेट बैंक में अधिकारी रही एकरा बावजूद उहाँ से प्रभावित होके हमार पतिदेव भी भोजपुरी में एम० ए० भी कइनी आ पी० एच० डी० भी कइनीं। उहाँ से आ चाची से प्यार, दुलार, नेह, छोह हमारा बहुत मिलल। इहाँ तक कि उहाँ के कहलीं कि तु हमार चौथी बेटी हऊ।

स्नातकोत्तर कक्षा के उपाधि पवला के बाद हमरा मन में शोधकार्य करे के इच्छा भइल। हम नागेन्द्र जी के रचनाधर्मिता आ आलोचना-पद्धति से पूरा तरे प्रभावित रही। हम मने मन इ निश्चय कर चुकल रहीं कि हम अपना शोधकार्य के विषय 'भोजपुरी साहित्य के विकास में नागेन्द्र प्रसाद सिंह के योगदान (व्यक्तित्व आ कृतित्व)' ही रखब। संयोग अइसन जुटल कि हमार मुलाकात वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय आरा स्थित हर प्रसाद दास जैन कॉलेज, आरा के हिन्दी विभाग के प्राध्यापक गुरुवर डॉ० बजरंग प्रताप केसरी से भइल आ उहाँ के सहानुभूति मिलल।

श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह भोजपुरी साहित्य के एगो सशक्त हस्ताक्षर रहीं। उहाँ के लेखनी भोजपुरी भाषा आ साहित्य में साहित्य के विविध क्षेत्रण में समान रूप से गतिमान रहल। लेखक के रूप में श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह के एगो महत्वपूर्ण स्थान बा। उहाँ के भोजपुरी गद्य-साहित्य के भंडार भरले बानी आ एगो राह भी धरवले बानी। उहाँ के एगो निबंधकार, आलोचक, समीक्षक, इतिहास लेखक आ भूमिका लेखक रहीं। उहाँ के लिखल कई एक गद्य-पुस्तकन के प्रकाशन हो चुकल बा। 'नवरंग', 'सोच विचार', 'चिन्तन-ममन', 'जोड़ल-बटोरल', 'भोजपुरी साहित्य के संक्षिप्त इतिहास' आदि भोजपुरी के

(शेष पृष्ठ 40 पर)

www.bhojpurisahityangan.com

साक्षीभाव के कलमकार

❑ दिव्येन्दु त्रिपाठी

आदरणीय स्व० श्री नागेन्द्र सिंह जी के कृतित्व प कलम चलावल बड़ सौभाग्य के बात बा। उहाँ का अब हमनी का बीच ना रहली, ई भोजपुरी के साहित्य जगत खातिर एगो बहुत बड़ क्षति बा। बाकिर भोजपुरी साहित्य के समृद्ध करे में उहाँ के योगदान के हमेशा याद राखल जाई। हमरा समझ से यथार्थ तक उहाँ के संवेदना के जतना पहुँच रहे ओतने दार्शनिको चिंतन का ओर मजबूत पकड़ रहे। उहाँ के हम पहिले आदर सहित श्रद्धांजलि देत बानी। प्रभु उहाँ के उच्चतर सोपान प्रदान करस। उहाँ के ई दैहिक अनुपस्थिति में ऊहें के लिखल दूगो पंक्ति बरबस याद आवत बात -

''ना आई इहाँ काम केहू, एको साथी।
इहाँ से ना कवनो जिनिस साथ जाई।।''

मानव-जीवन के अंतिम निचोड़ ई पंक्तियन में झलकत बा। बाकिर संस्कृत में कहल जाला - 'कीर्ति यस्य स जीवति।' जेकर कीर्ति होला ऊ हमेशा जीवित रहेला। आदरणीय श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह जी कीर्ति आ कृति दूनो के लिहाज से माईभाषा भोजपुरी के आँचर भरि के गइल बानी। गद्य आ पद्य दूनो में।

नागेन्द्र प्रसाद सिंह जी के कृतित्व में व्यावहारिकता अरु सर्वग्राह्यता के पुट ढेर बा। उहाँ के ख्याति अर्जित कइनी एगो गद्यकार के रूप में। उहाँ का लिखल निबंध आ समीक्षा भोजपुरी गद्य के इतिहास में आपन एगो गहिर स्थान राखेले। उहाँ द्वारा सम्पादित पुस्तकन के बहुते प्रशंसा आ स्वीकृति साहित्य-जगत में मिलल। इग्नू के भोजपुरी पाठ्यक्रम के निर्माण में इहाँ का आपन कीमती योगदान दिहनी अरु भोजपुरी अकादमी, पटना में उपनिदेशक जइसन जिम्मेदारी वाला पद के बहुत गुणवत्तापूर्ण ढंग से निबहनी भी। गद्य के अलावे गजल लेखन के क्षेत्र में आपन एगो खास तासीर राखे खातिर भी इहाँ के हरमेशा इयाद कइल जाई।

समीक्षा के संदर्भ में राउर नजरिया एकदम व्यावहारिक रहे। रउवा आपन निबंधन में लिखले बानी जे, समीक्षक के तटस्थ अरु जहाँ तक हो सके वस्तुनिष्ठ प्रक्रिया के अपनावे के चाहीं। आपन निबंध-संग्रह 'नवरंग' में एह बात का ओर इशारा कइले बानी। जे समीक्षक वस्तुनिष्ठ आ तटस्थ शैली अपनावे अरु संबंधित रचना के उचित मूल्यांकन करे, जेकरा से कि पाठक लोग कुछ दिशा-ज्ञान पा सके। कहे के मतलब ई बाटे जे समीक्षा निरुद्देश्य ना बलुक उद्देश्यपूर्ण होखे के चाहीं।

भाषा के संदर्भ में राउर विचार काफी व्यावहारिक आ यथार्थग्राही रहल। राउर कहनाम रहे जे भोजपुरी में लेखन ओह रूप में होखे के चाहीं जेकरा से कि गाँव के मनई लोग भी आसानी से समझ सके आ शहरो के लोग सुगमता से ग्रहण कइ सके। रउवा एह बात के स्वीकार करत रहीं जे जहाँ ले बनि सके भोजपुरी के मौलिक आ खाटी शब्दन के प्रयोग होखे के चाहीं। बाकिर शब्द-चयन का ममिला में रउवा अतिवाद (Extremism) के समर्थन ना कइनीं। रउवा अनुसार हिन्दी के शब्दन चाहे ऊ तत्सम होखे भा तद्भव जरूरत के अनुसार भोजपुरी में ग्रहण करेके चाहीं। एह विषय प विद्वान लोग के तनि विवाद रहेला। हमरा बुझाता जे कुछ लोग अतिशुद्धतावादी बा ऊ लोग हर हाल में भोजपुरी के अपने शब्द लेवे के पक्षधर बा। कुछ दोसर लोग के ई ख्याल बा जे भोजपुरी में हिन्दी आ संस्कृत के शब्द लेवे में कवनो परेशानी नइखे। राउर कहनाम बा कि कम से कम निबंध आ समीक्षा लेखन में हिन्दी के शब्द लिहल जा सकेला।

www.bhojpurisahityangan.com

राउर ई दृष्टि मध्यमार्गी आ व्यावहारिक बा। रउवा अनुसार भोजपुरी में समीक्षा खातिर अभी उपयुक्त आ सशक्त शब्दन के कुछ कमी बाटे। धीरे-धीरे ई अभाव दूर होई। भोजपुरी में तत्सम शब्दन के लेला का बारे में राउर महत्वपूर्ण विचार 'सुर ना सधे' में संकलित उपक्रम से उद्धृत करे लायक बा -

"हम संस्कृत के आपन विरासत मानिलें आ ओकरा सम्पूर्ण शब्द-सम्पदा के आपन पैतृक सम्पत्ति मानिला। हम गाँव-गँवई में व्यक्त भोजपुरी का बगिया से ताजा गुलाब चुन लिहला के पक्षधर बानी : बाकिर एकइसवीं शताब्दी का चउकठ पर खड़ा होके साहित्यिक भोजपुरी भाषा के समकालीन विकास के आवश्यकता का खिलाफ आपन खिड़की-दरवाजा बंद क दिहल के बिरोधियो हउई।"

('सुर ना सधे', उपक्रम, पृष्ठ - 19)

देखल जा त कवनो भाषा के साहित्यिक रूप के समृद्धि खातिर दोसर भासन के शब्द लेबहीं के परेला। आजु यूरोप के लगभग सब भाषा में लैटिन आ ग्रीक के शब्द भरल मिली। अंगरेजिया के देख लीहल जा त ई साफ हो जाई जे ओकर साहित्यिक समृद्धि में लैटिन-ग्रीक, जर्मनिक, फ्रेंच, केल्टिक के शब्दन के बड़ योगदान बा। हिन्दी के बहुग्राह्यता के पीछे इहे कारण बा। हमरा विचार से ई विवाद ना बलुक विमर्श के विषय बा। एकरा में अभियो एकमत के अभाव बा। हमरा व्यक्तिगत रूप से नागेन्द्र प्रसाद जी के विचार सही बुझाला।

आदरणीय नागेन्द्र प्रसाद सिंह जी के कृतित्व प संक्षिप्त भा विस्तृत कुछुओ लिखल तब ले अधूरे कहाई जब ले उहाँ के रचल गजलन प चर्चा ना होखे। रउवा आपन लेखनी में हमेशा ईमानदारी बरतले बानी। 'सुर ना सधे' के अलावा आत्मकथ्य (उपक्रम) में आपन जीवन के उतार-चढ़ाव, द्वंद्व, संघर्ष, समता-विषमता अरु जीवन में झेलल हर खास पक्ष के रउवा सहजता से जिक्र कइले बानी। अइसन साफगोई बहुत कम लेखक आ साहित्यकार लोग में देखे के मिलेला। ईहे साफगोई राउर गजलो में प्रकट होता। गजल का शिल्प प हम कुछ लिख सकीं अइसन पात्रता त हमरा पास नइखे आ कविवर जगन्नाथ जी राउर गजलगोई के खासियत प लिखिए चुकल बानी। बाकिर हम 'सुर ना सधे' के भावपक्ष प दू शब्द लिखे से अपना के रोकि नइखीं सकत।

'सुर ना सधे' में संकलित पैंतीस गो गजल अपने आप में बहुव्यंजनात्मकता से सराबोर बाड़ी स। राउर गजल जहाँ एक ओर समाज में फैलल कमियन अरु विसंगतियन के खुलासा करत बा ओनिए दूसर ओर संघर्षरत आदमी के अझुराइल जीवन के ताना-बाना भी प्रकट होला। समाज में व्याप्त अनाचार प राउर दू टूक कहनाम बा -

"लूट, हतेया, बलात्कार सगरो मचल।
आग गजबे के देस में लहक गइल बा।"

(सुर ना सधे/19)

देश के आजादी के बादे से घोटाला आ राजनीति में चोली-दामन के साथ होत गइल। कवनो सरकार अइसन ना आइल जे बेदाग होखे। अपवाद वाला लोग रहल जरूर लेकिन ई गजल बीसवीं शताब्दी के राजनैतिक सच बयान कइ रहल बाटे -

"नया-नया रोजे बा होखत घोटाला।
उनका सच्चाई के बात जनि पूछीं।"

(सुर ना सधे/5)

उत्तर आधुनिकता से आदमी के जीवन संत्रस्त हो गइल बा। बाजार के ताकत सभ प हावी बा। रोजे रोज नया रूप में व्यक्तिवाद के परवान चढ़ रहल बा। लोग अपने में लागल बा -

"आदमी आदमी से टूट रहल
कतनो जोड़ीं संगोर ना होई।"

x x x

www.bhojpurisahityangan.com

"लोग बड़ुए अन्हार में डूबल
लाख चाहब अँजोर ना होई।"

(सुर ना सधे/3)

तमाम विसंगतियन प चोट कइला के बादो आशा आ आस्था का दीप त झिलमिलाइए रहल बा। रउवा आपन विरासत आ परम्परा के सँजोए आ बचावे के पक्षधर रहल बानी। ईहे त भारतीय मानस के संस्कार बाटे -

"लगा के संगमरमर के महल
पर हम थवल पट्टी
जतन से नाँव पुरुखन के
जोगावत जा रहल बानी।"

राउर चित्त में दर्शन आ अध्यात्म के बीज भी मजबूत रहल। संसार के निःसारता बोलीं भा बुद्ध के कथन में क्षणिकवाद। ई दुनिया में कुछुओ स्थायी ना बाटे - 'रहे जे, बा कहाँ, अब ना रही, जे एह घड़ी बाटे।' ई पंक्ति में गीता के श्लोक 'जातस्य हि मृत्योध्रुवो ध्रुवम् जन्म मृतश्च च' के भाव साफ-साफ ध्वनित होला। अंत में राउर चेतना अद्वैत के तलासे लागत बा। आत्मज्ञान भा आत्मबोध के उदित होला प सब भेद मेट जाला। राजा-रंक के दूरी रहि ना जाला। सभे एके हो जाला -

"ऊ रूप ह, अरुप ह, ई के बता सकी
का शक्ति के सरुप ह, ई के बता सकी।।
सोऽहम् बने के साथ बसल प्राण-प्राण में
के रंक ह, के भूप ह, ई के बता सकी।।"

(सुर ना सधे/4)

कुल मिलाके राउर रचना-संसार बहुवर्णी रहल बा। गद्य में जहवाँ रउवा वस्तुनिष्ठता के पोषक रहनीं ओनिए पद्य में जरूरत के अनुसार वस्तुनिष्ठ भा आत्मनिष्ठ बननी। वस्तुतः देखल जाव त गजल में रउवा प्रेक्षक भा दृष्टा के भूमिका में बानी। कहीं मानव-समाज के प्रेक्षक बानी त कहीं आपन जीवन आ मनःस्थिति के प्रेक्षक बानी। राउर गाइल विपस्यना के गीत बाटे जेकरा में जतने पाठक लोग डूबी, कवो समाज के यथार्थ से परिचित होई त कवो आपन मनःस्थिति के चित्रकारी ओकरा नजर आई। ई सब गजल यथावसर तकदीर, तसवीर, तदवीर, शूरवीर, फकीर आ कबीर के भूमिका निभावत बा। ई सब भोजपुरी साहित्य के अमूल्य निधि बाटे। एकरा के संगोर के हमनीं के काफी कुछ सीखे के आ करे के प्रेरणा मिली।

लेखक, अन्वेषक आ वास्तुविद्
साहित्य सचिव, जमशेदपुर
भोजपुरी साहित्य परिषद्
मो० : 9263567691 ◆

(पृष्ठ 37 का शेष भाग)

पुस्तक बा जवना में भोजपुरी के दशा, सुधार आ दिशा देखावे के काम नागेन्द्र बाबू कइले बानीं।

नागेन्द्र प्रसाद सिंह के साहित्यिक सांस्कृतिक परिवेश का ओर रूझान अपना परिवार से विरासत में मिलल रहे जवना के ई अथक परिश्रम से ऊँचाई देत गइनी। सोच में जेतने प्रगतिशील रहीं ओतने व्यावहारिक आ आस्थावानो।

उहाँ के साहित्य के लगभग हरेक विधा में अपना के अजमावे के प्रयास कइले बानी। जीवन भर के साहित्यिक साधना के 'श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह रचनावली' के पुष्प गुच्छ के रूप में पाँच खण्ड में साहित्य समाज के समर्पित कइल गइल बा जेकर संपादन डॉ० संध्या सिन्हा आ सह संपादन दिलीप कुमार कइले बाड़न। ई ग्रंथ अनमोल बा। उनकर रचनावली से भोजपुरी के भंडार भरल बा जेकरा से बाद के पीढ़ी के रौशनी मिली। उनका विषय में जतना कहल जाव कम बा। आज उहाँ के हमनी के बीच नइखीं। उहाँ के कमी हरदम खली। हमरा तरफ से उहाँ के विनम्र श्रद्धांजलि।

सुरेश अपार्टमेंट, फ्लैट नं० 31,
बुद्धा कॉलोनी, पटना - 1
मो० : 8210416971 ◆

www.bhojpurisahityangan.com

नागेन्द्र बाबू

❑ घमण्डी राम

पटना के नया टोला में अवस्थित जय दुर्गा प्रेस लेखकों का पावन मंदिर था। वहाँ नागेन्द्र प्रसाद सिंह प्रेस चलाते थे। उस समय ट्रेडल मशीन लेटर प्रिन्टिंग था। वहीं पटना महानगर के लेखक अपनी रचनाएँ पुस्तक के रूप में छपवाया करते थे। हिन्दी, मराठी, भोजपुरी, मैथिली, अंगिका, बज्जिका, उर्दू, अंग्रेजी के रचनाकार जुटते और साहित्यिक-सांस्कृतिक विमर्श होता। अविनाश चन्द्र विद्यार्थी, नरेश पाण्डेय, चकोर, प्रो० ब्रज किशोर, प्रो० तैयब हुसैन 'पीड़ित', गोविन्द झा, पांडेय कपिल आदि-आदि शाम को एकत्र होते। चाय चलती और रचनाओं पर चर्चा होती। कभी-कभी नागेन्द्र बाबू दरी बिछा देते और कवि गोष्ठी शुरू हो जाती। उनका परिवार इस कार्य में आत्मवत समर्पित रहता। उनकी पुत्री चन्दा, सन्ध्या, प्रिया और उनकी पत्नी जिन्हें हम सब आदर से दीदी कहा करते।

वहीं पर मेरी पहली पुस्तक 'माटी के मरम' छपी और उसके बाद तो लगातार कई पुस्तकें छप गयीं। नागेन्द्र बाबू हमें मार्गदर्शन देते और प्रेरित करते रहते लिखने के लिए। मृत्यु से दो दिन पहले तक दिल्ली में रहते हुए फोन से मुझे 'गोरकी माटी' उपन्यास लिखने की प्रेरणा देते रहते थे। उनका चला जाना मेरे लिए 'टुअर' हो जाने के समान है। वे मेरे सहोदर भाई की तरह थे। जय दुर्गा प्रेस छोड़ देने के बाद वे राजेन्द्र नगर स्थित शेफाली अपार्टमेंट में रहने लगे। वहाँ भी लोगों का आना-जाना नहीं छूटा। रामदास राही और मैं अन्त तक उनके शागिर्दों में रहकर कुछ न कुछ सीखते रहे। कभी-कभी हमलोग उनके आवास पर ठहर जाते भी। जब वे आँखों की रोशनी से लाचार हो गये तो एक दिन कहा - 'रामदास जी हम अब आपको देख नहीं सकते, हमको आप देखिए।' उनके नयनों आँसू आज तक मेरी आँखों से छलकते रहते हैं। कभी आवास पर जाते तो किवाड़ ढकचाने पर आवाज से पहचान जाते, बोलते 'रामदास जी अन्दर आ जाइए।' मैं अन्दर जाता और अपनी खाट के पास बिठाकर साहित्यिक चर्चा करते। अपनी अँधी आँखों से मेरे 'एकलव्य' महाकाव्य की जो भूमिका उन्होंने लिखी, वह आँख वाला नहीं लिख सकता। हमलोग भिखारी ठाकुर आश्रम कुतुबपुर से जुड़े हुए थे। एक बार बातचीत करते-करते इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि भिखारी ठाकुर रचनावली निकलवानी है और देखते-देखते दो खण्डों में 'भिखारी ठाकुर रचनावली' छप कर तैयार हो गयी जिसका लोकार्पण उस समय के सुप्रसिद्ध साहित्यकार गुलाम सरवर ने किया। रचना का क्रम जारी रहा। नागेन्द्र बाबू के प्रयास से भिखारी ठाकुर पर पहला पी० एच-डी० डॉ० तैयब हुसैन 'पीड़ित' ने लिखा। भिखारी ठाकुर साहित्य के लिए यह अनोखा प्रयास था।

लोक कलाकार भिखारी ठाकुर के गाँव कुतुबपुर में नागेन्द्र प्रसाद सिंह को प्रेरणा कला मंच के संस्थापक डॉ० संजय कुमार ले गये। कार पर मैं भी मौजूद था। उस समय नागेन्द्र बाबू की आँखों की रोशनी लुप्त हो चुकी थी फिर भी मंच पर खड़े हुए एक इतिहास रच दिया। तब तक डॉ० संजय उपाध्याय कुतुबपुर गाँव में चले गये। बच्चा, बूढ़ा, जवान किसी से भी ठाकुर जी की रचना सुनाने के लिए कहते, वे कोई न कोई रचना सुना देते। मंच से उपाध्याय जी ने यह भविष्यवाणी की कि ऐसा कलाकार और ग्रामीण के बीच संगम मैंने कहीं नहीं देखा। जिस किसी से उनका गीत सुनाने के लिए कहा,

www.bhojpurisahityangan.com

सुना दिया। भिखारी ठाकुर का गाँव कुतुबपुर लोक कलाकार भिखारी ठाकुरमय हो गया। गाँव को लोग भिखारी ठाकुर के नाम से जानेंगे। कुतुबपुर नाम लेते ही लोग समझ जाते भिखारी ठाकुर का गाँव।

'लोक कलाकार भिखारी ठाकुर आश्रम कुतुबपुर' संस्था का गठन होने पर नागेन्द्र बाबू ही अंतिम समय तक उसके अध्यक्ष रहे और रामदास राही उसके सचिव। बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना के निदेशक डॉ० वीरेन्द्र नारायण यादव थे। नागेन्द्र बाबू की समीपता डॉ० वीरेन्द्र नारायण से बढ़ती गयी। इसी क्रम में संपूर्ण भिखारी ठाकुर ग्रंथावली निकालने का निर्णय हो गया। इस कार्य को नागेन्द्र बाबू ने बड़े ही कठिन परिश्रम और लगन से तैयार किया और उनके अथक परिश्रम से संपूर्ण भिखारी ठाकुर रचनावली निकल गयी वह भी इनके फुटकर नोट के साथ। सम्पादकीय तो पढ़ते ही बनता है। पूर्व के दो भिखारी ठाकुर ग्रंथावली और अन्य लोगों द्वारा ठाकुर जी पर चलायी गयी कलम सबको साथ मिलाकर उनकी पूरी रचना को बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् ने प्रकाशित करवाया। नाम रखा 'लोक कलाकार भिखारी ठाकुर रचनावली।'

आँख से लाचार हो जाने के कारण नागेन्द्र बाबू एक ऐसा युवा चाहते थे जो कम्प्यूटर की जानकारी रखता हो और नागेन्द्र बाबू बोलते जाए, वह कम्पोज करते जाए। मैंने दिलीप कुमार को दिया जो मेरे के० पी० एस० विद्यालय में शिक्षण कार्य करते थे। उनकी सुपुत्री डॉ० संध्या बहुत अच्छी रचना करती थी। नागेन्द्र बाबू ने संध्या से संपादकत्व में अपनी पूरी रचना को पाँच खण्डों में प्रकाशित करवा दिया। एक प्रतिक्रिया मुझे लिखने के लिए कहा। लिखते-लिखते एक बड़ा खण्ड मैंने लिख डाला। उन्हें बड़ी खुशी हुई। दीदी उनकी सेवा में सतत लगी रहती। उसी अपार्टमेंट के ऊपर उनकी बड़ी बेटी चन्दा रहती थी जो आकर इनकी देखभाल करती रहती। बाद में इनकी पत्नी शांति दीदी काफी बीमार हो गई और पुत्र के पास दिल्ली में इलाज के दौरान उन्हें रहना पड़ा। तब समय के साथ नागेन्द्र बाबू अकेलापन सहन नहीं कर सके और वे चले गये अपने पुत्र के पास दिल्ली। यदा-कदा शेफाली अपार्टमेंट में आ जाया करते लेकिन बुढ़ापे में सहारा बहुत आवश्यक है। फिर वे दिल्ली गये और वापस नहीं लौटे। मुझसे प्रतिदिन शाम को पटना शहर के साहित्यकारों और साहित्यिक गतिविधियों के बारे में पूछा करते। शाम को फोन आते ही मैं समझ जाता नागेन्द्र बाबू का फोन है। वे मुझे ठोक ठोककर साहित्यकार बनाना चाहते थे। पूछते अब क्या लिख रहा है। मेरा दशरथ माझी मगही प्रबंध काव्य उन्हीं की देन है। उसके बाद मैंने कहानी लिखना शुरू किया 'गोरकी माटी'। उन्हें सुनाया तो उन्होंने एक राय दी 'रामदास जी मेरी सलाह मानिए तो इसे उपन्यास बनाइए क्योंकि इस कहानी में उपन्यास के तत्व है।' मैंने उनकी बात स्वीकार कर ली और लिखने लगे उपन्यास। रोज शाम को पूछते कितना लिखा। मैं सब बतला देता। 'गोरकी माटी' उनके मार्गदर्शन में 60 पेज तक पहुँच गया। उनकी राय थी कि 150 पृष्ठ में लघु उपन्यास लिखे। दो दिन पहले तक वे राय देते रहे। आदरणीय दीदी फोन उठाकर उन्हें देती। मैं पंद्रह दिनों तक बीमार रहा। बहुत कमजोरी रही लेकिन उन दोनों के आशीष से आज मैं चंगा हूँ। क्या पता इतना जल्द हमलोगों को छोड़ कर चले जायेंगे। राही जी ने दुखद खबर दी और तुरंत एक श्रद्धांजलि पत्र लिख डाला। वे मौत को अपना साथी मानते थे। एक जगह लिखा है उन्होंने -

"अकुआइल का बाड़S, चले के बेरा आ गइल।
मोटरी-गेठरी बान्धS, चले के तइयार हो जा।।"

बल्लभीचक, अनीसाबाद, पटना
मो० : 9546645033 ◆

www.bhojpurisahityangan.com

भिखारी ठाकुर साहित्य-सहेजन आ प्रकाशन के अथक पथिक कर्मठ साहित्यकार - नागेन्द्र प्रसाद सिंह

❑ राम दास राही

पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय के कृपा से महेश्वराचार्य के लिखल 'जनकवि भिखारी ठाकुर' 1964 ई० में भोजपुरी परिवार सालिमपुर अहरा, पटना से निकलल रहे। भिखारी ठाकुर के संपूर्ण साहित्य के समीक्षात्मक ई पहिली पुस्तक रहे। पं० नर्मदेश्वर सहाय पेशा से वकील रहीं आ भोजपुरी पत्रिका 'अंजोर' 18-19 बरिस ले प्रकाशित कइले रहीं। साथहिं भोजपुरी भाषा के बहुविध सेवा कइले बानी, जेकरा के कबो भुलावल ना जा सके। 1977 ई० में पुनः महेश्वराचार्य नया सिरा से भिखारी ठाकुर के साहित्य के समीक्षात्मक पाण्डुलिपि तईयार क के आश्रम के दिहनी। पाण्डुलिपि के प्रकाशन खातिर विचार-विमर्श भइल कि पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय किहाँ आश्रम के कार्यकारिणी के बइठक कइल जाओ आ पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय जी के अनुमति ले के प्रकाशित आ अप्रकाशित दुनूँ रचनन के मिलान कइल जाओ। पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय से मिल के बैठक के दिन-तारीख तय कइल कके उहाँ के आवास प बइठक कइल गइल। एह बइठक में आचार्य द्वारिका सिंह आ आचार्य सत्यनारायण लाल के साथे कार्यकारिणी के सदस्य उपाध्यक्ष श्री अविनाश चंद्र विद्यार्थी, मंत्री (हम रामदास राही) सहित अन्य लोग शामिल भइल। बातचीत के दौरान सहाय जी कहनी कि हमरा कवनो एतराज नइखे। हम खुश बानी कि आश्रम भिखारी ठाकुर जी के साहित्य के प्रकाशित करे के इच्छुक बा। एकरा बाद आचार्य सत्यनारायण लाल के पाण्डुलिपि आ पुस्तक के मिलान के भार दिआइल। महेश्वराचार्य जी एकरारनामा 20% प लिखनी। राह साफ हो गइल। छपाई के भार के साथे रचना शुद्धि खातिर अविनाश चंद्र विद्यार्थी प भार दिआइल।

श्री अविनाश चंद्र विद्यार्थी जी के परम मित्र नागेन्द्र जी रहीं। नागेन्द्र जी आपन प्रेस 'जयदुर्गा प्रेस' नया टोला, पटना में चलावत रहीं। एह प्रेस में भोजपुरी के अच्छा किताब सब छपत रहे। नागेन्द्र जी के भोजपुरी के विद्वानन के साथे अच्छा साथ-संगत रहे। आ उहाँ के स्वयं एगो अध्ययनशील विद्वान रहीं। विद्यार्थी जी नागेन्द्र जी के उहाँ पहुँचनी आ परिचय करववनी। 1977 ई० में नागेन्द्र जी से पहिले-पहील मुलाकात भइल आ गाढ़ी मित्रता भइल। बगल गाँव में ससुराल होखला के चलते हमनी दुनूँ में सार-बहनोई के हितई लगा लिहनी जे आजुओ बरकरार बा। संबंध आ परिचय के बाद लोक-कलाकार भिखारी ठाकुर आश्रम के कार्यकारिणी के सदस्य, संपादक मंडल के सदस्य आ अध्यक्ष के पद प आसीन होखे से उनका अंतिम साँस ले साथ रहल। हम हमेसा प्रेस के डेरा पर रूकत रहीं आ दीदी, बहनोई के रिश्ता से जुड़ल रहीं।

आज हम उनकरे कार्य-योगदान के सीखे के कोशिश कर रहल बानी। नागेन्द्र के कार्य-योगदान 1977 ई० में जब आचार्य सत्यनारायण लाल दूनूँ रचनन के मिलान कइला के बाद विद्यार्थी जी के एकरूपता खातिर दिहनीं। उहाँ के प्रेस कॉपी तइयार करके 'जयदुर्गा प्रेस' में छपे के दिहनी। नागेन्द्र जी भी रचनन के देखनी त मन में कुछ भाव जागल। एही क्रम में आदरणीय महेश्वराचार्य जी के बोला के एक महीना उहाँ

www.bhojpurisahityangan.com

के अपना लगे रखनी तब रचना पूरा सही-सही छपे लायक हो गइल।

13 जनवरी 1978 में छपरा के विसेसर सेमनरी हाईस्कूल में भिखारी ठाकुर के 90वाँ जयन्ती मनावल जात रहे। ओह समय जयदुर्गा प्रेस से 'भिखारी' नाम से भिखारी ठाकुर के साहित्य के समीक्षा छप गइल रहे। 13 जनवरी 1978 ई० के जयन्ती कार्यक्रम में पुस्तक लोकार्पण के समय तय रहे। तले एगो दुःखद घटना घटल। 12 जनवरी के भोरे-भोर नागेन्द्र जी के माई के देहावसान हो गइल। नागेन्द्र जी पहिले एक आदमी के द्वारा 200 पुस्तक के प्रति उनका हाथे छपरा विदा कइनी। तब माई के अर्थी के काँधा दे के घाट प गइनी। एने हमनी असरा देखत रहनी तबले नागेन्द्र जी के पेठाइल आदमी किताब ले के पहुँचले - कुछ कहे के पहिले चिट्ठी थमा देलस। चिट्ठी पढ़ते सारा परिस्थिति के जानकारी हो गइल। ओने गुलाम सरवर जी के बेतिया में जहाज खराब भइला से उहाँ ना पहुँच सकनी। तत्कालीन जिलाधिकारी शुभांकर झा जी, स्थानीय विधायक आ साहित्यकार लोगिन के जुटान अच्छा-खासा रहे। प्रथम पाली में जयंती धूमधाम से मनल। पुस्तक के लोकार्पण ना हो सकल।

रात्रि में गौरीशंकर जी के पार्टी द्वारा कला के प्रदर्शन कइल गइल। सबेरहीं हम आ जलेश्वर जी किताब ले के पटना चल अइनी। 16 जनवरी के हम शाहाबादी नया सचिवालय, पटना में गुलाम सरवर साहेब से भेंट कइनी। उहाँ के शिक्षा मंत्री रहीं। उहाँ के 25/01/78 के समय दिहनी। आदरणीय लालमुनि चौबे जी आर ब्लॉक में रहत रहीं। उहाँ के एगो हॉल सुसज्जित करवा दिहनी। साँच पूछि त लोकार्पण समारोह के खातिर आश्रम के कार्यकर्ता तैयार ना रहन, बाकिर बाद में सभे बात मान गइल आ आमंत्रण कार्ड वितरण होखे लागल। पहिलका कार्ड मंत्री गुलाम सरवर के गइल त उहाँ के बहुत खुश भइनी - आवे के वादा कइनीं। एही क्रम में जनसंपर्क विभाग में भी निमंत्रण गइल। 25 जनवरी 1978 के दू बजे आर० ब्लॉक सभा भवन सज गइल। पूरा हॉल थोरहीं देर में भर गइल। मंत्री जी आ अन्य अतिथिगण भी आ गइलें। लोकार्पण समारोह धूमधाम से भईल। धन्यवाद ज्ञापन के आग्रह हम नागेन्द्र जी भा पाण्डेय कपिल जी से कइनी बाकिर दुनू लोग के जिद रहे कि राही तूँ ही ई काम करऽ। हमरा जेतना बुझाइल हम कहनी। खुश होके लालमुचि चौबे 250 रुपया आसिरवादी दिहनी। एही तरे 'भिखारी ठाकुर' पुस्तक से खुश होके रामलखन जी से 2000 रुपया के आ कल्याण विभाग द्वारा 2000 रुपया आश्रम के अनुदान मिलल, सभे के मेहनत सार्थक भइल।

मई माह में आश्रम के कार्यकारिणी के बइठक भइल आ तय भइल कि भिखारी ठाकुर के संपूर्ण साहित्य के तीन भाग में बाँटल जाओ। पहिलका खंड में 9 गो नाटक, खंड - 2 में 5 गो नाटक आ तीसरका खंड में शेष स्तंभ फुटकर रचना छपो। संपादक मंडल में श्री अविनाश चंद्र विद्यार्थी, श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह, तैयब हुसैन 'पीड़ित', श्री रामदास आर्य आ जलेश्वर ठाकुर रहले। प्रधान भूमिका में संपादक मंडल के सदस्य नागेन्द्र जी आ शिविर के संयोजक होखे के नाते रामदास राही (हम) रहीं। संकलित पाठ में वर्तिका कम आ पद्य (गीत) बेसी रहत रहे। सबके मिलान क के नागेन्द्र जी, कलाकार दल आ गौरीशंकर ठाकुर आ शिलानाथ ठाकुर से बातचीत करीं, जवना शब्द के अर्थ आ भाव प चर्चा होखे। एकरा बाद संपादक मंडल आपस में बइठक कइल लोग। शिविर में पहिला बेर 'विदेसिया' के 'तमासा' शब्द से बहरि लाके 'नाटक' के नाँव दिआइल। विदेसिया संबंधी रचनन के एकत्रित क के ओकर आधार पाठ भइल आ प्रधान संपादक श्री अविनांश चंद्र विद्यार्थी के सँउपाइल। एह पूरा प्रसंग में रउआ देखब कि कुल क्रियाकलाप

www.bhojpurisahityangan.com

के पाछा नेपथ्य में ठीक नागेन्द्र जी आ उनका 'जयदुर्गा प्रेस' रहे। उहईं रचना छापे के दिआत रहे। एह से नागेन्द्र जी के भिखारी ठाकुर के रचनन के सजावे-संवारे आ दुनिया के सोझा ले आवे में महत्वपूर्ण योगदान बा। शिविर में चर्चा-बतकहीं के आधार प रचनन के संग्रह करना एगो मुश्किल काम रहे। दूर देहातन में शिविर होत रहे जहाँ सुविधा के अभाव रहत रहे उहाँ निःसंकोच खुशी-खुशी भगलीं-दउरलीं। पाँच नाटक के संकलन के प्रधान संपादक अविनाश चंद्र विद्यार्थी जी प्रेस कॉपी तैयार करके जयदुर्गा प्रेस के दे दीहलन। शुद्ध-शुद्ध रचनन के छपाई के भार नागेन्द्र जी प रहत रहे। शिविर के दौरान प्रेस कॉपी तैयार करे में पूरा-पूरा ख्याल राखत रहन कि कहीं गड़बड़ ना होखे। नागेन्द्र जी के एक आँख त खराबे रहे आ उहाँ के हमेसे आँख के समस्या से पीड़ित रहत रहीं। दूबर-पातर काया भगवान देले रहीं - बस एक लकड़ी के, बाकिर अढ़ाई मन लोहा इस्पात के करेजा आ हिम्मत रहे। नागेन्द्र जी के एक कान्हा प संपादक के दायित्व त दूसरा कान्हा प शुद्ध-शुद्ध रचना सज-धज के छपे, प्रकाशित होखे के जिम्मेवारी। फुटपाथ से उठा के भिखारी ठाकुर के साहित्यिक मर्यादा के साथे पुस्तक रूप में प्रकाशित होखे के श्रमसाध्य काम के भार इनकर दूसर कान्हा प रहे। एही से तन आ मन से प्रकाशन के दायित्व के निबाह कइनी। काहे कि एकरा पहिले भी 'भिखारी' के समीक्षात्मक पुस्तक इनकरे प्रेस से निकलल रहे।

संस्करण : प्रथम 13 जनवरी 1978 ई०

मुद्रक - जयदुर्गा प्रेस, नयाटोला, पटना - 800004 में छपल रहे।

एही क्रम में नागेन्द्र जी बहुत खुश रही कि 'भिखारी' समीक्षात्मक पुस्तक पहिले पहल हमरे प्रेस से छप रहल बा आ जयदुर्गा प्रेस एह आश्रम-प्रकाशन के मुद्रक हवे। उहाँ के दूसरका अरमान रहे कि तीनों के एक सूत्र में बान्ह सकीं। जनकवि भिखारी के बाद 'भिखारी' समीक्षात्मक पुस्तक समाज आ साहित्य के बीच रख रहल बानी। सजावट आ भाषा के शुद्धता के साथे, संपादक मंडली के साथे विचार-विमर्श होखे। खास क के अविनाश चंद्र विद्यार्थी आ सत्यनारायण जी, अभिभावक श्री द्वारिका सिंह आ आश्रम के मंत्री रामदास राही के साथे बातचीत आ विमर्श करत सभ शंका के समाधान करत छापे आ प्रकाशन के काम कइनी।

एकरा पहिले संपादक मंडल के सदस्यगण आ आश्रम के मंत्री रामदास राही के साथ विचार-विमर्श भइल आ पहिलका पाँच नाटक के चुनाव भइल। पुस्तक के नामकरण 'भिखारी ठाकुर ग्रंथावली : पहिल खण्ड' भइल।

चयनित नाटक - विदेसिया, भाई-विरोध, बेटी नियोज, कलियुग प्रेम आ राधेश्याम बहार।

संग्रहकर्ता - शिलानाथ ठाकुर आ गौरीशंकर ठाकुर।

संपादक मंडल - अविनश चंद्र विद्यार्थी, नागेन्द्र प्रसाद सिंह, रामदास आर्य, प्रो० तैयब हुसैन 'पीड़ित', जलेश्वर ठाकुर।

प्रकाशक - लोक कलाकार भिखारी ठाकुर आश्रम, कुतुबपुर, सारण।

सारा इतिहास के सच्चा वर्णन में एह कार्य में नागेन्द्र जी के अहम भूमिका के साफ लखात बा। आश्रम के कार्यकारिणी के बैठक में आ० द्वारिका सिंह कहनी कि भिखारी ठाकुर के साहित्य के विशुद्ध पाठ होखे के चाहीं। टीका-टिप्पण कुछ ना चाही। कलाकार गौरीशंकर ठाकुर आ शिलानाथ ठाकुर आ कलाकार लोगिन के साथे शिविर करके पाठ होखे के चाहीं। ठाकुर जी के छपल गुटका आ कॉपी संपादक के सोझा होखल जरूरी बा। शिलानाथ से एकरारनामा होखे के

www.bhojpurisahityangan.com

चाहीं आ पहला शिविर कुतुबपुर में होखे के चाहीं।

एही निर्णय के आधार प आज पहिलका शिविर कुतुबपुर में लागल। नागेन्द्र जी, तैयब जी, रामदास आचार्य जी आ जलेश्वर ठाकुर जी के साथे हम रामदास राही रहीं। कुल्हि कलाकारन के साथे गौरी शंकर ठाकुर दलान में बिछल दरी पर बइठ गइलन। गौरीशंकर ठाकुर जी से कहाइल कि जइसे विदेसिया नाटक खेलिला ओसही भाव के साथे बताईं। उहाँ के ओह घरी के घटना आ संस्मरण बतावे लगनी आ कहनी कि विदेसिया नाटक के अतना प्रचार रहे कि विदेसिया के नाच के नाम प्रचलित हो गइल। विशुद्ध पाठ के आधार प 'विदेसिया' नाम दिआइल आ संकलन शुरू भइल। कुतुबपुर में बटोही के आगमन आ कलकत्ता तक के पाठ के संकलित कइल गइल। सवेरहीं शिलानाथ ठाकुर के बइठा के एकरारनामा लिखाइल। नागेन्द्र जी एकरा के स्पष्ट कइनी कि 20% रायल्टी मिली आ उहो नगद ना 200 प्रति किताब के रूप में। गौरीशंकर जी आ शिलानाथ जी रउआ लोग बाँट लेहब सभे। सभ संकलित संचिका आ कॉपी, गुटका अलग-अलग बान्ह के सभ सदस्य चल दिहल।

सभ विवरण के आधार पर नागेन्द्र के भूमिका के बहुत अहम कहल जाई। शिविर के समय रखे से पहिले नागेन्द्र जी आ गौरीशंकर जी मिल के समय राखस। उहाँ के सारा काम छोड़ के शिविर में आवत रहीं। अपने जानब कि प्रधान संपादक जी पैर से लाचार रहीं। एह से चार सदस्य में सबके सम्मान के साथे नागेन्द्र जी ही ज्यादेतर जिम्मेवारी लेत रहीं काहे कि उहाँ के उमिर आ अनुभव से वरीय रहीं। शिविर में संकलित कागज के हम (मंत्री) प्रेस में बइठ के सिलसिलेवार करीं। कबो-कबो श्री अविनाश चंद्र विद्यार्थी जी आ जाईं। कई शिविर कइला के बाद पाँच नाटक के मूल कॉपी, अविनाश जी के दिआइल आ उहाँ के प्रेस कॉपी तइयार कइनी। एक दिन अविनाश चंद्र विद्यार्थी जी साँझि के चार बजे जयदुर्गा प्रेस में प्रेस कॉपी ले के अइनी। नागेन्द्र जी, विद्यार्थी जी आ हम पाँचों नाटकन के प्रयाण-पाठ आठ बजे रात ले पूरा क के नागेन्द्र जी से कहनी कि 'अब रउआ फाइनल क के छापीं। आवरण आ टाइटिल बाद में सोचाई। रउवा जगहा छोड़ देहब। उहाँ के अपना घरे यारपुर चल गइनी आ हम प्रेस में खा-पी के ओहिजे सुत गइनी। 'भिखारी ठाकुर ग्रंथावली' पहिल खंड के नाम धराइल।

अब छपाई के भार आ सजावट नागेन्द्र जी के ऊपर रहे। आवरण खातिर ब्लॉक बन गइल। निर्णय भइल कि हार्ड बाउन्ड आवरण रही। एह तरे नागेन्द्र जी 12 महीना शिविर आना-जाना करना, शिविर में रहना, नाटकन के संकलन करे में खून-पसेना एक कर देले। अब प्रेस में छपे में दस महीना लाग गइल। कुल 22 महीना में प्रेस से निकल के सजल संवरल 'भिखारी ठाकुर ग्रंथावली' पहिल खंड आइल। 1979 ई० के दशहरा के शुभ अवसर प पुस्तक प्रकाशित क के एक कॉपी प्रधान संपादक के आ एक कॉपी हमरा के दीहनी। ओह घरी नागेन्द्र जी भोजपुरी अकादमी के अनुसंधान पदाधिकारी रहनी आ निदेशक श्री हवलदार त्रिपाठी रहीं। हमनी दूनूं नागेन्द्र जी आ हम श्री हवलदार त्रिपाठी जी से अनुरोध कइनी कि एह पुस्तक के भव्य लोकार्पण कइल जाओ। निदेशक जी के प्रयास से 25 जनवरी 1980 के अकादमी के सौजन्य से तत्कालीन मुख्यमंत्री रामसुन्दर दास जी के कर-कमलन से लोकार्पण सम्पन्न भइल। एह कार्यक्रम में मुख्यमंत्री जी के उद्‌गार रहे ''देहाती क्षेत्र में स्थापित लोक कलाकार भिखारी ठाकुर आश्रम ने अपने सीमित संसाधनों से लोक सेवा का व्रत लिया है। इस अनुष्ठान में जनसाधारण तथा सरकार का उदार सहयोग अपेक्षित है, जिससे उद्देश्यों के कार्यान्वयन

www.bhojpurisahityangan.com

में इसे संतोषजनक सफलता सुलभ हो सके।" एकरा बाद उहाँ के जयदुर्गा प्रेस के आभार व्यक्त करत कहनी – 'इस पूरे अमूल्य सामग्री के संकलन आ प्रकाशन में अथक परिश्रम और अनमोल योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। भगवान इन्हें (नागेन्द्र जी को) दीर्घायु रखें।'

लोक कलाकार भिखारी ठाकुर के संपूर्ण साहित्य के तीन भाग में बाँटल रहे। एक भाग पहिला खंड पूरा भइल। दूसरा भाग खातिर 1980 ई० में दू आयाम में प्रयास शुरू भइल। पहिले खण्ड दू के पाँच नाटक क्रमशः गंगा स्नान, विधवा विलाप, पुत्रवध, गबरधिचोर, ननद भउजाई। एक पाँच नाटकन के अलग-अलग पाँच कॉपी पाठ खातिर तैयार कइल गइल। दू दिन रामपुर आ अंतिम में गबरधिचोर आ ननद भउजाई के ऊपर विचार-विमर्श खातिर केदार सिंह के सहयोग ले के रसुलपूर हाईस्कूल में शिविर लगावल गइल रहे। ई द्वितीय खंड के अंतिम शिविर रहे। सारी बात संग्रह से प्रकाश में आ चुकल बा, बाकिर ओह इतिहास में नागेन्द्र जी के अहम भूमिका के आज उजागर कर रहल बानी। उनकर योगदान से शुरू 1977 से 2005 तक के इतिहास सजल बा जवना के हम मंत्री के साक्ष्य में गवाह बानी। एगो रसूलपूर छोड़ के बाकी सब शिविर देहात में भइल। नागेन्द्र जी अपना गाँव छोड़ला के बाद 1952 ई० से पटना शहर में शहरी सुख सुविधा के बीच रहे लागल रहन। प्रेस, अकादमी सब करत-करत भिखारी ठाकुर के रचनन आ संपादकीय उत्तरदायित्व निर्वाह खातिर गाँवे-गाँवे, खेते-खेते घूमनी आ भिखारी ठाकुर साहित्य आ कला के संग्रह से लेके प्रकाशन से आपन अहम भूमिका के योगदान भी दिहनी। इनका मन में एह असुविधा खातिर कवनो मलाल ना रहे। शहरी जिनगी के बाबू आज तपस्वी बन के रसूलपुर हाईस्कूल में अपना मंडली के साथे रातभर एगो अखरे चौकी प गौरीशंकर जी के रास्ता हेर रहल बानी। सबेरे नाश्ता क के मन चिन्ता से भरल रहे – तबले गौरीशंकर जी प नजर पड़ल – मन निराशा से उबर के हुलास से भर गइल। करमवीरता के साथे कह उठनी – 'राही चलऽ छपरा – ओहिजे शिविर होई।' प्राकृतिक दृश्य ई रहे कि पानी धरासार हो रहल रहे। नागेन्द्र जी दृढ़ता से आपन कर्त्तव्य पूरा करे में लागल रहीं आ साथहिं तैयब जी आ शत्रुघ्न जी में भी जोश भर देनी। सभे एक दोसरा के साथ देवे में लागल रहे। गौरीशंकर के साथे लेके राजेन्द्र जी के डेरा प हमनी हाजिर हो गइनीं। भिखारी ठाकुर के पुरान भक्त दीनानाथ जी भी आ गइनी। सभ सदस्यगण काम प लाग गइल आ अंतिम शिविर के उद्देश्य पूरा क के दम लीहल लोग। इहई भिखारी के रचना के संकलन के अंतिम पूर्णाहुति नागेन्द्र बाबू के कर-कमल से पूरा भइल। पटना लवटला प नागेन्द्र जी पाँच नाटकन के संकलन आ सब छुटकल रचनन के हमरा आ जलेश्वर जी के साथे जाके श्री अविनाश चंद्र विद्यार्थी जी के सउँप देनी। अविनाश जी ओकर प्रेस कॉपी तैयार क के जयदुर्गा प्रेस में छपे खातिर नागेन्द्र जी के दे दिहनी – नागेन्द्र बाबू के ऊपर ओकर मुद्रण के भी भार रहे। जयदुर्गा प्रेस मुद्रण के दुनिया में नाम रहे। किताबन के सुंदर गेटअप आ शुद्ध सज्जित छपाई खातिर ई प्रेस नामी रहे। लोग पूछे 'कहवाँ छपववनी हँ ??' 'निःशंक जयदुर्गा प्रेस में।'

अब मुद्रण के सारा भार नागेन्द्र जी प आ गइल। कंपोजिंग भइल – शुद्धि खातिर यदा-कदा श्री अविनाश चंद्र विद्यार्थी जी प्रेस में आ जाईं। कबो-कबो त नागेन्द्र जी प्रेस से उनका इहाँ पहुँचवा देत रहन। बाद में नागेन्द्र जी मुद्रण के प्रक्रिया पूरा क के प्रेस से बाईंडिंग खातिर भेजनी।

आ गइल 'भिखारी ठाकुर रचनावली : भाग 2'। सज-धज के बसंत पंचमी 1986 ई० में प्रकाशित भइल। लोक कलाकार भिखारी ठाकुर

www.bhojpurisahityangan.com

आश्रम के भिखारी ठाकुर के संपूर्ण साहित्य के प्रकाशकीय योजना के तहत दू खण्ड के प्रकाशन में नागेन्द्र जी के अथक प्रयास आ हर तरह से आपन दायित्व निर्वहन कइला से भिखारी ठाकुर के प्रति उनकर अपार सरधा के साथे-साथे भोजपुरी भाषा आ साहित्य के उन्नति में उनकर योगदान के खास चमक मिलल। एकरा साथे-साथ उहाँ के कई अन्य पुस्तकन के भी मुद्रण, प्रकाशन कर के माईभाषा के खोईछा भरनी।

पटना में एम० क्लब में भिखारी ठाकुर ग्रंथावली के लोकार्पण समारोह मंत्री अर्जुन विक्रमशाह के कर-कमलन द्वारा भइल। मंत्री जी के पहिला खंड भेंट स्वरूप दिआइल। उहाँ के दुनूं पुस्तक के सरसरी निगाह से देखनी। जब उनका से दू शब्द आर्शीवादी बोले के निवेदन कइल गइल त मंत्री जी अपना संबोधन में कहली कि आज आश्रम भिखारी के संपूर्ण साहित्य के प्रकाशन के व्रत लेले बा। हम बहुत खुश बानी। हम एह योजना में अपना विभाग से (1985-86) 8000/- (आठ हजार रुपया) अनुदान स्वरूप दे रहल बानी। बकाया पइसा संस्था अपना ओर से पूरा करो। दोसर आशीर्वाद में कलात्मक आ शुद्ध छपाई के साथे संपादक मंडल के धन्यवाद दीहनी। कहनी - 'शायद नागेन्द्र जी एह सभा में बानी त हम प्रार्थना करब कि अपने के हिरदय में भिखारी ठाकुर के प्रति जे ममता बा उ दिखावा नइखे बलुक साक्षात वास्तविकता लउकता। मुद्रण के बिना कतिना पाण्डुलिपि दीयका के भोजन हो गइल बा। एह यज्ञ में श्रद्धा आ पइसा के जरूरत होला बाकिर कहल जाला कि जहवाँ चाह उहवाँ राह। हम अपने के साथ बानी। सभे के धन्यवाद दे के आपन वाणी के विराम देत बानी।' धन्यवाद ज्ञापन नागेन्द्र जी देनी आ कहनी कि 'भिखारी ठाकुर के सेवा हमरा जीवन के लक्ष्य बा। सभा में जुटल सभे के प्रति आभार प्रकट करत धन्यवाद दे रहल बानी आ साथे हम संपूर्ण भिखारी ठाकुर साहित्य के योजना में आज से लाग जात बानी। सभा समाप्त हो गइल आ नागेन्द्र बाबू के भिखारी ठाकुर के संपूर्ण साहित्य के सेवा खातिर बेचैनी शुरू हो गइल।

1986 ई० के अप्रैल माह में लोक कलाकार भिखारी ठाकुर आश्रम के प्रधान कार्यालय में तीन गो कार्यक्रम रखाइल रहे। 1. भिखारी ठाकुर के मूर्ति के शिलान्यास, 2. सारण जिला पुस्तकालय संघ के छट्ठा अधिवेशन, 3. आश्रम कार्यकारिणी बैठक में भिखारी ठाकुर के रचनन के प्रकाशकीय योजना, भजन आ फुटकर रचनन प विचार विमर्श। ओह समय नागेन्द्र जी संस्था के संयुक्त मंत्री रहीं आ अविनाश चंद्र विद्यार्थी जी अध्यक्ष रहीं। मूर्ति के शिलान्यास के साथे चाय नाश्ता के बाद बइठक भइल।

बइठक के अध्यक्षता विद्यार्थी जी कइनी, उद्घाटन रामेश्वर सिंह कश्यप 'लोहा सिंह' कइनी। सभे आपन-आपन विचार प्रकट कइल। नागेन्द्र जी के विचार बहुते स्पष्ट आ ठोस रहे। उहाँ के पहिल सुझाव रहे कि मूर्ति खुला में ना रह के ऊपर से मंदिरनुमा छावनी रहे के चाहीं। कम से कम साँझि खाँ आरती आ सबेरे फूल-माला होखे के चाहीं। दूसरका सुझाव रहे कि पुस्तकालय साधारण ना एगो समृद्ध पुस्तकालय होखे। एकरा खातिर भोजपुरी विद्वान, प्रकाशक, साहित्यकार लोगिन से दान स्वरूप पुस्तक मांगल जाव। जे सदस्य पुस्तक दीही ओकर रजिस्टर में नाँव दर्ज करावे के होखी।

आश्रम खण्ड-1 आ खण्ड-2 छाप चुकल अब भजन-कीर्तन आ फुटकर रचना भा बिरहा-बहार नाटक रह गइल बा। एकरा सब के संकलित क के प्रकाशन प विचार होखे के चाहीं। आज ठाकुर जी के मूर्ति के शिलाधार भइल बा। गौरीशंकर जी से आग्रह बा कि आपन नाटक खेले के पहिले कृष्ण भजन, सोहर आदि गावसु-बतावसु

www.bhojpurisahityangan.com

जवना से कुछ नोट करीं जा आ शुरूआत हो जाव। संकलन के प्रक्रिया पूरा हो जाए से संपूर्ण रचना एके साथ निकल जाई। रचना में पात्र परिचय आ शब्दार्थ रहे के चाहीं। यदि आश्रम सिर्फ कागज के पइसा दे दीही त हम रचनावली के मुद्रण के बाकी खर्चा के भार वहन करब। एको पइसा ना लेब। अपना खरच प छाप के देब। कसहूँ साहित्य के प्रकाशन हो जाए इहे हमार निहोरा बा।' सभे साधु-साधु कह उठल। बइठक में पुस्तकालय के खुला अधिवेशन आ आश्रम दुनूं के अतिथिगण रहन जा जे सभे आपन विचार देलन। सांस्कृतिक कार्यक्रम नागेन्द्र जी के प्रस्ताव के अनुसार कृष्ण लीला के सोहर से ही शुरू भइल। संपादक लोग नोट कइलस।

जब-जब शिविर होखे त भिखारी ठाकुर के रचनन के सिलसिलेवार ढंग से संग्रह कइल जाव। कार्यक्रम समाप्त भइला प कलाकार लोगिन से बातचीत होखे आ शंका के समाधान के कोशिश होखत रहे। मालिक जी के साथे कइसे अइनी, कइसे सीखनी... सब लोग आपन-आपन इतिहास आ संस्मरण बतिआवत रहे। एही क्रम में पता चलल कि सखीचंद भगत के दू कोसी आवाज रहे। उहाँ के पुराना कलाकार रहीं। एगो पद के अर्थ आ भाव पूछाइल -

''धन संगत, धन-धन करनी,
जो जानत सकल जहान
धन पत्नी जो पतिमुख पंकज,
करत मधुइव पान।।''

सखीचंद हाथ जोड़ि के कहलन कि 'मालिक जी गावे के सिखवनी, भाव ना। हमनी के कोशिश रहे कि कलाकार के जीवन भर के कला आ मालिक जी के साथ प्रेमभाव जानल जाव। संपादक लोग जरूर सबकुछ नोट करत जात रहे।

साहित्य आ कला खास क के भिखारी ठाकुर कला प्रस्तुति आ मंच के विषय में जानकारी लिहल जात रहे। गौरीशंकर ठाकुर जहाँ-जहाँ कार्यक्रम खातिर जास उहईं से छुटकल शब्द नोट करी जा। आज भिखारी ठाकुर के मूर्ति शिलाधार भइल बा। जयंती में हमनी के भाग दउर आ मंच प भिखारी ठाकुर संगीत आ कला के प्रस्तुति में लागल रहीं। हम मंच छोड़ के दुआर प अतिथि भोजन के व्यवस्था देखे खातिर चल देनी। सब बेवस्था ठीक रहे। नगोन्द्र जी थाकल रहीं, विश्राम खातिर गइनी। हम कहनी जात बानी कार्यक्रम में, उहाँ के कहनी - 'जा... देखऽ..'। हम दस कदम बढ़ल होखब तब तक उहाँ के आवाज कान प पड़ल 'देखऽ मंच प का गवा रहल बा...'। समझत देरी ना लागल... तुरंत लखीचंद के खड़ा कइनी। लखीचंद भिखारी ठाकुर के भजन-गीत गावे लगले। नागेन्द्र जी संपादक रहीं आ प्रेस में भिखारी ठाकुर के पहिला रचना से छपला के वजह से इनकर रोम-रोम में भिखारी ठाकुर बास करत रहीं। एही से नागेन्द्र जी उनकर साहित्य का संकलन खातिर हमेसे सतर्क आ जागरूक रहत रहीं। पुस्तकालय के खुला अधिवेशन में आ खुला बैठक में लोहा सिंह जी कहनी कि हमनी के सरकार के पर्यटन विभाग से भी बात करे के चाहीं।

संजय उपाध्याय पटना में विशाल संस्था चलावत रहीं। उहाँ के मन में सरधा भइल कि विदेसिया 'नाटक' करीं। एकरा खातिर संजय उपाध्याय नागेन्द्र जी के डेरा प बातचीत करे अइनी। हम ओहिजे रहीं। बातचीत के दौरान उहाँ के बतवनी कि कलाकार तैयार बाड़न। पार्ट बँटा गइल बा आ रिहर्सल पटना मेडिकल अस्पताल के चमड़ा वार्ड में होई। नागेन्द्र जी कहनी कि हम आ राही जी आइब आ रास्ता बता देब। हमनी दुनू नागेन्द्र जी आ हम एक हफ्ता पी० एम० सी० एच० के चमड़ा वार्ड में जा के कलाकारन के बताईं जा। तमासा प्रस्तुति आ वेशभूषा कलाकारन के समुझाईं जा। धीरे-

www.bhojpurisahityangan.com

धीरे कलाकार लोग बात समझे लगले। नाटक तैयार हो गइल। पटना के प्रसिद्ध थियेटर कालिदास रंगालय में आज व्यावसायिक नाटक से हट के विदेसिया के प्रस्तुति भइल 'विशाल' संस्था के निदेशक संजय उपाध्याय के निर्देशन में।

1986 ई० में कुतुबपुर आश्रम प संकट के बादल छाये लागल। एकर संगठन में आपसी फूट के चिंगारी पड़ गइल आ भिखारी ठाकुर के परिवार-वंशज लोग आ अन्य लोगिन के बीच रुपया पइसा के अइसन झंझट होखे लागल जे आश्रम के विकास के धारा के रोक दिहलस। 1987 ई० कोईलवर में भिखारी ठाकुर जन्म शताब्दी कसहूँ सम्पन्न भइल। स्थान जैनीजोर में शताब्दी समारोह ना हो सकल। एह सब घटना से नागेन्द्र जी बहुते दुःखी भइलन। हमरा के समुझवलन कि राही तूँ एह सब झंझट से दूर हो जा। तोहरा दूर ले चले के बा। साहित्य के सेवा करऽ... एकर क्षेत्र विशाल बा। हम उनके वचन प आपन अलग राह धइनी। एने भिखारी ठाकुर आश्रम के सारा कार्यक्रम ठप्प हो गइल।

अब हम 2001 ई० के बात प आ रहल बानी। नागेन्द्र जी के आवास प 'सूत्रधार' के रचनाकार 'संजीव जी' पहुँचल रही। ओह समय संजीव जी के भिखारी ठाकुर के व्यक्तित्व आ कृतित्व आ उनकर जीवनी संबंधी बातन के जानकारी प्राप्त करे के रहे। उहाँ के भिखारी ठाकुर के जीवन प उपन्यास लिखे के योजना रहे। नागेन्द्र जी के विषय में संजीव जी जानत रहले कि भिखारी ठाकुर के संपूर्ण साहित्य के दू खंड में संपादन आ मुद्रण कइले बानी। एक दिन ना, संजीव जी कई-कई दिन आवत रहन - मिलत रहन आ जानकारी लेत रहन। एह सब सहायता खातिर संजीव जी आपन उपन्यास 'सूत्रधार' में आभार भी प्रकट कइले बाड़न।

अब अपने सभे के 2004 में ले आवल चाहेब। 2004 में राष्ट्रभाषा परिषद् के कार्यालय में श्री रामवचन राय, निदेशक डॉ० वीरेन्द्र नारायण यादव, सचिव रामदास राही - तीनों लोगिन में भिखारी ठाकुर के संपूर्ण रचना के प्रकाशन के संबंध में बातचीत भइल। बातचीत के सार रहे कि पूरा साहित्य हम उपलब्ध करायब। संपादन वरीय साहित्यकार श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह करीहें। किताब के रायल्टी भिखारी ठाकुर के परिवार के दिआई। बात एतना प फाइनल हो गइल। राष्ट्रभाषा परिषद्, बिहार सरकार के द्वारा प्रकाशन के रास्ता साफ हो गइल। डॉ० वीरेन्द्र नारायण जी समय दे के नागेन्द्र बाबू के डेरा पर अइनीं। नागेन्द्र बाबू एह प खुशी-खुशी तैयार हो गइनी। जयदुगा प्रेस में छपाई के काम अब ना होत रहे। एह से छपाई के काम प्रेस 'आलेखन' में होई - इहो प्रेस में अच्छा काम होला। रामदास राही हमरा भिरी रचना दीहें, आलेखन में कंपोजिंग होखी, राष्ट्रभाषा परिषद् से केहू आ के देख-सुन करत रही इहे तय भइल।

एकरा बाद हम सारा सामग्री देत रही। उहाँ के सब चीझ के फोटो भी मंगली। कई गो नायाब फोटो जेमे प्रशस्ति पत्र, जाकिट आ सभ कलाकार लोगिन के फोटो आदि शामिल रहे उपलब्ध करावल गइल। सभ भजन कीर्तन भी। पहिले शंकर फिर राम फिर कृष्ण के भजन। अंत में विविधवर्णी सामग्री एकट्ठा भइल। एह तरे नागेन्द्र जी बहुते गंभीरता से सब सामग्री के व्यवस्थित कइनी। 'आलेखन' प्रेस में सब सामग्री छपे लागल। बहुत सजगता से पात्र परिचय, प्रसंग, कठिन शब्द के अर्थ आदि विवेचन होके दिआये। बिहार राष्ट्रभाषा परिषद पटना से मार्च 2005 ई० में प्रथम संस्करण 'भिखारी ठाकुर रचनावली' के रूप में पुस्तक आइल जेमे भिखारी ठाकुर के उपलब्ध सभ रचनन के प्रस्तुति रहे। संपादक नागेन्द्र प्रसाद सिंह रहीं। अपना संपादकीय में पेज 12 में लिखले बानी - 'लोक कलाकार भिखारी ठाकुर आश्रम के

www.bhojpurisahityangan.com

संस्थापक मंत्री रामदास राही विगत 25 वर्षों से मेरे साथ काम करते रहे और भिखारी ठाकुर से संबंधित जितनी सामग्री मेरे पास है उसका बड़ा हिस्सा उनकी सदाशयता का सुफल है...।'

एह में नागेन्द्र जी प्रधान संपादक आ भिखारी ठाकुर परिवार के सदस्य, भिखारी ठाकुर आश्रम के कलाकार, कार्यकारिणी समिति के पूरे परिवार आ अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के परिवार के साथे अन्य मित्रगण के आभार प्रकट कइले बानी।

लोक कलाकार भिखारी ठाकुर आश्रम कुतुबपुर सारण के 25 बरीस के तपस्या के बाद भिखारी ठाकुर के संपूर्ण रचनन के बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, बिहार सरकार द्वारा प्रकाशित करवावल गइल। एह में तत्कालीन निदेशक डॉ० वीरेन्द्र नारायण यादव के अविस्मरणीय योगदान बा। एही तरे सूत्रधार उपन्यास के उपन्यासकार संजीव जी के उपन्यास के प्रकाशन भइल जेमे पहिला वेर भिखारी ठाकुर के संपूर्ण जीवन के गाथा बा। निर्माण कला मंच, पटना द्वारा संजय उपाध्याय पूरा देश में विदेसिया के प्रदर्शन कर रहल बानी। ढेरे संस्था भी आजकाल्ह एह प्रयास में लागल बा।

एह सब के देखत लोक कलाकार भिखारी ठाकुर आश्रम के अध्यक्ष श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह के विचार भइल कि एह तीनों विद्वानन के आश्रम के ओर से सम्मानित कइल जाओ। हम तीनों सज्जन विद्वान के नेवतनी। दिन तय भइल 13 अप्रैल 2005 ई०।

कुतुबपुर आश्रम में स्वागत समिति के गठन कइल गइल। स्वागताध्यक्ष सतेन्द्र सिंह रहले। गौरीशंकर मंडली भी आवे के रहे। 13 अप्रैल 2005 ई० के हमनी प्रभुनारायण विद्यार्थी, वीरेन्द्र नारायण जी के डेरा प भोजन करके भूतपूर्व मंत्री उदित जी (मटिहरी बाग से) लेके डोरीगंज आ गइनी आ नाव से पार कइनी जा। पटना आ अन्य जगहन से अतिथिगण आ गइल रहे।

कार्यक्रम के नियमानुसार मंगलाचरण, स्वागत भाषण आ सम्मान के बाद अतिथि के भाषण भइल। संस्था के अध्यक्ष नागेन्द्र जी (चित्र में देखल जा सकेला) आपन अध्यक्षीय भाषण में भावभीनी श्रद्धांजलि दीहनी आ कुतुबपुर के पावन भुई के वंदना कइनी। ओकरा बाद सम्मानित तीनों अतिथियन के धन्यवाद देत कहनी - 'रउवा सभे जवन काम कइनी उ कितना महत्वपूर्ण काम बा जे सार्थकता के साथे भिखारी ठाकुर के कृति के उजागर कर रहल बा। यदि भिखारी ठाकुर के संपूर्ण साहित्य एक साथे अतना सज-धज के ना निकलित त इनकर समूचे साहित्य के मूल्यांकन कठिन रहे। कर्मवीर हमार मंत्री रामदास राही 1978 ई० से भिखारी ठाकुर के योगदान भी अनमोल बा। गुटका से उतारल कॉपी कइल आ कलाकारन के साथे बातचीत क के अलग-अलग पाण्डुलिपि तैयार कइल गइल। विदेसिया नाम के कवनो पुस्तक ना रहे। पात्र के नाम प एकरा प्रसिद्धि मिलल रहे आ लोगिन के जबान प इहे नाम चढ़ल रहे। एही से एकर नाम विदेसिया रखाइल। पूरा रचना जे मिलल ओह में गीत बेसी आ वार्तिका कम रहे। एह से सांगोपांग रचना खातिर शिविर लगा के रचना कइल गइल। ई बहुते श्रमसाध्य काम रहे। एह सब के समेट के 'भिखारी ठाकुर रचनावली' के रूप में रचना प्रकाशित करे में बहुत मेहनत लागल। एकर प्रकाशन में डॉ० रामवचन राय आ डॉ० वीरेन्द्र नारायण यादव जी के अहम भूमिका बा। उनकर सहयोग आ सरधा के प्रणाम। भोजपुरी भाषा के सूर्य लोक कलाकार भिखारी ठाकुर के साहित्य प लागल ग्रहण से उबर गइल। जगदीश चन्द्र माथुर आ महेश्वराचार्य जी के बाद संजीव जी भिखारी ठाकुर के साहित्य आ कलाकार के विषय में सूक्ष्म-सूक्ष्म जानकारी प्राप्त क के ओकरा के

www.bhojpurisahityangan.com

हिन्दी उपन्यास के रूप दीहनी। एकरा खातिर भारत सरकार के शिक्षा-संस्कृति मंत्रालय से संजीव के प्रोत्साहित कइल गइल बा। हम सभ रचनाकार आ प्रोत्साहित करे वाली संस्था सभ के प्रति आपन आभार प्रकट कर रहल बानी। रउआ सभे के सम्मानित करके आश्रम बहुत गौरवान्वित हो रहल बा। भगवान सभे के चिरंजीवी राखस। नौजवान संजय उपाध्याय जी के कार्य बहुते सराहनीय बा जे 'विदेसिया' तमासा के देश भर में घूम-घूम के प्रदर्शित करवा रहल बाड़न आ जे शायद एकर प्रदर्शन के व्रत लेले बाड़न। एह से संबंधित सभ कलाकार लोग आ संजय जी के लाख-लाख धन्यवाद। आज इहाँ पधारल राहुल साहित्य के उपासक श्री प्रभुनारायण जी के जन्मभूमि के माटी के तिलक आ माँ गंगा के जल के अमृतपान करे खातिर हम बेर-बेर धन्यवाद देत बानी। अंत में आप सब सज्जन जे इहवाँ पधरनी, जेकरा अइला से आश्रम के कार्य सम्पन्न भइल सभ के हिरदय से आभार आ धन्यवाद देत बानी। अध्यक्ष होखे के नाते हम ओह सभ कलाकार के आशीर्वाद देत बानी जे सबेरहीं से उठ के मंच प आइल बानी आ भिखारी ठाकुर के परंपरा के जियवले रखने बानी। सभे आयोजक के आशीर्वाद देत प्रार्थना करब कि हम राउर बानी भा रउआ हमार बानी। अब हम सभे के आशीष देत आपन वाणी के विराम देत बानी।' नागेन्द्र बाबू मंच से उतर गइले बाकिर जब-जब भिखारी ठाकुर के नाँव प मंच बंधाई आ सजावल जाई, नागेन्द्र बाबू के नाँव जरूरे लिआई।

प्रणाम।

मो० : 9386126122 ◆

समय का गोड़ पर गिरले, बतावऽ यार का होई
उमिर का छोर पर अइले, बतावऽ याद का होई

बा टूटल दाँत, पाकल केस, आँखिन के गइल आभा
खड़ा बानी अरज डलले, बतावऽ यार का होई

ना कइलीं काम हम कवनो, ना भजलीं नाँव हम कवनो
अनरकम एह तरह कइले, बतावऽ यार का होई

ना आई काम अब कुछुओ, ना जाई साथ अब कुछुओ
चले का बेर ना रोवले, बतावऽ यार का होई

घड़ी भर के समर्पण आ छने भर का निवेदन के
असकती एह तरे टरले, बतावऽ यार का होई

रहे जे, बा कहाँ; अब ना रहीं, जे एह घड़ी बाटे
मिली का मोड़ पर जनले, बतावऽ यार का होई

www.bhojpurisahityangan.com

पुरस्कार एवं सम्मान

1. विक्रमशीला हिन्दी विद्यापीठ, ईशीपुर (भागलपुर) से हिन्दी भाषा आ साहित्य के अमूल्य सेवा खातिर 'विद्यावाचस्पति' (पी० एच० डी०) के सम्मानित उपाधि धारण खातिर अधिकृत - सन् 1984 ई०।
2. अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलप, सत्रहवाँ अधिवेशन (अशोक नगर : 8-9 अप्रैल, 2000) में भोजपुरी निबंध-संग्रह 'सोच-विचार' पर 'हरिशंकर वर्मा पुरस्कार' से सम्मानित - सन् 2000 ई०।
3. विश्व भोजपुरी सम्मेलन, दिल्ली के प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन (बोकारो : 9-10 फरवरी 2002) में भोजपुरी साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान खातिर 'भोजपुरी भूषण' के उपाधि से सम्मानित - सन् 2002 ई०।
4. भोजपुरी महोत्सव, 2061 वि०-सह-विश्व भोजपुरी सम्मेलन, बिहार के प्रांतीय अधिवेशन (आरा : 21 नवम्बर 2004) में भोजपुरी कला, संस्कृति आ साहित्य में अमूल्य योगदान खातिर 'संगीत-सम्राट स्व० महेन्द्र मिश्र स्मृति सम्मान' के शृंखला में 'भोजपुरी साहित्य भास्कर' के उपाधि से सम्मानित - सन् 2004 ई०।
5. अखिल भारतीय विद्वत् महासभा, आरा (भोजपुर, बिहार) से भोजपुरी निबंध-लेखन में प्रशंसनीय योगदान खातिर 20 मार्च, 2005 के आयोजित वार्षिक अधिवेश में प्रशस्ति-पत्र से सम्मानित - सन् 2005 ई०।
6. भोजपुरी विकास मण्डल, सीवान के रजत जयंती : 18 सितम्बर 2005 के अवसर पर निबंध-विधा में निबंध-संग्रह 'सोच-विचार' पर एक हजार एक रुपया के साथ विशिष्ट सम्मान से सम्मानित।
7. जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद् के स्वर्ण-जयन्ती (24-25 दिसम्बर, 2005) के अवसर पर परिषद् द्वारा सम्मानित आ अभिनन्दन-पत्र समर्पित।
8. भोजपुर जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, आरा द्वारा भोजपुरी साहित्य, कला आ संस्कृति विषयक महत्वपूर्ण कार्य खातिर 25 मार्च, 2006 के सम्मानित।
9. 17-19 अक्टूबर, 2012 के अन्तर-सांस्कृतिक अध्ययन केन्द्र (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय) आ इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (पूर्व केन्द्र, वाराणसी) के तत्वावधान में आयोजित 'उत्तर एवं मध्य भारत के लोक आख्यान एवं नाटक' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में एक सत्र के अध्यक्षता।
10. अखिल भारतीय प्रगतिशील लघुकथा मंच के 24वाँ अधिवेशन; (18 दिसंबर, 2012) के अवसर पर अखिल भारतीय हिन्दी-प्रसार प्रतिष्ठान द्वारा लघुकथा आलोचना खातिर 'लोकभाषा रत्न' सम्मान से सम्मानित।
11. बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन, पटना (बिहार) के ३६वाँ महाधिवेशन (16-17 फरवरी, 2013) के अवसर पर हिन्दी भाषा आ साहित्य में उल्लेखनीय योगदान खातिर 'पं० छविनाथ पाण्डेय सम्मान' के प्रसिद्ध आलोचक डॉ० नामवर सिंह के हाथे सम्मानित।

साहित्यिक योगदान

(क) साहित्य-सृजन

मुद्रक :-

1. हिन्दी बाल व्याकरण; प्रकाशक - सर्वश्री शिव पुस्तक भण्डार, सीवान - सन् 1961 ई०।
2. हिन्दी में शिक्षा साहित्य : उपलब्धियाँ एवं संभावनाएँ; (लघुशोध-प्रबंध), प्रकाशक - सर्वश्री बिहार ग्रंथ कुटीर, पटना - सन् 1962 ई०।

भोजपुरी :-

1. नवरंग (लघु निबंध संग्रह); प्रकाशक - सर्वश्री लोग प्रकाशन, पटना - सन् 1978 ई०, पुर्नप्रकाशन।
2. सोच-विचार (निबंध-संग्रह); प्रकाशक - सर्वश्री लोग प्रकाशन, पटना - सन् 2000 ई०।
3. सुर ना सधे (गजल-संग्रह); प्रकाशक - सर्वश्री लोग प्रकाशन, पटना - सन् 2000 ई०।
4. चिन्तन-मनन (निबंध-संग्रह); प्रकाशक - सर्वश्री लोग प्रकाशन, पटना - सन् 2011 ई०।
5. जोड़ल-बटोरल; प्रकाशक - सर्वश्री लोग प्रकाशन, पटना - सन् 2011 ई०।
6. इंदिरा गाँधी मुक्त विश्वविद्यालय, दिल्ली के भोजपुरी पाठ्यक्रम आ पाठ्यसामग्री लेखन।
7. नालंदा मुक्त विश्वविद्यालय, पटना के भोजपुरी पाठ्यक्रम आ पाठ्यसामग्री लेखन।

(ख) संपादन

1. गीत जे गूँजल रहल (प्रो० उमाकांत वर्मा के भोजपुरी गीत आ ओह पर आमंत्रित आलेख पुरस्कार); प्रकाशक - सर्वश्री भोजपुरी संस्थान, पटना - सन् 1994 ई०।
2. भोजपुरी अकादमी निबंधमाला : भाग 1-4; प्रकाशक - भोजपुरी अकादमी, पटना; क्रमशः 1995, 1996, 1997 आ 1998 ई०।
3. भिखारी ठाकुर रचनावली (लोक कलाकार भिखारी ठाकुर के समस्त उपलब्ध रचनन के संकलन आ भोजपुरी आउर भोजपुरीतर पाठकन के खातिर संपादन); प्रकाशक - बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना - सन् 2005 ई०।

(ग) संयुक्त संपादन/संपादन सहयोग

1. भिखारी ठाकुर ग्रंथवली : भाग 1-2; प्रकाशक - लोक कलाकार भिखारी ठाकुर आश्रम, कुतुबपुर (सारण), क्रमशः सन् 1978 आ 1987 ई०।
2. भोजपुरी के प्रतिनिध गजल; (खण्ड 1-2), प्रकाशक - सर्वश्री लोग प्रकाशन, पटना - सन् 1979 ई०।
3. भोजपुरी कहानी : हाल साल के; प्रकाशक - अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, पटना - सन् 1997 ई०।
4. भोजपुरी कहानी संकलन; प्रकाशक - भोजपुरी अकादमी, पटना - सन् 1998 ई०।
5. एकइसवीं सदी में भोजपुरी; प्रकाशक - सर्वश्री भोजपुरी साहित्य संस्थान, पटना - सन् 1999 ई०।
6. भोजपुरी पद्य-संग्रह (बिहार विश्वविद्यालय के स्नातक स्तरीय पाठ्य ग्रंथ) - सन् 2001 ई०।
7. धरुहट के लोकगीत ('श्रीमंत' द्वारा संकलित गीतन के संपादन); श्रीमंत प्रकाशन, मढ़ौरा (सारण) - सन् 2002 ई०।
8. श्रीमंत (स्व० सिपाही सिंह 'श्रीमंत') - सन् 2002 ई०।
9. मास्टर अजीज के कीर्त्तन; प्रकाशक - विश्व भोजपुरी सम्मेलन, दिल्ली - सन् 2003 ई०।
10. मास्टर अजीज : व्यक्तित्व एवं कृतित्व' प्रकाशक - मास्टर अजीज शोध संस्थान, पटना - सन् 2005 ई०।

(घ) आलेख/व्याख्यान

1. हिन्दी आ भोजपुरी पत्रिका आ स्मारिका में निबंध आदि के नियमित प्रकाशन।
2. हिन्दी आ भोजपुरी के साहित्यिक संस्थन के गोष्ठी, संगोष्ठी, अधिवेशन आ महत्वपूर्ण आयोजन के अवसर पर विषय-प्रवर्त्तन, व्याख्यान, उद्घाटन आ अध्यक्षीय अभिभाषण।
3. हिन्दी आ भोजपुरी के विभिन्न संकलित पुस्तकन में निबंध, शोध-निबंध आ गजल के प्रकाशन।
4. विभिन्न विश्वविद्यालय के भोजपुरी विषयक, एम० फिल० आ पी-एच० डी० के शोधार्थियन के शोध-सहायय आ मार्गदर्शन।
5. हिन्दी, भोजपुरी, मगही आ अंग्रेजी भाषा में प्रतिष्ठित साहित्यकारन द्वारा लिखित पुस्तकन में प्रस्तावना, भूमिका, परिचयात्मक आलेख आ पत्र-पत्रिकन में समीक्षा-लेखन।

श्री नागेन्द्र प्रसाद जी के समस्त रचना के डॉ० संध्या सिन्हा आ दिलीप कुमार द्वारा संकलन आ पाँच खण्ड में चार-चार सौ पृष्ठ में 'नागेन्द्र प्रसाद सिंह रचनावली' नाम से प्रकाशित।